अथाई के स्वर

सम्पादक : जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल

संरक्षक :
निर्मला जैन, इन्दौर

संस्थापक एवं निदेशक :
जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल

अथाई एक्जीक्यूटिव बोर्ड :
प्रभा जैन इन्दौर, दीप्ति खरे मण्डला,
डॉ. रीना 'अनामिका' मुम्बई,
पदमा तिवारी दमोह

अध्यक्ष :
किशनलाल जांगिड़, जोधपुर

कार्याध्यक्ष :
डॉ. आलोकरंजन कुमार, जपला

उपाध्यक्ष :
सीमा गर्ग 'मंजरी', मेरठ

मुख्य समन्वयक :
गोपाल शर्मा 'प्रभाकर', जयपुर

साहित्य समीक्षक :
वेदप्रकाश सिंह 'प्रकाश', ककरी

सचिव :
डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव', दिल्ली

सहसचिव :
स्वाति 'सरु' जैसलमरिया, जोधपुर

अथाई समूह प्रभारी एवं संयोजिका :
शोभा टण्डन, जोधपुर

कोषाध्यक्ष :
डॉ. मीना जैन, उदयपुर

मुद्रक :
बाहुबलि प्रिन्टर्स
दुर्गापुरा, जयपुर

अथाई के स्वर

सम्पादक :

जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल

एम.ए., पीएच.डी., डिप्लोमा पत्रकारिता

प्रकाशक :

समन्वय वाणी फाउंडेशन

129 जादोन नगर–बी, स्टेशन रोड

दुर्गापुरा, जयपुर–302018

E-mail : athaisamvad@gmail.com

Mob. : 9929655786

मेरी कलम से....

नवोदित साहित्यकारों की प्रतिभा निखर कर सभी के समक्ष उजागर हो और वे साहित्य के क्षेत्र में कुछ नया करके दिखा सकें इस पवित्र भावना से समन्वय वाणी फाउंडेशन के माध्यम से 22 अप्रैल 2020 को इस अथाई समन्वय समूह की स्थापना की गई। इसके न्यास का पंजीयन क्रमांक 200 8397 000897 है। इसका पंजीयन 20 अगस्त 2008 को राजस्थान सरकार के अंतर्गत किया गया है। समन्वय वाणी फाउंडेशन न्यास के माध्यम से अब तक लगभग 30 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। अथाई समूह के माध्यम से अथाई काव्य प्रवाह व अथाई काव्यकोश का प्रकाशन पूर्व में हुआ है। अब यह अथाई के स्वर तृतीय पुष्प के रूप में आपके हाथों में है।

अथाई समूह के व्हाट्सएप ग्रुप पर नियमित साहित्यकारों की रचनाएं पोस्ट होती हैं; जिनकी समीक्षा समूह के समीक्षकों द्वारा की जाती है। प्रतिदिन प्रभात किरण शीर्षक से प्रभाती लेखन को प्रोत्साहन दिया जाता है जो लगभग 1 वर्ष से जारी है। साप्ताहिक चित्राधारित प्रतियोगिता व समय-समय पर विभिन्न विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। समन्वय वाणी यूट्यूब चैनल भी है जिस पर नवोदित रचनाकारों की रचनाएं प्रेषित की जाती हैं। हिंदी पद्य की अनेक विधाएं हैं जिन पर काव्य लेखन हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था है। गत वर्ष 25-26 अगस्त को जयपुर में राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

अथाई के स्वर के संपादन व प्रकाशन में टीम के जिन साथियों का सहयोग प्राप्त हुआ है उन सब का हृदय से आभार मानता हूँ। इस कृति में 54 साहित्यकारों की रचनाएं समाहित हैं जो विविध विषयों पर लिखी गई हैं। आप इन रचनाओं का पठन कर दिशावोध ग्रहण करें तभी श्रम सार्थक होगा।

हमारे आग्रह पर श्रीमती निर्मला जैन, इन्दौर अध्यक्षा अ.भा.दिगम्बर जैन महिला परिषद् ने अथाई समन्वय समूह का संरक्षक बनना स्वीकार किया है अतः हम उनका हृदय से आभार मानते हैं। एक्जीक्यूटिव बोर्ड में चार सहयोगियों ने सदस्यता स्वीकार की है ये हैं श्रीमती प्रभा जैन-इन्दौर, श्रीमती दीप्ति खरे-मण्डला, श्रीमती डॉ. रीना अनामिका-मुम्बई तथा श्रीमती पदमा तिवारी-दमोह। संगठन की सदस्यता ग्रहण करने में 9 साथियों ने आजीवन, 16 ने 5 वर्षीय तथा 26 सदस्यों ने अब तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर ली है। आशा है वर्ष के अन्त तक शताधिक सदस्य इस साहित्यिक संगठन के महत्त्वपूर्ण अंग होंगे। हम इन सभी सहयोगियों को भी धन्यवाद देते हैं। आइये हम सब मिलकर इस अथाई समन्वय समूह को नित नई ऊंचाईयां प्रदान कर संगठन का गौरव बढ़ाएं।

संपादक – डॉ. अखिल बंसल

अथाई के स्वर : सुखद समागम

बच्चों के लिए प्रेरक, जिसमें मिठास है ।
सतचित्त वृत्ति प्रेरक, जिसमें सुवास है ।
निर्वेद, ओज, व्यंग अउ, श्रृंगार पुट लिये।
स्वरधारा संकलन, स्वयं में अपने आप है।

कोई वरिष्ठ न कनिष्ठ, सरिष्ठ हैं सभी
रस राग रंग मुखरित विशिष्ट हैं सभी।
नेतृत्व बंसल जी का दैदीप्यमान ये
सुर लय है एक, नेक भाव वृत्ति है सभी।

साहित्य समाज का दर्पण है और सृजक (रचनाकार) कुशल चितेरा, उसे युग दृष्टा भी कहा गया है जो अपनी सघन अनुभूतियों से सर्वहिताय प्रेरक कालजयी सृजन करके, जनमानस को सत्प्रेरित कर, स्वस्थ समाज की स्थापना करने का भगीरथ प्रयास शब्द शक्ति का आश्रय लेकर करता है ।

सृष्टि में मानव होना जहाँ भाग्य है, वहीं कवि होना सौभाग्य कहा गया है। परमेश्वर ने उसको दूसरों से इतर सोचने समझने एवं शब्द शक्ति प्रादुर्भाव की विशिष्ट क्षमता प्रदान की है। इसी शब्द सामर्थ्य के बल पर ही वह अपनी प्रेरक मनोवृत्ति से समुन्नत स्वस्थ्य समाज की परिकल्पना करके, मूर्ति रूप काव्य के रूप में प्रत्यक्ष कर, समयानुसार जनमानस को दिशा बोध देता है ।

ऐसे ही संकल्पित कल्पना के अनन्त आकाश में विचरण करने वाले, कुशल शब्द शिल्पियों के बोधगम्य समन्वित भवोद्गार का समागम, अथाई परिवार के **अथाई के स्वर** के रूप में अवस्थित करके अथाई समूह के संरक्षक यशश्वी पत्रकार, सहृदय कवि, समादृत कुशल शिल्पी डॉ. अखिल बंसल जी ने माँ वाणी के वरेण्य एवं नवागत किन्तु ऊर्जावान रचनाकारों को एक मंच अथाई स्वरधारा पर वैचारिक क्रांति हेतु सुअवसर प्रदान करके गुरुता एवं महानता का स्तुत्य कार्य किया है। साझा संकलन **अथाई के स्वर** में संकलित सभी रचनाकारों ने अलग-अलग विषय वस्तु पर अपनी समृद्ध लेखनी का माध्यम लेकर विविध भाव तरंगों से भाव सुमन वाटिका को अत्यंत मनमोहन व प्रेरक बना दिया है।

सुन्दर मनोवृत्ति पर सृजित काव्य में रचनाकारों ने न सिर्फ भाव पक्ष के माध्यम से कवि धर्म का निर्वाह किया वरन कला पक्ष का भी कलित ,ललित ललाम स्वरूप समदर्शित कर पाठकों को आह्लादित कर दिया है। भाषा भाव का गरिमामय सुन्दर सुखद प्रभाव कथ्य एवं शिल्प उभयपक्ष को सुदृढ बनाये हुए है, जो रचनाकार की भाषा विज्ञता का द्योतक है। प्रस्तुत अथाई के स्वर प्रेरक, सरस एवं विविधता मूलक, श्रेष्ठ सत्साहित्य का अनूठा संगम है। कहीं पक्षियों का कलरव, कहीं संबंधों का निर्वहन, तो कहीं प्रेरक मानवीय गुणों का रचनात्मक प्रेषण ,रचनाकारों का केंद्रीय भाव रहा है । जिसका अवगाहन पाठक को आह्लादित एवं भावविभोर कर देगा ।

स्वप्निल कल्पित आकाश में मनसि विचरते हुए शब्द शिल्पियों ने अपना शत प्रतिशत सामर्थ्य का सदुपयोग करके रचना धर्मिता से संकलन को ऊर्जावान बना दिया है। संकलन में सहभागी समस्त रचनाकारों को उनके सर्वोत्तम प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ कि वे इसी प्रकार अपने साहित्य के माध्यम से मानव समाज को प्रेरित करते रहें ।

गंगा, यमुना, सरस्वती के पावन काव्य रस का संगम बनाने के लिये पुनश्च अथाई समूह के संरक्षक व निदेशक आदरणीय डॉ. अखिल बंसल जी, अध्यक्ष आदरणीय किशनलाल जांगड़ जी, उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा गर्ग 'मंजरी', मुख्य समन्वयक श्री गोपाल शर्मा 'प्रभाकर', सचिव डॉ. इंदु जैन, सहसचिव स्वाति जैसलमेरिया, पटल की कर्मठ संयोजिका आदरणीया बहन शोभा टंडन जी के साथ-साथ इसे वर्तमान स्थिति तक नयनाभिराम सुखद मोहक कलेवर रूप में महती भूमिका निभाने वाले समस्त वरेण्य रचनाकारों को हृदय से बधाई देते हुए भविष्य में इसीप्रकार अन्य नवान्वेषी साहित्य के प्रादुर्भाव व सुखद संकलन की परिकल्पना के साथ मनोभावों को विराम देते हैं। **सर्वे सुखिनः भवन्तु।**

वेद प्रकाश सिंह 'प्रकाश'
कवि/सम्पादक/प्रधानाचार्य
ककरी, बाराबंकी, उ. प्र.
साहित्य समीक्षक

अनुक्रमणिका

क्र.	कवि	पेज
1.	डॉ. अखिल बंसल	5
2.	अनिल कुमार जैन 'अंकुर'	7
3.	अनुराग अचल	9
4.	अभिनन्दन मडवरिया	11
5.	डॉ. आलोक रंजन कुमार	13
6.	आशा निर्मल जैन चौधरी	15
7.	डॉ आशा श्रीवास्तव	17
8.	डॉ. भगवान सहाय मीना	19
9.	बृंदावन राय सरल	21
10.	भूराराम सुथार	23
11.	डॉ.भावना शुक्ल	25
12.	चन्द्रकला दुबे	27
13.	दीप्ति खरे	29
14.	गोपाल प्रभाकर	31
15.	जीनस कँवर	33
16.	जितेंद्र मिश्रा 'यायावर'	35
17.	श्री कुंजीलाल चक्रवर्ती 'निर्झर'	37
18.	किशनलाल जांगिड़	39
19.	डॉ. कीर्ति जैन	41
20.	डॉ. मनोरमा गुप्ता	43
21.	श्रीमती मनीषा राठी	45
22.	नरेश चावला स्नेहदिल	47
23.	नारायण प्रसाद तिवारी	49
24.	श्रीमती निर्मला डोंगरे	51
25.	निर्मला जैन 'निम्मी'	53
26.	श्रीमती नितिन शर्मा 'नीति'	55
27.	निशि शर्मा 'जिज्ञासु'	57
28.	श्रीमती नीलू मालपानी	59
29.	श्रीमती पदमा तिवारी	61
30.	श्रीमती पंकज धींग	63
31.	श्रीमती प्रभा जैन	65
32.	प्रमोद दाहिया	67
33.	प्रीति धीरज जैन 'धीरप्रीत'	69
34.	रश्मि पांडेय 'शुभि'	71
35.	राशि गुप्ता 'नित्य नित्या'	73
36.	राजेन्द्र जैन रतन	75
37.	राजेन्द्र गुलेच्छा राज	77
38.	राजेन्द्र मिश्रा	79
39.	राम प्रकाश अवस्थी	81
40.	ऋतु अग्रवाल	83
41.	डॉ. रीनाअनामिका	85
42.	रूचि चोविश्या जैन	87
43.	स्मिता जैन	89
44.	स्वप्निल जैन	91
45.	स्वाति जैसलमेरिया	93
46.	स्वाति मानधना 'सुहासिनी'	95
47.	सुषमावीरेंद्र खरे	97
48.	संगीता जैन (पिंकी)	99
49.	प्रो. संगीता सिंह	101
50.	संजय जैन	103
51.	शमा जैन सिंघल	105
52.	पं. शंकर प्रसाद तिवारी	107
53.	श्रीमती विभा जैन	109
54.	वंदना नाटेश्वरी 'योगी'	111

डॉ. अखिल बंसल

परिचय

नाम : डॉ. अखिल बंसल **पिता का नाम :** श्री महेन्द्र कुमार **जन्मदिनांक :** 26 अगस्त 1953 **शिक्षा :** एम.ए. (हिन्दी), डिप्लोमा-पत्रकारिता, पी-एच.डी. **प्रकाशित मौलिक कृतियाँ :** ताकि सनद रहे, जैन पत्रकारिता दशा और दिशा, भ. बाहुबली, आओ जानें जैनधर्म, अहिंसा के स्वर, चंदेरी दर्शन, अध्यात्म शैली के प्रखर प्रवाहक, क्रांतिवीर मर्दनसिंह। **प्रकाशित कामिक्स :** गोम्मटेश्वर बाहुबली, कविवर बनारसीदास, कहान कथा : महान कथा, आचार्य विद्यानंद **संपादित कृतियाँ** - 17 **E-mail :** samanvayvani@gmail.com

पुरस्कार : 1. पण्डित कैलाश चंद शास्त्री विद्वत्परिषद् पुरस्कार-3 अक्टूबर 2009 **2.** अहिंसा इंटरनेशनल पारसदास अनिल कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार -30 अक्टूबर 2011 **3.** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ ऋषभांचल गाजियाबाद -माँ कौशल जी द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार 26 मई 2014 **4.** एबीएस फाउंडेशन ऋषभदेव द्वारा वाग्मिता पुरस्कार 19 दिसम्बर 2014 **5.** अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा क्रान्तिवीर मर्दन सिंह कृति हेतु राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार - 25 जून 2018 **6.** उम्मीद हेल्प लाइन फाउंडेशन, जयपुर द्वारा उम्मीद रत्न सम्मान- 23 फरवरी, 2020 **7.** अहिंसा चैनल, दिल्ली द्वारा अहिंसा रत्न अवार्ड 3 अक्टूबर 2021 **8.** कुन्दकुन्द भारती दिल्ली द्वारा 1 लाख 11 हजार की राशि के साथ आचार्य विद्यानन्द पुरस्कार- 20 फरवरी 2022 **9.** सोशल मीडिया फाउन्डेशन द्वारा आदर्श पत्रकार- 26 अगस्त 2022 **10.** साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा के संयोजकत्त्व में पत्रकार प्रवर की उपाधि- 6-7 जनवरी 2023 **11.** सोशली प्वाइंट फाउन्डेशन इन्दौर द्वारा राष्ट्र गौरव पुरस्कार- मार्च 23 **12.** ब्रान्ड आइकन ऑफ द ईयर द्वारा बेस्ट सीनियर हिन्दी जर्नलिस्ट अवार्ड- 30 मई 2023

संपर्क : 129 जादोन नगर-बी. स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 **मो. नं. :** 9929655786

मां की ममता

मां की ममता के छांव तले
मेरा सुखमय बचपन बीता।
उसने जो सीख सिखाई थी
उससे ही दिल सबका जीता।।

मां ने तो कष्टों को झेला
पर मुझे रखा उससे रीता।
मुझको जो पाठ पढ़ाया था
वह थी रहस्यमय सम गीता।।

मैं कभी जरा बीमार दिखा
वह आकुल व्याकुल हो जाती।
सारी रातें जग जग कर वह
प्रभु आराधन में रम जाती ।।

उंगली उसने पकड़ी मेरी
मंदिर जी लेकर नित आती।
जीवन जीने का मकसद क्या
वह मर्म सदा वह बतलाती।।

कोई कितना भी कान भरे
मेरी ग़लती स्वीकार ना थी।
मित्रों से झगड़ा कर बैठूं
तो सदा पक्ष लेने आती।।

जब भी मुझको भूखा देखा
आंचल से दूध पिलाया था
कितना भी हूं धूल धूसरित
छाती से लिपटाया था।।

अवरोधों को कैसे जीतूं
यह तथ्य उसी ने सिखलाया।
कैसे क्या धर्म निभाना है
यह मर्म उसी ने बतलाया।।

अब तो वह सब कुछ छोड़ गई
सिद्धालय तक जो जाना है
अखिलेश्वर का अवलंबन ले
अखिल मोक्ष पद पाना है।।

लोकतंत्र का पर्व

लोकतंत्र के महापर्व पर,
वोट डालने जाना है।
एक बार फिर से हमको ,
अपनी सरकार बनाना है।

पांच वर्ष में ऐसा मौका,
सभी जनों को मिलता है।
जो भी अच्छा काम करे ,
वही विजेता बनता है।

लोकसभा या हो विधान,
उपवन यह बडा निराला है।
भांति भांति के पुष्पों से,
आच्छादित यह मतवाला है।

बैर भाव सब छोड यहां ,
देशोन्नति की ही बात करें।
नहीं कपटता मन में राखें,
भारत का यशगान करें।

समय वोट के लिए निकालें,
जिम्मेदारी न टालें
अखिल विश्व में भारत का,
फिर से परचम हम लहराऐं।

समय

तत्वप्रचार और संस्कारों का
समय आज है आया।
चिंतन–मनन,पठन–पाठन कर
सत्य मार्ग अपनाया ।।१।।
मन का सोचा ही मिलता है
नहीं अचानक होता।
जो नहिं होते कभी प्रभावित
आगम के अद्येता ।। २।।

वस्तु स्वरूप को जो जन जानें
अपने को पहिचानें।
मोक्षमार्ग की राह चलें जो
मुक्त अवस्था पाएं ।। ३।।

अपने आतम में जम जाओ
निज में तुम रम जाओ।
स्व–पर का तुम भेद जान लो
तभी सिद्ध पद पाओ ।। ४।।

अखिल विश्व में अजर–अमर हो
जग में नाम कमाओ।
आत्मध्यान में अब लग जाओ
जग का द्वन्द मिटाओ ।। ५।।

छाया

दर्पण के सम्मुख आकर जब
खुद का रूप निहारा
आंख में काजल बाल में गजरा
बिंदिया माथ सुहाया।
बाट जोहती प्रिय प्राणेश्वरी
यौवन था गदराया
अपने प्रियतम को समीप पा
रोम–रोम इठलाया।
लाज के कारण शब्द न निकले
बात न कुछ कह पाई
पर जब उसको हृदय लगाया
मंद मंद मुस्काई।
अधरों को अधरों ने चूमा
फिर तो रहा न जाए
गोरे गालों पर थपकी पा
मधुरम गीत सुनाए।
प्रिय का प्रिय से मिलन हो गया
समझ न कोई पाया
इठलाती बलखाती रूपसी
उसकी सुंदर काया।
अखिल भ्रमित न होवे कोई
देव लोक की माया
स्वप्न भंग जब जाकर देखा
वह कोरी थी छाया।

भारत माता

जा भारत की धरती सबकी,
ई पै सबखों नाज है।
हिल–मिल कैं सब इतै रेऊत हैं,
कोऊ नहीं नाराज है।।१।।

भारतमाता सबै कौं प्यारी,
ऊके सब गुन गात हैं।
शीश कटा दय जी के खातिर,
मिली बडी सौगात है।।२।।

अंग्रेजन खों मार भगाऔ,
पर न पीठ दिखाई थी।
रानी लक्ष्मीबाई सरीखी,
जीनैं सीख सिखाई थी।।३।।

राणा हों या वीर शिवाजी,
दुश्मन खों ललकारा था।
वीर प्रतापी मर्दनसिंह कौ
गूंज उठौ जयकारा था।।४।।

तांत्या टोपे आल्हा ऊदल
और अहिल्याबाई थीं।
झलकारी या बखत शाह हों,
सबनै रीत बनाई थी।।५।।

रानी पद्मावती इतै की,
जीनै जौहर दिखलाऔ।
चंदेरी की मणिमाला नैं,
इसी रीत खौं अपनाऔ।।६।।

ऐसे दिग्गज शूरवीर हैं,
जई धरती पै पैदा भयै।
शीश नबाएं हम सब उनखों,
अखिल विश्व में जो छा गयै।।७।।

हिन्दी

यह विशाल है देश हमारा,
सारे जग से है न्यारा।
भांति भांति के लोग यहां हैं,
सब में है भाई चारा।।

मीठी लगती अपनी भाषा,
जन–जन में बोली जाती।
सबके दिल पर राज करे जो,
ऊंचा दर्जा वह पाती।।

सच कहता जैसे माथे पर,
शोभित होती है बिंदी।
सभी राष्ट्र जन मिलकर बोलें,
वह भाषा है हिंदी।।

हिन्दी में तो हिन्द बसा है,
मणि माला सी है हिंदी।
स्वर–व्यंजन से ओत–प्रोत है,
सबकी प्यारी है हिंदी।।

अखिल विश्व में बोली जाती,
शान निराली है हिंदी।
हम सब भारत वासी बोलें,
ऐसी भाषा है हिंदी।।

अनिल कुमार जैन

परिचय

नाम : अनिल कुमार जैन 'अंकुर'

शिक्षा : शास्त्री, जैन दर्शनाचार्य, साहित्याचार्य, MA (हिंदी)

कार्यक्षेत्र : माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, प्रताप नगर, जयपुर में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर कार्यरत।

उपलब्धि : वर्ष 2014 में दी एजुकेशन कमेटी ऑफ दि माहेश्वरी समाज द्वारा सर्वश्रेष्ठ अध्यापक के रूप में सम्मानित। समय-समय पर सर्वश्रेष्ठ लेखन हेतु विभिन्न फेसबुक ग्रुप द्वारा सम्मानित। अथाई समूह के अंतर्गत विविध चित्र प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मान। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़ी हुई 10 से अधिक पुस्तकों का कॉलेज बुक सेंटर चौड़ा रास्ता से प्रकाशन। 400 से अधिक कविताओं का लेखन। पिछले 14 सालों से विद्यालय की पत्रिका Elixir का संपादन। कुशल प्रवचनकार। कुशल मंच संचालक। 100 से अधिक बधाई व शुभकामना संदेशों का लेखन।

उत्तम क्षमा! उत्तम क्षमा!!

दुनियाँ के सारे पर्वों में
बड़ा पर्व है 'क्षमा पर्व',
मन को बनाओ सरल
यही बताता है 'क्षमा पर्व'

निकालूँ अब अपने मन से
राग-द्वेष रूप परिणाम,
धारूँ मन में क्षमा भाव
न रहे मन में कषाय परिणाम।

निकाल मन की कलुषता
आज सबको गले लगाऊँ,
क्षमा पर्व है मेल-मिलाप का
मन में अन्यथा भाव न लाऊँ।

उचित नहीं है हे भाई! इक पल भी
कषाय भाव का मन में रहना,
अधिक दिनों तक रही मन में कषाय
फिर अनेक भवों में दुख ही दुख सहना।

क्षमावाणी पर्व बता रहा
क्षमा न माँगो उनसे
जिनसे मेल-
मिलाप है तुम्हारा,
हे भाई ! क्षमा माँगो हृदय
की विशुद्धता से उनसे
है कलुषता वैर-विरोध,
झगड़ा जिनसे तुम्हारा।

हे बंधुगण ! आओ
क्षमा पर्व पर
आज संकल्प करें
हम कुछ मन से,
निकाल मन की दुर्भावना
क्षमा भाव धारें
मेल-मिलापपूर्ण
संबंध बनाएँ सबसे।

'क्षमावाणी' पर्व पर आज
'अंकुर' क्षमा माँगे मन से
हुई हो मुझसे कोई भूल-चूक
क्षमा करो बंधुवर! मुझे मनसे।

हिन्दी का पाठ

पहला पाठ बताता मुझे
ईश्वर में विश्वास रखूँ सदा,
रखूँ विनय सभी के प्रति
बुरा भाव न लाऊँ मन में कदा।

दूजा पूजा–पाठ बताता
नदी, झरनों, तालाबों के बारे में,
न करूँ जल को प्रदूषित कभी
विचारूँ जल संरक्षण के बारे में।

पाठ तीजा बताता हमें
धरती माँ के बारे में,
दे जन्मदात्री माँ को सम्मान
उन्नत सोचें जन्मभूमि के बारे में।

पेड़–पौधे हैं जीवन हमारा
यह बात बताता चौथा पाठ,
पेड़–पौधे हैं गर आसपास हमारे
फिर हैं हम सबके जीवन में ठाठ।

पाँचवाँ पाठ बताता हमें
हमारी सांस्कृतिक धरोहर को,
संरक्षण इस धरोहर का है करना
सदा उन्नत करना इस धरोहर को।

छठा पाठ बताता हमें वीर शिवा,
राणा, रानी लक्ष्मीबाई के बारे में,
राष्ट्रहित में समर्पित किया स्व को
हम क्यों न सोचें स्व राष्ट्र के बारे में ?

सातवाँ पाठ बताता है
बात कुछ हमें अलग ही,
दीन–दुखियों की जो सेवा करता
उसकी बात है कुछ अलग ही।

हिंदी किताब के इन सातों पाठों को
जीवन में अपने हमें है अपनाना,
आ जाए संकट कितना भी,
पर ईमानदारी को सखा बनाना।

वीर सैनिक

हे वीर सैनिक ! तुम हो
आर्यखंड के तिलक,
सारा जग है
तुमसे शोभित।
हो मनु की दिव्य
संतान तुम,
शक्ति से तुम्हारी
जगतीतल सारा संपोषित।।

नहीं तुम कायर,
कलंक, कपूत हो
दौड़ रहा रगों में
लाल रक्त तुम्हारी।
स्वाभिमान की रक्षा हेतु
निज देश के,
बनी है स्थाई
जवानी तुम्हारी।।

गर्जन में तुम्हारी
सिंह–सी दहाड़ है,
भुजाएँ वज्रदंडवत्
अटूट हैं तुम्हारी।
अदम्य साहस ,बल,
पराक्रम से पूर्ण ललकार,
शत्रुसेना शौर्य–प्रदर्शन से
तुम्हारे मारी–मारी।।

हे वीर सैनिक!
तुम्हीं हो राष्ट्र रक्षक,
राष्ट्रोन्नति की बल्गा
है हाथ तुम्हारे।
न हो विलंब दुश्मन
से टकराने में,
गर आ जाए राष्ट्र पर
कोई भी संकट हमारे।।

संस्कारों के पुंज तुम,
कदाचार नहीं मन तुम्हारे।
खप जाओ यदि राष्ट्र सेवा में,
होंगे शत्रु चरणतल तुम्हारे।

अनुराग अचल

परिचय

नाम : अनुराग अचल
पिता का नाम : मनोज कुमार झा
माता का नाम : सिंधु झा
पत्नी का नाम : श्रुति
सुपुत्र का नाम : विनायक और पार्थ

कार्तिक का महीना

भगवान विष्णु का प्रिय महीना कार्तिक
साल का सबसे अलंकृत गहना महीना कार्तिक

दान–पुण्य पूजा–पाठ पालनहार का महीना कार्तिक
भक्ति से खुश होकर देते मेहनताना महीना कार्तिक

वैष्णव के लिए भगवान हैं हर महीना विशेष कार्तिक
भक्तों के लिए अंगूठी का नगीना महीना कार्तिक

प्रभु श्री राम और योगिराज कृष्ण का महीना कार्तिक
विष्णु अवतार,गुरु नानक मंत्र करतार,महीना कार्तिक

'अचल' भी प्रार्थी है रोजाना महीना कार्तिक
भगवान कृपा करें,उनसे मिलने का महीना कार्तिक।

भोले–भंडारी

भोले–भंडारी
ऐ–त्रिपुरारी
रहम पर तेरे
कर रहा सोमवारी

आज शुरुआत है
एक माह तक
चलेगी ये पारी

तू ही बसा मेरे
रग रग में
कर ले मुझसे
मेरे भोले यारी

माता गौरा है
जगत की महतारी
भोले की प्यारी
हिमाचल की दुलारी

समस्त संसार की
करतीं वारी–न्यारी
माता भक्तों पर कृपा करें
कर रखीं हैं सबने
महादेव के लिए
सावन की तैयारी

ऐ–त्रिपुरारी

नाग, सर्प, त्रिशूल, डमरूधारी
पूजा करती आपकी ये संसार सारी

सावन की तीसरी सोमवारी
भक्त कर रहे पूजा की तैयारी

आपके भक्ति से ही पूर्ण हर नर–नारी
तीनों लोकों के स्वामी ऐ–त्रिपुरारी

जिनके सामने ये संसार हारी
सरल सहज नंदी आपकी सवारी

पल मे खुश,आपकी महिमा न्यारी
जल बेलपत्र भंग धतूर आपको प्यारी

पता ही नहीं चला बीती दो सोमवारी
'अचल' भी भक्त आपका,
नहीं जाती भक्ति की खुमारी

कविता मन की शांति है

कविता मन की शांति है
कविता दूर करती हर भ्रांति है
कलम स्याही का अनुपम मिलन
इतिहास गवाह है,
कविता लाती हर क्रांति है
कवि के कलम की दुनिया लोहा
मानती, कवि और उनकी कविता हर
युग को बखूबी जानती है।

अभिनन्दन मडवरिया

परिचय

नाम : अभिनन्दन मडवरिया
पिता : स्व. श्री विरधीचन्द मडवरिया
जन्म : गुना, मध्यप्रदेश
शिक्षा : हायर सैकण्डरी
व्यवसाय : कपड़ा व्यापारी
प्रतिष्ठान : मडवरिया बन्धु, गुना (म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 7049897140

सुखद अनुभूति

सुखद अनुभूति
होत भोर के शोर में
जगत् मन है मोर
पैजनियां है बज रहीं
अपने ही चहुंओर
बजत पैजनियां
रुनझुन रुनझुन
कानन होती सुनगुन,
सुनगुन से है जागत् मनवा
मलत आंख है,
देखत् जलवा
अप्सराएं थिरक रहीं
अपनी ही 'आस' में,
'अभिनंदन' है अप्सराओ
नाच गाओ, धूम मचाओ
मस्ती में रम जाओ।

केवल्य ज्ञान

जीवन 'पथ' है
मन हर–पुष्पित
महक रहा है
सुरभित–सुरभित
चलते–चलते
होता–भान
ध्यान–मगन हो
होए कल्याण
केवल्य ज्ञान
केवल्य ज्ञान
केवल्य ज्ञान।

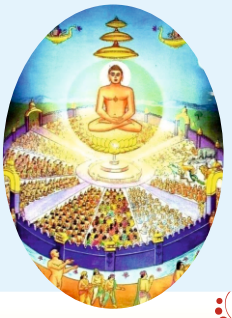

भारतभूमि

धरा हमारी वसुंधरा है।
रज्स्वरा है इसकी कोख ।
इसकी थाती सौंधी माटी
अन्न उपजाती भाँति–भाँति।
हीरा पन्ना, मानक मोती
खनिज संपदा से भरपूर ।
दोहन करते हम थक जाते
पर इसने कभी न किया निराश।
इसके आँचल में पलकर ही
इसके काँधे पर चलकर ही ।
जीना मरना सीखा हमने
बच्चों सी रक्षा करने हेतु ।
कहीं भरा है नीर का सागर
कहीं पर पसरा मान सरोवर।
कहीं उतंग हिमालय है तो
कहीं है फैली, हिम की चादर ।
धरा हमारी वसुंधरा है।
रज्स्वरा है इसकी कोख ।

जीव जगत की समझ

एक मरदुल्ली सी बछिया
थी नाटे के साथ
कुत्ते को आभास हुआ
अनहोना है साथ
भोंक–भोंक है दी आवाज
झटपट आये संगी साथ
घेरा दोनों चारों ओर
भोंक–भोंक है कीना शोर
नाटा निकला एकई ओर
बछिया थांड़ी कांपे जोर
कुत्ते ने है सूंगा नथुना
उन्मादी है बछिया जाना
दई लतेड़ है भागी बछिया
अनाचार से बच गई दुनियाँ
अभिनंदन है जीव समझ का
संदेशा है ब्रह्म जगत को

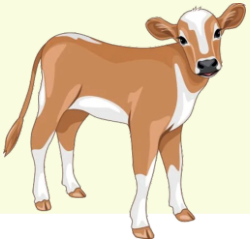

संध्या

जन्म दिवस की 'पूर्व संध्या'
ठहरी अपने पास,
होले–होले कहन लगी
मुन्ना सुन लो बात,
जन्मदिवस तो आतो जातो
साल एक ही बार
मैं आती हर रोज हूं
बेनागा हर वार
दिनभर की है जोड़ तोड़ से
करती हूं हल्कान
क्षणिक समय दे मुझको 'मुन्ना'
खिल जाएगा तन का 'कुन्ना–कुन्ना'

डॉ. आलोक रंजन कुमार

परिचय

नाम : डॉ. आलोक रंजन कुमार

शिक्षा : 1. स्नातक उपाधि – हिन्दी, रसियन, वकालत, विद्याविशारद 2. एम ए. त्रय – हिन्दी, अंग्रेजी तथा स्नातकोत्तर भाषा विज्ञान प्रशिक्षण। 3. पी–एच.डी. हिन्दी (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी)।

उपलब्धि : 1. विभागाध्यक्ष – हिन्दी विभाग, ए. के. सिंह कॉलेज, पोस्ट–जपला, जिला–पलामू, राज्य–झारखंड। 2. प्रदेश संगठन सचिव सह प्रवक्ता , झारखंड राज्य बारी संघ। 3. प्रमुख सलाहकार – राष्ट्रीय योद्धा बारी कल्याण महासमिति, भारत। 4. राष्ट्रीय संगठन महामंत्री सह प्रदेश संगठन सचिव – भारतीय अश्वमेघ पार्टी (रजि.राजनीतिक पार्टी),भारत। 5. प्रदेश कार्यसमिति सदस्य – अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, झारखंड। 6. प्रदेश संयोजक – राष्ट्रवादी लेखक संघ, झारखंड। 7. प्रदेश संयोजक – विश्ववाणी हिन्दी संस्थान अभियान, झारखंड। 8. प्रदेश संयोजक – अथाई आशा इंटरनेशनल चैप्टर रचनाकार साहित्य समूह, झारखंड। 9. राज्य प्रमुख – मानवाधिकार मिशन, झारखंड। 10. संरक्षक – नवयुग चेतना विकास मंच तथा टाइगर्स–दख क्रिकेट क्लब हुसैनाबाद, पलामू। 11. पूर्व सचिव तथा वर्तमान मीडिया प्रभारी– राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, नी. पी. विश्वविद्यालय पलामू। 12. अनेक अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा विश्वविद्यालय स्तरीय पुरस्कार सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

प्रकाशन : 1. पलामू कमिश्नरी की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (पी–एच.डी. उपाधि की अनुसंधान पुस्तक), 2. मेरी भी कविता भाग – 3 (काव्य संकलन), 3. अनुभूतियों का अहसास (काव्य संकलन), 4. पल पल बदलता जीवन (साझा काव्य संग्रह), 5. मां (साझा काव्य संग्रह) 6. कई सेमिनार एवं वेबीनार में सम्मिलित स्मारिकाओं में प्रकाशित अन्यान्य शोध आलेख।

मेरी मां तो अनुपमा है

मां मां मां मां हर तरफ मां ही मां है।
जिधर देखो जिसे देखो स्त्री है तो मां है।

कहीं शंकर की अर्द्धांगिनी उमा है।
कहीं विष्णु की परमप्रिया रमा है।

जिसकी जैसी भी हो मां तो मां है ।
सबकी मां अपने आप में मनोरमा है।

श्री गणेश कार्तिकेय की मां उमा है।
देवसेना सहित 18 पुत्रों की मां रमा है।

सब बच्चे बोलें सबसे प्यारी मेरी मां है।
पर मैं बोलूं – मेरी मां तो अनुपमा है।

पर्यावरण दिवस मनाने चला हूं

पर्यावरण दिवस मनाने चला हूं
खुद ही प्रदूषण फैलाने चला हूं।
शिक्षित हूं तो ज्ञान बांटने चला हूं
कविता की पंक्तियां बांचने चला हूं।1।

औरों को पेड़ लगाने का ज्ञान देकर
फिर खुद ही पेड़ काटने चला हूं।
पर्यावरण दिवस में कई जगह
जा जाकर फोटो खिंचवाने चला हूं।2।

पर्यावरण बचाओ नारा लगाके
जन–जन को मैं जगाने चला हूं।
धूंआ पर्यावरण प्रदूषक है,
खुद वायुयान चलाने चला हूं।3।

दूसरों को सीख देता हूं बचाने को
खुद नाहक जल बहाने चला हूं।
ओजोन सुरक्षा का सबक देकर
खुद परफ्यूम लगाने चला हूं।4।

किससे कहुँ कौन बचायेगा

कहीं बारूद की गर्मी है,
कहीं परमाणु की गर्मी है।
कहीं मौसम की गर्मी है।
कहीं बड़वाग्नि की गर्मी है।

चारो तरफ प्रकृति का
सुलगता आवरण है।
सूखा,बाढ़ विभीषिका का,
भय का वातावरण है।

पापियों के पाप की गर्मी से,
धरती पर पड़ने लगा है सूखा,
कहीं पापियों के पाप का घड़ा,
भरने से होती बाढ़ विभीषिका।

किससे कहूं कौन बचाएगा,
प्रकृति के इस दुरुपयोग से।
कैसे बचेगी यह धरती
प्रकृति विरोधी प्रयोग से।

प्रकृति का सुलगता आवरण

'पर' धन 'आवरण' है पर्यावरण,
पर, विकास हेतु फैलाते प्रदूषण।
वृक्ष काटते नज़र आते जन – गण,
तभी, प्रकृति का सुलगता आवरण।

कैसे कर सकेंगे पृथ्वी का संरक्षण,
संरक्षक जब करने लगे भक्षण।
वैज्ञानिक लोग प्रगति के नाम पर,
प्रकृति विरोधी कर रहे परीक्षण।

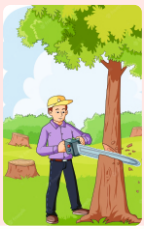

पहले होता था भूकंप या भू–क्षरण,
अब हो रहा भू–ताप का अतिक्रमण।
जब चतुर्दिक हो भ्रष्ट वातावरण,
कैसे कर पाएगी यह प्रकृति वरण।

नदियों को बांध करते अपहरण,
मोबाइल बना हेतुक पक्षी मरण।
हेतुक बने क्लोरोफ्लोरोकार्बन एवं
नाइट्रस ऑक्साइड ओजोन क्षरण।

चौधरी आशा निर्मल जैन

परिचय

नाम : चौधरी आशा निर्मल जैन **जन्म :** सागर मध्यप्रदेश
पति : श्री निर्मल कुमार जैन, सेवानिवृत्त प्राचार्य
शिक्षा : बी.ए **पिता :** स्व. श्री पूरनचंद जैन
माँ : स्व. श्रीमती नत्थीबाई जैन
पता : चौपड़ा गली, झण्डा बाजार, जिला-सिहोरा, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
अभिरुचि : लेखन, कविताएँ, कहानी, निबंध, अनेक सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक सम्मान एवं पुरुस्कार से सम्मानित
प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर रचनायें प्रकाशित एवं आकाशवाणी जबलपुर से प्रसारित सात साँझा संकलन प्रकाशित, पुस्तकें प्रकाशित हेतु विचाराधीन है।

छंद.. उल्लाला छंद

नववर्ष

सुरतरु फूलों की कामना, खुशी भरे जो द्वार में।
नव वर्ष फलित हो भावना, हृदय खिले जब प्यार में ।।
हो चाँद सितारे आँगना, जीवन में उजियार हो।
बाँटे जब सूरज रोशनी, मिटता जग अँधियार हो ।।

वाणी वीणा मुख से झरे, खिलते अंतस रोम है।
यह मंत्र बने उपहार हो, चमके सारा व्योम है ।।
छाये प्राची में लालिमा, स्वर्ण विभूषित भावनी।
अब जाग उठी है वाटिका, पंकज सुंदर पावनी ।।

खग विहग उड़े जब घोंसला, कलरव करते गान है।
करती अभिवादन कोकिला, प्रत्यूषा का मान है ।।
हो चंदन वंदन भाल में, स्वागत आगत भान का।
नव वर्ष सुखद शुभ शोभना, शुचित शुभित सा आन का ।।

दर्पण में तुम

बचपन की मीठी यादों में, बसा नेह तुम्हारा है ।।
अंतर्मन के दर्पण में माँ, बसता बिंब तुम्हारा है ।।

कुक्षी से अनुबंध जुड़ा है, अब अपरिचित बनी रहती ।
बसी हृदय में तन–मन से जो, माँ की माला है जपती ।।
उनसे है साँसों की डोरी, जीवन ऋणी हमारा है ।
अंतर्मन के दर्पण में माँ, बसता बिंब तुम्हारा है ।।

माँ, से मिलने की उत्कण्ठा , उपवन सा महकाती है ।
सरित उफनती है सुधियों की, लहर हृदय सहलाती है ।।
गोते खाता है अब बचपन, मिलता नहीं किनारा है ।
अंतर्मन के दर्पण में माँ, बसता बिंब तुम्हारा है ।।

मन में होकर दूर बसी हो, प्रथम परीक्षा सी जैसे ।
कठिन प्रतीक्षा क्षण–क्षण लगती, नैन उदास रहे कैसे ।।
ये कैसा संवर्धन है अब, तुम बिन कौन सहारा है ।
अंतर्मन के दर्पण में माँ, बसता बिंब तुम्हारा है ।।

बीते दिन जो वापिस आये, कर लूँ सादर अभिनंदन ।
और नहीं कुछ शेष बचा है, यादों का ही अवलंबन ।।
माँ जब होती साथ हमारे, बीता समय सुखद प्यारा ।
अंतर्मन के दर्पण में माँ, बसता बिंब तुम्हारा है।।

ओ मेरे प्यारे बचपन क्या, कभी लौट कर आएगा ।
लोभ मोह से दूषित मानस, माँ सा निर्मल पाएगा ।।
सुंदर हो दर्पण सा मन, हटे सभी बंधन कारा ।
अंतर्मन के दर्पण में मां, बसता बिंब तुम्हारा है ।।

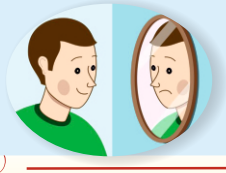

विधा.. गीत

गाँव छोड़ कर अपना आना,
सबसे दुख की बात तभी ।
ऊँची–ऊँची इमारतों में,
सिमटे–सिमटे लोग सभी,

तरस रहे हैं सूरज को सब,
धूप छाँव का खेल यहाँ ।
अनजाने से सब लगते हैं ,
रिश्तों में भी मेल कहाँ ।।
शांति नहीं है पल भर की भी,
टूटा मन का मोह अभी ।
ऊँची–ऊँची इमारतों में,
सिमटे–सिमटे लोग सभी ।।

गाँवों की खुशबू हर कण में,
बसी हृदय की धड़कन में ।
सुख–दुख में सब साथी बनते,
बने सहारा अड़चन में ।।
मधुरिम यादें मुरझाई हैं,
हुआ प्रभावित बचपन भी ।
ऊँची–ऊँची इमारतों में,
सिमटे–सिमटे लोग सभी ।।

सभी शहर के सम्मोहन में,
ठगने की है तैयारी ।
इन्द्रधनुष से सपनों में है,
चकाचौंध दुनियाँ हारी ।।
भरी महक है जो साँसों में,
खिली कली थी मौन कभी ।
ऊँची–ऊँची इमारतों में,
सिमटे–सिमटे लोग सभी ।।

डॉ आशा श्रीवास्तव

परिचय

नाम : डॉ आशा श्रीवास्तव **पति :** श्री विजय श्रीवास्तव **जन्म :** 18 जून। **शिक्षा :** एम. ए. (हिन्दी, इतिहास, ग्रामीण विकास), एम. एड. (शिक्षा शास्त्र) BJMC **कार्यक्षेत्र :** 1995 से हवाबाग महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत **मो. नं. :** 9179136335 **रुचि :** 1995 से लेखन कार्य में रुचि, विधा -कविता, कहानी, गीत, भजन, लोक गीत संस्मरण व्यंग्य प्रस्तुति। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन कहानी, कविता लेख, फेसबुक पर हिन्दी एवं बुंदेली में स्वरचित गीत कविता भजन कहानी की प्रस्तुति, पुस्तकों का प्रकाशन, बुंदेली उजियारो, बुंदेली वैभव साझा काव्य संकलन शिक्षा पर आदिवासी शिक्षा का विकास। **सम्मान :** गुंजन कला सदन द्वारा आल्हा गौरव सम्मान, प्रसंग संस्था द्वारा प्रसंग अलंकरण, वर्तिका संस्था मध्यप्रदेश द्वारा वर्तिका नकाव्यश्री, कवि शिरोमणी लघु कथा श्री सृजन शिल्पी सम्मान, अखिल भारतीय हिंदी सेवा समिति द्वारा अभिव्यक्ति अलंकरण, अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य संस्कृति परिषद जबलपुर इकाई द्वारा बुंदेली सृजन सम्मान। **विशेष :** 1997 से अब तक आकाशवाणी जबलपुर से समय-समय पर साहित्यिक वार्ता एवं चिंतन का प्रसारण, महिला लेखिका सांग जबलपुर इकाई की सदस्य त्रिवेणी परिषद साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था की सह कोषाध्यक्ष, हम फाउंडेशन जबलपुर इकाई की सदस्य, वर्तिका संस्था मध्य प्रदेश की सदस्य, साहित्य संगम जबलपुर इकाई के उपाध्यक्ष, आरिणीसाहित्य वारिधि समूह की सदस्य, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा कि प्रदेश संयुक्त सचिव।

बिदाई

लेके बाबुल का आशीष।
सपनों की गठरी बांध बेटी चली ससुराल।।
दुख और सुख के बीच खड़ी।
यादें की ले बारात बेटी चली ससुराल।।
मन में प्रीतम़ का प्यार भर।
आँखों में मैया का दुलार बेटी चली ससुराल।।
मन में भर उल्लास उमंग।
लाज शर्म से लाल बेटी चली ससुराल।।

गुरु नानक

गुरु नानक ने जनम धरे।
सबरे जग में खुशी छाई।।
दीन दुखी की सेवा लाने।
नई राह दिखाई।
जात पात के बंधन टोरे।
मानव सेवा बताई।।

दीन धरम है एक परमेसर।
सबमें एकई जोत समाई।।
नानक देव जू के जनम दिबस पै ।
लख लख सबखों बधाई।।
आशा कै रई भजन कीर्तन।
करबे में मन लगाओ मोरे भाई।।

संस्कृति और संस्कार

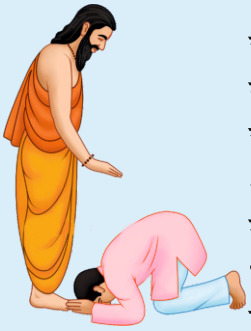

एक सिक्के के दो रूप संस्कृति और संस्कार।
जीवन में आस्था विश्वास भरते हैं संस्कार।
बदलते हैं विचार एकता के सूत्र में बाँधते हैं संस्कार।।
जीवन की बाधाएँ दूर कर प्रगति पथ पर बढ़ाते हैं संस्कार।
आन बान शान स्वाभिमान बढ़ाते हैं संस्कार।।
मर्यादित जीवन की आधारशिला हैं संस्कार।
भावी जीवन की प्रशिक्षण संस्था हैं संस्कार ।।
प्राकृतिक संतुलन को बढ़ाते हैं संस्कार।
प्रेम, सहयोग, स्नेह बढ़ाते हैं संस्कार।।

मानव अधिकार

जब बढ़ा अत्याचार मानवता संकट में।
बचाने को जीवन बने मानव अधिकार।।
विश्व शान्ति का सपना हो साकार बने मानव अधिकार।
युद्ध और हिंसा से मचा हाहाकार बने मानव अधिकार।।
जूझ रही जनता बेकारी भुखमरी से बने मानव अधिकार।
बच्चे और बच्चियों का भविष्य लगा दाँव पर बने मानव अधिकार।।
बुजुर्गों और महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने मानव अधिकार।
सब रहें सुख से हो विश्व शान्ति बने मानव अधिकार।।

डॉ. भगवान सहाय मीना

परिचय

नाम : डॉ. भगवान सहाय मीना

गांव : सवाई माधोसिंह पुरा, पोस्ट- बाड़ा पदमपुरा, तहसील - चाकसू, जिला-जयपुर, राजस्थान।

मोबाइल नं - 9928791368

शीत ऋतु

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
जुताई खेती किसानी की जाती हैं।
पूस की रात में कैसे नील गायें,
हलकु की फसल चट कर जाती हैं।

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
फसलों को ठंडी रातों में सींचते हैं।
आशाओं पर तुहिन पाला पड़ कर,
खेतों में लहलहाते सपने सूखते है।

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
वादी के ठिकानों में अडिग खड़े है।
मां भारती की सरहद पर खदानों में,
वीर हिम शिखरों पर मौत से अडे.है।

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
जो राणा के रणवीर लौहा पीटते हैं।
स्वच्छंद गगन के नीचे श्रम स्वेद से,
भूखे शरद के पेट में घन ठोकते हैं।

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
जिस श्रमिक की हड्डियां अकड़ती है।
ईंट पत्थरों से भरी तगारि लेकर,
आसन्नप्रसवा मजदूरिन सीढ़ी चढ़ती है।

शीत ऋतु के बारे में उनसे पूछिए?
चौराहे पगडंडी पर भीख मांगते है।
लोकतंत्र के साधक नींदें रैन बसेरों में,
जो शासन के गालों पर चांटे मारते हैं।

उषा

शीतल मन्द समीर सुगंधित।
रवि किरणें, उषा प्रफुल्लित।

खग कलरव उन्मुक्त गगन में,
स्नेहिल हर्षित भोर सिंचित।

लाल चुनरिया कंचन केसर,
तरु शिखा पर आभा वर्णित।

आम्र मंजरी लदकद टहनी,
शुभ सवेरा गुलशन चित्रित।

तट बंद छोड़ तारिणी गतिक,
निर्मल नीर चीरते चंपू चर्चित।

प्रकृति अद्भुत भव्य अभिव्यक्ति,
अलौकिक सौंदर्य ईश्वर संकलित।

उल्लसित स्वर्णिम वैभवी भोर,
वसुधा के हाथों में मेंहदी रचित।

याद

यहां कौन समझता है,दिल की मजबूरियों को।
कम कैसे करोगे,किस्मत में लिखी दूरियों को।
कोई दिल से,दिल में उतर गया इश्क़ पाने को।
और कोई खेल समझ बैठा,मेरे जज्बातों को।

तेरी याद रूलाती है, अक्सर मेरी तन्हाइयों को।
दिल सहेजकर रख लिया तेरी मेहरबानियों को।
पंखुड़ियां किताब में छोड़ गई, कुछ कांटों को।
रिश्तों की दहलीज से,मिटाऊं उनकी यादों को।

तेरी याद आती है,गांव के पीपल नदी की रेत को।
दिल भूला नहीं पा रहा, तेरी उन अठखेलियों को।
सावन भी सुखा लगता है, रिश्तों की बेरूख़ी को।
मेरी कलम लिख देती है, बस तेरी नादानियों को।

बेरोजगारी

मेरे मां बाप समझते हैं, दर्द बेरोजगारी का।
पढ लिखकर मैं दामन थाम लिया शहर का।

लेकर कमरा किराए पर, रोजगार की आस में।
चौबीस घंटे चिपका रहता किताबों के पास में।

कितने सपने खुली आंखों से देखा हजार बार।
पेपर चोरी होने से, निराशा हाथ लगी हर बार।

मेरी मां महसूस करती है, मेरी तड़प और बैचेनी।
दुःख के भंवर को भांप लेती है उसकी नजर पैनी।

आंख में आते उसके भी आंसू, मेरे परिणाम पर।
उसका भी बस कहां चलता है, यूं बेरोजगारी पर।

मां बांधकर भेजती है, घर से आटे संग आशा।
बेटा जरुर सफल होगा, होगी दूर निराशा।

कर्ज बढ़ता ही जा रहा है, साल दर साल बापू का।
जी रहे है इस आस में, की रोजगार होगा बेटे का।

गंगा

शिव शंकर के शीश से , मां गंगा का नीर।
धरती पर प्रवाह किया, भागीरथ ने क्षीर।

गंगा मां की गोद में, जीवन दाता धाम।
जीवन सदा सुखी रहें, मिलता सब आराम।

घाट– घाट गंगा बसी, बनकर मानव मात।
भेद भाव सब मिट गए, कहां तीर्थ में जात।

पावन गंगा घाट बने, मंदिर बने हजार।
निर्मल नीर बहे सदा, मां गंगा की धार।

उपवन सुंदर सज गया, गंगा मां का द्वार।
शंख नगाड़े बज उठे, वेला शुभ त्योहार।

बृंदावन राय सरल

परिचय

नाम : बृंदावन राय सरल **जन्म :** 3/6/1951
पिता : श्रीबालचंद राय **माता :** श्री मती फूल रानी राय
विधा : गीत ग़ज़ल दोहा हाइकु लघुकथा समीक्षा कविता आदि। **शिक्षा :** रिटायर्ड सिविल इंजीनियर
प्रकाशन : पांच किताबें प्रकाशित। **प्रकाशनाधीन :** दो किताबें
साझा संग्रह : 95 में रचनाएँ, हिंदी, उर्दू व बुंदेली में लेखन।
प्रकाशित : 225 साझा संग्रह में कविताएँ प्रकाशित, आकाशवाणी दूरदर्शन कलाकार। हिन्दी साहित्य कविताओं की 13 पुस्तकें प्रकाशित।
सम्मान : 60 संस्थाओं द्वारा सम्मानित
विशेष : 500 कवि सम्मेलन में काव्य पाठ और 3000 कवि गोष्ठिओं में काव्य पाठ । कवि सम्मेलन के आयोजक और संचालक।
मोबाइल नं. : 7869218525 **पता :** 94 पोददार कालोनी, सागर मध्य प्रदेश

ग़ज़ल...

वेदों के अनुसार बटोही।
जग में बाँटों प्यार बटोही।।

फूलों जैसा दिल हो अपना,
ये जीवन का सार बटोही।

सच को केवल सच ही लिखना,
इतना कर उपकार बटोही।

जैसा तू औरों से चाहे,
वैसा कर व्यवहार बटोही।

जिसमें सुख हो अम्न चैन हो,
ऐसा हो संसार बटोही।

कैसा आया आज समय ये,
मात पिता अखबार बटोही

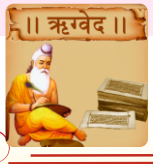

व्योम में उछाल दो

मानव जो शोषित है कष्ट से निकाल दो।
पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

घर घर में पीड़ा है दुखों का जखीरा है।
पीड़ा के मौसम को सुख में तुम ढाल दो।।
पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

महँगाई सुरसा है हर कोई झुलसा है।
महँगाई की रुत से हमको निकाल दो।
पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

सांस सांस भारी है कंठ तक उधारी है।
रोजगार देखें तुम स्थिति संभाल दो।।
पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

आदमी खिलोना है। सोच से भी बोना है।
संकट के इस युग को तोहफे निहाल दो।।

पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

मानव जो पीड़ित है कष्ट से निकाल दो।
पिंजरे के पंछी को व्योम में उछाल दो।।

बस इतनी सी चाह हमारी

बस इतनी है चाह हमारी।
हर इच्छा हो पूर्ण तुम्हारी।।

सारी खुशियां मिलें तुम्हें ही।
फूल चमन के खिलें तुम्हें ही।।

मुठ्ठी में हो आसमान भी।
ध्यान रखें कृपा निधान भी।

सुविधाएं उपलब्ध हो सारी।
बस इतनी है चाह हमारी।।

मां की तुम पर कृपा हो ऐसी।
आंगन में इक तुलसी जैसी।।

दुख से मत हो कोई रिश्ता।
सुख का वर दे कोई फरिश्ता।।

कोई जाय न खाली घर से।
कोई निराश न लौटे दर से।।

बस इतनी है चाह हमारी।
फूलों जैसी उम्दा प्यारी।।

बस इतनी है चाह हमारी।
सबसे प्यारी सबसे न्यारी।।

बस इतनी है चाह हमारी

गज़ल : वृद्धाश्रम

बचपन से जिसको था पाला।
उसने घर से आज निकाला।।

कैसे उगता सुख का सूरज,
बेटे का दिल निकला काला।।

नफरत ही नफरत का मौसम,
आंखों में था बहू की जाला।।

रोटी को भटका था दर-दर,
वृद्धाश्रम में मिला निवाला।।

वृद्धाश्रम था सच्चा रक्षक,
एक सहारा,एक उजाला।।

पल पल युग सा बीत रहा था,
जीवन लगता जैसे हाला।।

वृद्धाश्रम है उसे स्वर्ग सा,
वृद्धाश्रम है उसे शिवाला।।

भुराराम सुथार

परिचय

नाम : भुराराम सुथार **व्यवसाय :** जीव विज्ञान व्याख्याता
शिक्षा : Msc , BEd , SET
मूल निवासी : बालेसर, जोधपुर, राजस्थान
वर्तमान पद स्थापन : जीव विज्ञान व्याख्याता, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय झँवर, तहसील-लूणी, जोधपुर।

- कक्षा 8 से लेखन यात्रा की शुरुआत।
- कॉलेज समय में राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित संभाग स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान।
- जोधपुर में संभावना साहित्यिक संस्था की ओर से आयोजित कविता लेखन में पुरस्कृत।
- विभिन्न विषयों पर कविता तथा साहित्यिक रचनाएं लिखने की दिशा में प्रयासरत एवं निन्तर जिज्ञासु।
- व्यक्तिगत कृतियों का संकलन प्रकाशन हेतु अंतिम चरण में।

मित्रो, मानव मन के संदर्भ में अनेकों बार कलम ने मुखरित होकर अपना प्रयास किया है। इस बार हमने भी इसी ओर हाथ आजमाया है । चंचल, चितवन, चितचोर और विशेष अदृश्य शक्ति अर्थात मानव मन को आदरांजली स्वरूप काव्यांजलि :-

मानव मन एक पथिक से कम नहीं।
कामना का सफर होगा कभी खत्म नहीं।।

मुखौटा

एक निर्जीव मुखौटा छुपा लेता है।
जज्बात का समंदर अपने भीतर।
और नहीं पता चलती किसी मज़बूर के
आँसूओं से भरी हुई, करुणा से भरी,
कभी न खत्म होने वाली एक कहानी।
नहीं जाहिर होने देता ये दिल के हालात,
और निस्तेज आंखों में छुपी एक बेबसी,
होठों पर तैरती हुई एक मासूम हँसी,
और दिमाग़ में पल रहा एक सपना,
कौन है पराया कौन है अपना,
सब कुछ अपने भीतर समा लेता है।
ये मुखौटा सारे हालात छुपा लेता है।

मगर कभी-कभी नजरें बचाकर
दर्द-चुभन -बेबसी के भार से
थोड़ा हल्का हो लेता है।
मुखोटे की आड़ में वह शख्स
जी भर कर रो लेता है।
ताकि आँखों से निकल जाए,
मन में दफ़न दुखों का सैलाब।
ताकि मिल सके उसे कई
सवालों के अनकहे जवाब।
ताकि निभा सके दुनिया में
बेहतरी से अपना क़िरदार।
ताकि बन सके लोगों की भीड़ में
उसका एक अभिनय असरदार।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

त्रेता का यश–गान राम हैं।
रामायण के प्राण राम हैं।
सूर्य–कुल के नक्षत्र राम हैं।
भूत–भविष्य सर्वत्र राम हैं।

सत्य–शील के धारक राम हैं।
जीवन नैया के तारक राम हैं।
गुरु, ग्रंथ के आराधक राम हैं।
अतुलित, दिव्य–साधक राम हैं।

सौम्य, सरल, मृदुभाषी राम हैं।
वल्कलधारक वनवासी राम हैं।
भ्रातृ–प्रेम के परिचायक राम हैं।
जनक सुता के नायक राम हैं।

त्याग, समर्पण, मित्र राम हैं।
मानवता का चित्र राम हैं।
भारत का अभिमान राम हैं।
धर्म का प्रतिमान राम हैं।

नीति के संरक्षक राम हैं।
अनीति के विनाशक राम हैं।
हिंदू का अस्तित्व राम हैं।
सृष्टि का हर तत्व राम हैं।

शरणागत प्रतिपालक राम हैं।
भक्तों के उद्धारक राम हैं।
दुष्टों के संहारक राम हैं।
विपत्ति में सहायक राम हैं।

सर्वाधिक से अधिक राम हैं।
हिमालय से अडिग राम हैं।
सृष्टि का कण–कण राम हैं।
दृष्टि में हर क्षण राम हैं।

कलयुग में प्रचलित राम हैं।
असीम और अनंत राम हैं।
पुष्पों से कोमल राम हैं।
वज्र से भी प्रबल राम हैं।

शक्ति के प्रादर्श राम हैं।
राम के आदर्श राम हैं।
भीतर का प्रकाश राम हैं।
बाहर भी प्रत्यक्ष राम हैं।

रोम–रोम में व्याप्त राम हैं।
सरल हृदय को प्राप्त राम हैं।
जीव्हा रटती सुबह शाम हैं,
नाम अनंत सुख दायक राम हैं।
नाम अनंत सुख दायक राम हैं।

डॉ.भावना शुक्ल

परिचय

नाम : डॉ. भावना शुक्ल

जन्म : 3 दिसम्बर जबलपुर (मध्यप्रदेश)

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल.,पी-एच.डी, बी.एड

सम्प्रति : वर्तमान में सहायक प्राध्यापक वोकेशनल कॉलेज दिल्ली विश्व विद्यालय, शोध निर्देशिका, साहित्यिक शोध संस्थान मुंबई

प्रकाशन : सहसंपादक - **प्राची पत्रिका**, संपादक - **शब्द गरिमा**, पेड़ बनकर सोचो (काव्य संग्रह), हिन्दी गीति काव्य धारा को महाकौशल का प्रदेय, वन्दे शक्ति स्वरूपा - (सम्पादित पुस्तक), जय जननी (काव्य संग्रह), साहित्य, समाज और स्त्री लेखन- (आलेखों का संग्रह), सेठ गोविन्द दास के एतिहासिक नाटकों का वस्तुगत अध्ययन, हिंदी के धरोहर कवि (सम्पादित), साहित्य साधक और साहित्य दृष्टि, सोच के दायरे, विश्वास की गंध, गीत सप्तक (संपादित), नियति..कहानी संग्रह, शब्द पुरुषों से साक्षात्, लघुकथा संग्रह, उपन्यास प्रकाशनाधीन। **उपलब्धि :** अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सम्मान, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भागीदारी **सम्पर्क :** J1504 प्रतीक लॉरेल, नोएडा सेक्टर 120, नोएडा (यू. पी) पिन : 201307 **ईमेल :** bhavanasharma30gmail.com **मोबाइल :** 09278720311

दोहे

मोहन राधा से कहे,क्यों बैठी हो मौन।
सोच में किसके डूबती, बतला दो है कौन।।

प्यारे तेरे केश हैं, प्यारे तेरे बोल।
मन मोहन की राधिका,तू तो है अनमोल।।

मोहन तुझको देखकर, कटते है दिन रात।
तुझ बिन ब्रज सूना लगे, कौन करे अब बात।।

मोर मुकुट धारण करें, न्यारी छबि के लाल।
तुझे निहारु दरपण से,राधा के गोपाल।।

सुंदर छबि है आपकी, मन - मोहन का राग।
ओ प्यारे ओ साँवरे,राधा का अनुराग।।

दोहे

तिनका लगता आँख में,होती है जब पीर।
आँखों के इस दर्द से , बहता है जब नीर।।

आँखों के इस दर्द का, न है कोई इलाज।
नीर-नीर बहता रहे,दर्द है लाइलाज ।

आँखें तेरी देखकर ,है सुख का आभास।
बहे कभी भी नीर तो ,रहूँ सदा मैं पास ।।

आँखों-आँखों ने कहा,तू है मेरा कौन।
अनुरागी संकेत से,आँखें होती मौन।।

आँखों ने अब पढ़ लिया,तू है मेरा मीत।
कैसे तुझसे कब मिलूँ, झरता है संगीत।।

तुम हो तो

तुम हो मेरा जहान
तुम हो मेरी जान
तुम से ही मेरी पहचान
तुम हो तो
तुम हो मेरे प्रणेता
तुम हो चहेता
तुम हो मेरी कविता
तुम हो तो ...

तुम हो मेरा दर्शन
तुम हो मेरा मार्गदर्शन
तुम हो मेरा दिग्दर्शन
तुम हो तो
तुम हो मेरे प्रतिमान
तुम हो मेरा अभिमान
तुम हो मेरा सम्मान
तुम हो तो...

तुम हो मेरा आकर्षण
तुम हो मेरा समर्पण
तुमको सब अर्पण
तुम हो तो ...
तुम हो जीवन का सार
तुम हो मेरा संसार
तुम हो मेरा अधिकार
तुम हो तो ...तुम हो तो

अमृत की आस

ये बात
कितनी विचित्र हैं
की हमारे पास
हमारे मन को छोड़कर
हर एक का मानचित्र हैं ।
मन
हमारा हैं
किन्तु हमारा नही,
कोई चारा नही,
कभी आकुल–व्याकुल
होता हैं
धैर्य खोता हैं
ऊबता हैं कभी संशय के सागर
में डूबता हैं
कभी लगता है
मन, मन नही
महासागर हो
जिसमें
अनवरत चलता है मंथन
और
निकलता रहता हैं
हलाहल
शायद कभी अमृत भी निकले।

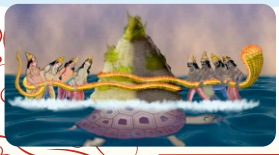

दोहे

कलकल बहती जा रही,पीर सहे चुपचाप।
नदी सुनाती है हमें,गाथा अपनी आप।।

पथरीले राह चलती, है हमको अहसास।
सभ्यता की हूं जननी,पढ़ लो तुम इतिहास।।

पर्वतों से निकल रही,गंग जमुन की धार।
निर्मल नदिया बह रही,मिलती सागर पार।।

घाट –घाट ढूंढ रही,कहां छुपे घन श्याम।
यमुना मिलने जा रही,वो मोहन के धाम।।

दोहे

धुन मुरली की बज रही, दिल में बजते साज।
मैं मीरा घनश्याम की,झूम रही है आज।।

नाच रही हूं मगन मैं, उर में है बस श्याम।
बजती है बस श्याम धुन,छाए है घन श्याम।।

मैं मोहन की माधुरी,मुरली की मैं जान।
रोम रोम में बस रहे,मनमोहन में प्रान।।

जादू है घन श्याम का, चहुं ओर है उमंग।
मीरा रहती श्याममय, मन में उठी तरंग।।

कैसे तुझसे क्या कहूँ,हूँ तुझमें मैं लीन।
मैं मीरा राधा नहीं,मैं हूँ श्याम विलीन

चन्द्रकला दुबे

परिचय

नाम : चन्द्रकला दुबे
पति : डॉ. ओ. पी. दुबे
पता : साकेत नगर सिद्ध बाबा रोड, डिंडौरी
शिक्षा : बी. ए. **व्यवसाय :** गृहणी
अभिरुचि : कविता, संस्मरण, भजन, देवीगीत, सोहर, दादरे आदि सभी विषयों पर लेखन कार्य करना। भजन देवीगीत बगैरह गाना।

नवधा भक्ति

रामचन्द्र जी वन में गये हैं,
सिय हरन से दुखित भए हैं।
वन वन भटक रहे हैं राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

कुटिया पहुंच गए शबरी की,
आस दरश की थी बरसों की।
कुटिया पहुंचे लक्ष्मण राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

शबरी को है चिंता भारी,
कैसे सेवा करूँ तुम्हारी।
बेर खिलाती खुश हैं राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

भामा सुन लो बात हमारी,
खोजत फिरूँ मैं सिय सुकुमारी।
सहज करो तुम मेरा काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

बोली प्रभु मैं अधम हूँ नारी,
महिमा जानूँ ना कछु तुम्हारी।
गुरु जी बोले थेआएं राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

नवधा भक्ति बताऊँ तुमको,
सुन शबरी मन मति धर उसको।
आएगी जन जन के काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

प्रथम करो सन्तों की संगति,
दूजी है मेरी कथा में भक्ति।
गुरु सेवा कर छोड़ के काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

छोड़ कपट भज ले रघुराई,
कर विश्वास छोड़ चतुराई।
होंगे सारे पूर्ण काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

कथा पुराण सुनों तो जाकर,
मन क्रम बचन से दृढ़ अपनाकर।
सेवा धर्म है तेरा काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

सब में कर तू मेरे दर्शन,
सन्तों का करना है वन्दन।
संतोष से सुधरेंगे तेरे काम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

छल और कपट का त्याग है करना,
मन बच क्रम से प्रभु को भजना।
रख भरोस तुम भज लो नाम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

नवधा भगति कहा मैं तुमसे,
एक भी प्राणी करे जो मन से।
भवसागर पार उतारें राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल

इकतीस अक्टूबर सन
अठारह सौ पचहत्तर में,
जन्म लिये थे पटेल जी।
नडियाद के किसान पिता के
लाल बने थे पटेल जी।।
मालदार नहीं पिता थे इनके,
चलता था गुजारा ही।
सत्य की राह पे चलने वाले,
नहीं पढ़ाई ज्यादा की।।
सपना था बनना अधिवक्ता,
लंदन पढ़ने चले गये।
पढ़कर भारत वापिस आये,
अच्छे अधिवक्ता बन गये।।
भारतीय राजनीतिज्ञ बड़े थे,
नेता भारतीय कांग्रेस के थे।
भारतीय गणतंत्र के संस्थापक तुम,
अखण्ड भारत के प्रवर्तक थे।।
लौह पुरुष सरदार पटैल जी,
कूदे स्वतंत्रता संग्राम में।
आगे होकर लड़े लड़ाई,
भारत की आजादी में।।
भारत के पहले उप–प्रधान,
मंत्री का पद सम्हाले आप।
फिर रहे गृहमंत्री के पद पर,
भारत रत्न बने थे आप।।
खण्ड खण्ड भारत था पहले,
उसे हटाकर एक किया।
सपना था अखण्ड भारत का,
उसको आपने पूर्ण किया।।
सरदार कहा जाता था आपको,
जिसका मतलब प्रमुख हुआ।
सरदार सरोवर बांध किनारे,
पटैल जी की प्रतिमा का निर्माण हुआ।।

देश की सबसे ऊंची लौह प्रतिमा,
बनाई गई है बल्लभ जी की।
एक सौ बयासी मीटर ऊंची,
खड़ी है प्रतिमा बल्लभ जी की।।

पूरा देश मनाता आज है,
एकता दिवस के नाम से।
अमर रहेंगे बल्लभ भाई,
सदा सदा धरा धाम में।।

देवालय

हे देव तुम्हारे दर्शन से ,
मन पुलकित हो जाता मेरा।
जाती हूँ देवालय भगवन,
लगा जहाँ प्रभु आसन तेरा।।

देव विराजें देवालय में,
द्वार में हैं हनुमान जी।
मैया जी हैं साथ विराजीं,
नमन तुम्हें भगवान जी।।

जब भी अपना घर बनवाओ,
एक कमरा होवे देवों का।
एक कोना,एक खण्ड ना देना,
हो पूरा कमरा ही देवों का।।

उस कमरे में जाने से ही,
नई ऊर्जा आती है तन में।
झुक जाता है सदा शीश वहाँ,
प्रभु छबि आ जाती है मन में।।

तुमने ही दिया प्रभु जी मुझको,
तन,धन,माया,घर और द्वार।
करूँ कभी अरमान ना इसका,
मस्तक झुका रहे तेरे द्वार।।

चारों दिशा में धाम चार हैं,
बद्री,जगन्नाथ,हरिद्वार।
रामेश्वर है सागर तीरे ,
दर्शन करते हैं नर नार।।

अवधपुरी में राम विराजे,
मथुरा में घनश्याम जी।
काशी में विश्वनाथ विराजे,
देवालय दीनानाथ जी।।

दानवीर कर्ण

समरांगण में कर्ण खड़े,
रथचक्र लिए हैं हाथ में।
भाई से हो रहा युद्ध है,
हो गए दुर्योधन साथ में।।

अर्जुन उनका भाई सहोदर,
युद्ध भूमि में सामना।
आज कसम खाई है कर्ण ने
मित्र का कर्ज उतारना।।

कुंती के थे जेष्ठय पुत्र पर,
कौरव दल का साथ दिया।
राजा घोषित किया दुर्योधन,
अंग राज का राज्य दिया।

अपने सखा के संकट को,
इन्होंने अपना समझ लिया।
भाई के प्राण हरण करने की,
आज प्रतिज्ञा करण लिया।।

घमासान हो रही लड़ाई,
बार बार धंसता पहिया।
चक्र निकाल युद्ध में लगता,
पाँव ना पीछे तनिक किया।।

जग जाहिर है नाम तुम्हारा,
दानवीर नहीं कोई तुमसा।
दुर्योधन के साथ मिले तो,
अपयश अपने नाम किया।

चक्र उठाया हुए निहत्थे,
अर्जुन ने तब वर किया।
वीरगति को पाकर कर्ण ने,
मित्र धरम को बचा लिया।।

दीप्ति खरे

परिचय

नाम : श्रीमती दीप्ति खरे **जन्म :** 16/08/1969
निवास : मंडला(मध्य प्रदेश)
शैक्षणिक योग्यता : एम. एस. सी., एम.ए.
कार्यक्षेत्र : वर्तमान में शासकीय हाई स्कूल में शिक्षिका
रुचि : लेखन, गायन
उपलब्धि : आकाशवाणी केन्द्र एवं विभिन्न समाचार पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन, विभिन्न साहित्यिक मंचो पर रचनाओं का प्रकाशन, आभासीय मंच द्वारा कई बार श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान। **पता :** दीप्ति खरे W/O अनिल कुमार श्रीवास्तव, ज्वालाजी वार्ड, साईं नाथ फ्यूल्स के सामने, महाराजपुर, मंडला (मध्य प्रदेश)

दोस्ती का रिश्ता

सबसे निश्छल सबसे न्यारा,
दोस्ती का रिश्ता प्यारा सा।
रिमझिम फुहार सा,
बागों में बयार सा।
तपती धूप में छांव सा,
ठंड में गुनगुनी धूप सा।
जीवन के मधुर गीत सा,
साज में संगीत सा।
सुबह की नई आस सा,
नींद में मीठे खवाब सा।
दोस्ती का रिश्ता.....

कब तक

कब तक मैं सब मौन सहूं,
भ्रूण हत्या का प्रहार या
लिंग भेद का दोहरा ब्योहार।

कब तक मै सब मौन सहूं,
पुरुषों की दरिंदगी या,
दहेज लोलुपों की यंत्रणा।

कब तक मैं सब मौन सहूं,
जब तब सीता की अग्नि परीक्षा या
द्रोपती का चीर हरण।

कब तक मैं सब मौन सहूं,
दोहरी जिंदगी का भार या
अपनों से मिला तिरस्कार।

मैं कब तक.....

आधुनिक नारी

मैं आधुनिक नारी हूँ,
पीड़ित, अबला नादान नहीं
न बेबस न बेचारी हूँ
मैं आधुनिक नारी हूँ।।

खेल अंतरिक्ष या विज्ञान,
कहीं किसी से कम नहीं
सेना हो या कारोबार
मैं पुरुषों पर भारी हूँ।।
मैं आधुनिक.....

फैशन को अपनाया मैंने,
पर दिल में बसता हिंदुस्तान
पहनावे से न आंको मुझको
मैं भारत माता की प्यारी हूँ।।
मैं आधुनिक.....

बुरी दृष्टि जो डाले मुझ पर,
उसका कर दूं हाल बेहाल
हाथ अगर हथियार उठा लूं
तो मैं दुर्गा काली हूँ।।

मैं आधुनिक .....

चाहत

जिंदगी की राहों में,
चाहतों के मेले हैं।
फिर भी क्या बात है,
क्यों हम अकेले हैं।।
ज़िन्दगी की .....

चाहतों की भीनी खुशबू,
मौसम भी था खुशनुमा।
मेरे कदम जा पहुंचे,
चाहतों के द्वार पे।।

खुशियों की चाहत थी,
सुकून की तलाश थी।
दोनों मेरे सामने बस,
दो कदम की दूरी थी।।

पाना चाहा जो मैने,
चाहतों को अपनी।
वो तो मुझको न मिली,
मिली तो सिर्फ बेरुखी।।

जाने क्या खता हुई,
खुशियां मुझसे दूर हुईं।
मुस्कुराने की वजह न रही
चाहते मेरी दफन हुई।

दुनिया के रेले में हम,
आज भी अकेले हैं।
जिंदगी की राहों में
चाहतों के मेले है।।

गोपाल प्रभाकर

परिचय

नाम : गोपाल प्रभाकर

पता : डी-114 (बी) बापू नगर, जयपुर

शिक्षा : एम. ए. हिंदी साहित्य, पी.जी. डिप्लोमा, पत्रकारिता

प्रशिक्षण : भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली और हरिशचन्द्र माथुर प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर से प्रशिक्षण प्राप्त

लेखन : विगत चार दशक से कविता, कथा, लेखादि। **सम्पादन :** राज्य सरकार की पंचायतराज विभाग की मासिक पत्रिका राजस्थान विकास का 5 वर्ष से अधिक सम्पादन। **व्यवसाय :** सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के अतिरिक्त निदेशक पद से सेवानिवृत्त। समय समय पर आकाशवाणी, दूरदर्शन, यूट्यूब चैनलों द्वारा कविताएँ, साक्षात्कार प्रसारित। पत्र-पत्रिकाओं में जब तब रचनाएँ प्रकाशित। **सम्प्रति :** स्वतन्त्र पत्रकार और स्वतन्त्र लेखक तथा अथाई समन्वय समूह में मुख्य समन्वयक।

कलम का करिश्मा

बात मेरी मान लो
कलम की शक्ति पहचान लो
कलम जो ठान ले तो
विचारों में क्रांति आ जाय
कलम जो चाहे
धरा के कोने कोने में
ध्वजा विश्वशांति की फहरा जाय
अतुल्य शक्ति से सज्जित हैं
देश के कलमवीर।
पर, गुज़ारिश है उनसे
कुछ भी लिखने से पहले
होश ओ हवास में स्थिति देखो
सन्दर्भ को जानो फिर उसके बाद
विवेक मसि में निमज्जित कर
अपनी कलम निकालो
फिर दिखलाओ अपनी
कलम का करिश्मा।

योग बन जाय सर्वसहयोग

कितना ही अच्छा हो
हर मनुज का
हर मनुज से
सहयोग हो जाय
प्रतिदिन
हर इंसान निभाए
सहभागिता की त्रिकाल संध्या
और सध जाय कर्म में कुशलता
ऐसा सुखद संयोग हो जाय,
यहां वहां हर जगह
योग ही योग हो जाय
हर पल, हर क्षण
आनन्दित
जनमन हो जाय
मन से मन जुड़ जाय
दुःख, दर्द, संत्रास
धुआं बन दूर गगन में उड़ जाय।

हिंद की जयकार हो

विस्मृत कर राज पथ
याद रख कर्तव्य पथ
राजरंग अतीत का हिस्सा हुआ
कब तलक उसको जिएगा
वर्तमान से,विज्ञान से
चल प्यार करें
और आरम्भ कर
एक नया संवाद!

बढ़ चल तिरंगे की शान में
स्वदेश के मान सम्मान में
लोक जीवन के उत्थान में
चल,चढ़ता चल उत्तुंग शिखर।
हिंद की जय जयकार हो
हिंद का सत्कार हो,
दूर दिगन्त गांव तक
विकास हो, विस्तार हो।

उठ चल
तज प्रमाद
लक्ष्य साध
कर्तव्य पथ याद रख
धूप बारिश शीत में
चल निरन्तर अहर्निश
चरैवेती चरैवेती चरैवेती।

आईना

आईना
सिर्फ़ आईना है
आईने के सिवा कुछ भी नहीं
कोई भी शक्ल
कोई भी हलचल
उसमें प्रतिबिम्बित
हो जाती है.
और वो साक्षी बन निहारता है
सबको
बिना लगाव बिना दुराव
सामने जो आए चेहरे
उन्हें दर्शाता है हूबहू
लेकिन वो रहता है
निर्द्वंद्व...निस्पृह
उसकी इस आईनागिरी पर
मुग्ध हूँ मैं
सोचता हूँ
आईने के मानिन्द
क्यों न हो जाय मेरा स्वभाव
और
दृश्यों से रिश्ता
लिए मन में समभाव

परिवार की धुरी

परिवार की
खुशहाली के लिए
जिम्मेदारी की रस्सी पर
कभी चलती है
कभी कभी
नटनी की तरह
गिरते गिरते सम्भलती है
स्थिति सम हो
या विषम
वह घर में
संतुलन बनाए रखती है
हरदम.
मन को कभी टूटने नहीं देती
कभी हार नहीं मानती
कितनी महान है वो
मन में लिए श्रद्धा सबुरी
वह है परिवार की धुरी
गृहिणी
जिसका
हर परिजन है
हमेशा के लिए
ऋणी

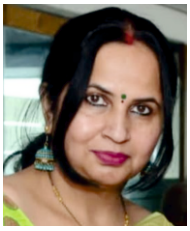

जीनस कँवर

परिचय

नाम : जीनस कँवर **जन्म :** 24 मार्च

शिक्षा : स्नातकोत्तर - हिन्दी, राजनीतिक विज्ञान, B.Ed., NET, संगीत-विशारद.. **संप्रति :** स्वतन्त्र लेखन, सात काव्य संग्रह, साझा कहानी संग्रह तथा साझा संस्मरण संग्रह, आये दिन अखबार में रचना प्रकाशित होती रहती है।

पता : जीनस कँवर/निर्मल कुमार, 943, रामनगर कॉलोनी, गैलक्सी अस्पताल के सामने, शास्त्री नगर जयपुर (राज.) पिनकोड - 302016

मोबाइल नम्बर : 9462657601

निष्कर्ष

सुनो...

तुम बहुत संजीदा सीधे सरल हो
मुझे तो तुम हिंदी से लगते हो..
जवाब में तुमने भी जल्दी से फिक़रा कसा
हसीन नाज़ुक मिज़ाज फ़ाहा तुम उर्दू सी लगती हो

तो हंसते हुए कहा मैंने भी फटाक से
तुम में गद्य पन सा विस्तृत विस्तार है ..
सुनती जाओ तो तुम भी मेरी बात
तुम में तरल सरल सा बहता पद्य पन है ..

बात बात में रूठना जल्दी मान भी जाना
सुनो तुम क्यों अजमेर की सी लगती हो
साफ़ मन पर अकड़ वाजिब राजसी अन्दाज़
क्यों जी आप जयपुर के लगते हो

अब सारी बातों को विराम देते हुए कहा
तुम मेरे जीवन की प्रस्तावना हो
और तुम मेरी ज़िन्दगी का समूल निष्कर्ष हो
कहा मैंने भी प्रेम से आंखें नम करते हुए तुम्हें यूहीं ...

स्त्रियों मैं तुमसे क्षमा माँगती हूँ

मैं अभी मरना नहीं चाहती हूँ और फिर
मैंने अभी जीवन में किया ही क्या है
जब से तुम्हारी जिन्दगी में आई हूँ
तुम लताड़ते रहे मुझसे कहते रहे
कि तुम कम अक्ल हो
मेरे सामने तुम्हारा वजूद ही क्या है
अपशब्द घाव करते रहे
किस्मत का रोना रोती रही
दर्द हरे ही रहे
मान को गिरवी रखने पर भी
मरहम का उपचार ना मिला

तुमने मेरे प्रेम को कमजोरी समझा
मैं अपनी कमजोरी को प्रेम समझती रही
जानती हूँ मेरे सहन करते जाने को
अपने अधिकारों के प्रति लड़ नहीं पाने को
मेरी आने वाली संतति कभी माफ नहीं करेगी
मेरा चुपचाप सहते जाना
मेरा मौन तटस्थ रहना
गुनाह में गिनत होगा
अपने इस अपराध की
हे स्त्रियों मैं तुमसे क्षमा माँगती हूँ

महानगर

खिड़की के बाहर देखो भागता शहर है
ताश की सी जमी गगनचुम्बी इमारतें हैं
रेंगती सी कारें है और दौडते से लोग हैं
लोगों की चहलकदमी से भरी सड़कें हैं
फैक्ट्री धुँए से धूमिल बोलते से भोपूं हैं
चौराहे पर मौन खड़े कतारबद्ध घने पेड़ हैं
दुकानों पर सजते हुए कागज़ी से फूल हैं
किसी को किसी के लिये समय ही कहाँ है
जबकि मेरे मन की बन्द खिड़की भीतर
बसा हुआ सलोना स्वप्न सरीखा गाँव है
जहाँ के पेडों पर चहकती रहती चिड़ियाँ हैं
पुष्प का रसपान करती सी तितलियाँ हैं
मेरे बायें कलकल सी ध्वनित करती नदी है
दूर हरयाये मैदान में चरती रहती गायें हैं
रात्रि आकाश गंगा में भ्रमण पर निकले तारे हैं
दिन में मेरे कद को मापता सा सूरज है
यह दृश्य मानचित्र में रेखांकित महानगर का है
ऐसी आधुनिकता में कहाँ रमता है भला मेरा मन है

हाँ, स्त्री हूँ मैं

आज पाँच लड़को में से एक मैं हूँ
और अब तक सिर्फ आँकड़ो में दर्ज हूँ
देवी का स्थान देकर और
ना भरमाओ मुझको
हाँ स्त्री हूँ मैं ,हाँ स्त्री हूँ मैं...

अपनी आत्म चेतना को जगाती
चौबीस कलाओ में निपुण
समय के कपाल पर लिखी स्वर्णिम
सुदीर्घ रेखा हूँ मैं
हाँ स्त्री हूँ मैं ,हाँ स्त्री हूँ मैं...

मानो तो तुम जीवन संगीत प्रेम
रस राग आलाप मुझ ही से है
कुदरत की खूबसूरत कारीगरी और
मन सरिता के आस्था प्रवाह में तैरती
पतवार हूँ मैं
हाँ स्त्री हूँ मैं ,हाँ स्त्री हूँ मैं ...

घर आँगन बीहड कार्यस्थल में
बिन योजन खिला वन फूल हूँ मैं
हर मन मान सम्मान को खोजती
प्रेम पर लिखा सर्वोत्तम निबन्ध हूँ मैं
हाँ स्त्री हूं मैं ,हाँ स्त्री हूँ मैं...

तेरी ही याद आती है

जब दूर कहीं चोट मुझे लगे पर दर्द तुझे हो
कोहनी की चोट सी झनझनाती रहूं और
तुम्हारी छुअन से दर्द को अलविदा कहना हो
सुनो माँ तब मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है

शब्द अभिव्यजंन हो या स्वाद व्यजंन हो
पर सभी में अर्थ प्रेम का भाव अतिरंजन हो
जीवन में सार्थकता का करना पर्दापण हो
सुनो माँ तब मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है

जीवन की भागमभाग में अब भी आराम से
बेआवाज निपटाती हूँ रोजमर्रा के काम कई
अगर नीरस कामों में सुनना अनहद नाद हो
सुनो माँ तब मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है

राह चलती को पीछे से पुकारता कोई हो
नयन नक्श तहजीब तुम सी कहता कोई हो
गर्वित आनन्दित हो भगवान को याद करना हो
सुनो माँ तब मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है

जब कभी शहद में बसी मिठास जांचनी हो
जब कभी समुद्र तल की गहराई मापनी हो
जब कभी शब्दों में छिपी सार्थकता बाँचनी हो
सुनों माँ तब मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है

जितेंद्र मिश्रा 'यायावर'

परिचय

नाम : जितेंद्र मिश्रा 'यायावर'
पिता : श्री परमानंद मिश्रा **मों. :** 9415954156
संप्रति : कवि, लेखक एवं पत्रकार (हिंदुस्तान)
स्थान : ग्राम पोस्ट सेमरौता जिला अमेठी
रूचि : सतत् काव्य लेखन, आलेख, कहानी आदि

एके सैतालिस सें अब, सीमाओं पर करो हवन

ढोकलाम में आंख दिखाता, चीन हमें ललकार रहा।
हम राणा के वंसज, सोये सिंह को ढेला मार रहा।
एक बार जब हमने, केशरिया बाने को पहन लिया।
बहु तेरे आक्रांता आये, मार पीट कर भगा दिया।
शांति विश्व में बने चाहते, शांति मयी हो धरा गगन।।
एके सैतालिस से अब, सीमाओं पर करो हवन।।

जब देखो नापाक पड़ोसी, नाहक हमको डरा रहे।
आंख नोंचने वालों को ही, नाहक आंखें दिखा रहे।
भारत माँ के बेटों ने, हरदम ही सब कुछ वारा है।
दुश्मन देश समझ ले, हमने घर में घुस कर मारा है।
मेरा देश ही नहीं, विश्व का हरा भरा हो हर उपवन।।
एके सैतालिस से अब, सीमाओं पर करो हवन।।

आज समझ ले चीनी, अब यह बासठ वाला देश नही।
थप्पड़ खाकर गाल बढ़ाने वाला, अब यह देश नही।
आने वाली हम सारी, बधाओं का हम मुंह मोड़ेंगे।
सीमा पर यदि किया उपद्रव, जम कर तुमको तोड़ेंगे।
अब की नाल खुली तोपों की, कांप उठेगी धरा गगन।
एके सैतालिस से अब, सीमाओं पर करो हवन।।

शांति हमेशा भाती हमको, गांधी के अनुयायी हैं।
विश्वमैत्री हो यह बातें, हरदम हमको भायी हैं।
गांधी जी के साथ ही हमने गरम खून भी पाला है।
कर में है तलवार शिवा की, और राणा का भाला है।
बहुत हो चुकी शांति की बातें, शस्त्रों से मन होय मगन।
एके सैतालिस से अब, सीमाओं पर करो हवन।।

एक पड़ोसी ऐसा है, रिश्ते में लगता भाई है।
बैर भाव की प्रीत पालने, वाली मन में खाई है।
आजादी के समय, देश से रिश्ता उससे टूट गया।
पाक बनाया उसने, भारत माँ से बेटा छूट गया।
नाम तेरा मिट जायेगा, नापाक यदि किया जतन।
एके सैतालिस से अब, सीमाओं पर करो हवन।।

कारगिल के युद्ध में देखो, हमने तुमको मारा है।
जब भी लड़ने की सोची है, तब तब हमसे हारा है।
चला रहे आतंकी अड्डे, उन अड्डों को बंद करो।
घूम रहे हैं जो आतंकी, उनका कोई प्रबंध करो।
सीमाओं को लाँघ के जब भी, मेरी भूमि पर आएंगे।
हिंदी शेरों के हाथों, तय जानो मारे जायेंगे।
चुन चुन कर मारे जायेंगे, सेना की अब यही लगन।।
एके सैतालिस से अब सीमाओं पर करो हवन।

मै कलम हूँ

मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।
मदद में बढते करों को, मीत लिखती हूं।
लिखूंगी मै क्या, समय और काल पर निर्भर,
सृजन लिखती हूं, मैं ही विध्वंस लिखती हूं।

मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।
मैं कलम हूं, आम भी मैं खास भी लिखती,
समस्या से जूझतों की, आस भी लिखती,
लिखती हूं मैं प्रेम, और वेदना दोनों,
टूटते हर आस का, विश्वास लिखती हूं।।
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

रावणों सा पैदा होता, दर्प लिखती हूं।
और उसकी परिणति का, मर्म लिखती हूं।
बन गये तुम खुदा, पर जान लो लेकिन,
दर्प करते चूर, नायक राम लिखती हूं।
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

सरहदों पर जो खड़े हैं, तान कर सीना,
सैनिकों के शूरता का, मान लिखती हूं,
गाँवों से सीमाओं का, बनती हूँ सेतु कभी,
सैनिकों के दर्द का, सम्मान लिखती हूं।
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

प्यार में पड़ती हूं तो, श्रृंगार लिखती हूं।
प्रेम के सम्मान में, रसधार लिखती हूं।
प्रेम के ही तत्व में, जग रामाया है यहाँ ,
प्रेम में मैं राधे का, गुणगान लिखती हूं।
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

नयन जब भी नयन से टकरा गए, तो प्रेम में,
मधु को छलकाता हुआ, मधुमास लिखती हूं।
जब कभी हो दूरियां, तो विरह भी लिखती ,
फिर पुन: होगा मिलन, विश्वास लिखती हूं।।
कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।

युद्ध में कट कर गिरें, अरि भाल लिखती हूं।
तिजोरियो में बंद, काला माल लिखती हूं।
आत्महत्या को विवश है, देश के ही लाल वह,
खेतों में खटते कृषक का, हाल लिखती हूँ।
मैं कलम हूँ, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

बच्चो का हडपे निवाला, दिखते ऐसे क्रूर भी ,
नीच और पापी डरें, अंगार लिखती हूँ
डालते रहते हैं डाका, दूसरों के हक पे जो ,
दोषी को मिलती सजा, वह धार लिखती हूँ
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

देश की रक्षा की खातिर, सीमा पर बढ़ते रहे,
बढ़ते उन कदमों पे मैं, श्रृंगार लिखती हूं।
पड़ती है जब भी जरूरत, देते हैं मिल कर लहू,
छोड़ कर श्रृंगार तब, अंगार लिखती हूं।।
मैं कलम हूं मैं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।

सड़क पर घूमते रहते, आवारा पशु समस्या है,
नहीं खप पायी गौशालों में, यह विश्वास लिखती हूं।
तुम्हीं तो पालते हो स्वार्थ में, दूध की खातिर,
किसानों के लिए है काल, उनका हाल लिखती हूं

मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।।
अरे अब घूमते आवारा भी, मंचों की हैं शोभा,
नशे में डूबते पथभ्रष्टता, का हाल लिखती हूं।।
सड़क जा रही नारी, सदा संसय में है रहती,
वह कितनी है सुरक्षित, आज उसका हाल लिखती हूं।
मैं कलम हूं, हर विधा के गीत लिखती हूं।

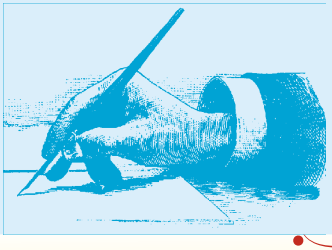

श्री कुंजीलाल चक्रवर्ती 'निर्झर'

परिचय

नाम : श्री कुंजीलाल चक्रवर्ती 'निर्झर' साहित्यकार एवं गायक
जन्म : 01/07/1968 **माता :** सोना बाई चक्रवर्ती
पिता : श्री रामदास चक्रवर्ती
पता : गड़र पिपरिया भेड़ाघाट जबलपुर(म.प्र)
व्यवसाय : फ़ोटो ग्राफी
प्रतिभा : बुंदेली, हिंदी में रचना सृजन एवं गायन
सम्मान : बुंदेली सृजन सम्मान, अभिव्यक्ति अलंकरण, सृजन चेतना अलंकरण, मंथन काव्य श्री, मंथन काव्य श्री सांत्वना पुरस्कार, सृजन शिल्पी, मंथन सृजन साधक अलंकरण प्रथम पुरस्कार, अलंकरण,वर्तिका काव्य श्री अलंकरण, मंथन काव्य तृतीय पुरुस्कार, वर्तिका काव्य शिरोमणि। **सम्पर्क :** 7067776187

बसंत पंचमी के दोहे

वीणा, बेद, पूजा की थाली,
दीपक का उज् यार ऽ।
हे माँ मन को ऐसा करदे,
मिटे सभी अंधियार ऽ।।

मोर पंख सा मन हो सुंदर,
मेरा सब कोई देबे प्यार ऽ।
एक दबात और पंख कलम
माँ दो विद्या भंडार ऽ।।

जहाँ तुम्हारी छाया मैया,
रहता नही गुरूर ऽऽ।
इस अज्ञानी के हृदय में,
बुध्दी दो भरपूर ऽऽ।।

कृपा अगर तुम्हारी हो जा,
रहे चमक ता नूर ऽऽ।
शत शत नमन करे माँ, निर्झर
कभी ना जाना दूर ऽऽ।।

घर घूला

क्या बचपन, बचपन के दिन
बच्चे ने किया कमाल,
सुंदर रेत के घर घूला पर
मंदिर बना विशाल।

घर घूला में कितने,
रोसन दान हैं प्यारे–प्यारे,
मंदिर के गुम्मत कलशा भी
मन को भाये हमारे।।

रेती में बांग्ला रेती का,
है धन्य बनाने बारे,
मन को मोह रहा ये सब के
दंग है देखन बारे।।

ऐसा बचपन पाकर 'निर्झर',
सभी धन्य हो जाते हैं,
तरह–तरह के घर घूले,
रेता में बनाये जाते हैं।

देखो देखो...

देखो देखो सर्कस देखो,
ऐसे, ऊपर जाता हूँ,
रस्सी के ऊपर चलके मैं,
पास तुम्हारे आता हूँ

सिड्डी से जोकर आता है,
कैसा ढोल बजाता,
हाथी और जिराफ,
ढोलु, मोलू दौड़ लगवाता

एक सफाई करे तो,
भालू गंदा करे मु तल्ला,
बच्चे हँसते देख–देख कर
करते खूबई हल्ला।

नीचे एक चले पहिया पर,
जोकर घुमा खिलौना,
एक तो कूद, कूद के नाचे,
परेशांन भई मौना।

बंद करो सर्कस,
पिंजरे में बंद है, निर्झर भाई,
शेर उसी के अंदर,
कोई क्षति ना दे पहुचाई ।

आँख मिचोली

हम कितने खुश थे कभी,
करते खूब् ठिठोली।
भैया बहन भी हँसते अपनी,
देखके आँख मिचोली।

आँख में पट्टी बाँध के छीते,
भाई बहन की टोली,
पीछे से कोई छी छी, शू शू,
दें संकेत की बोली।।

जोर जोर से हँसते जब हम,
दिशा बदल निंग जाबे,
आके पास फूँकते कोई,
फिर संन्नाती गई टोली।।

बचपन सा कोई राज नहीं है,
बात ये मैने तौली,
सीधा सच्चे बचपन के दिन
आओ करें मिल हमजोली

फिर कोई भी आहट देता,
पकड़ो मुझे सहेली,
अब घर जाने हमको 'निर्झर',
हँस कर पट्टी खोली।।

किशनलाल जांगिड़

परिचय

नाम : किशनलाल जांगिड़, प्रधानाचार्य शिक्षा विभाग, जोधपुर। **जन्मतिथि :** 24/10/1967
शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य,1992, शिक्षा स्नातक जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर।
सेवा समर्पण : राजस्थान शिक्षा सेवा संवर्ग में प्रथम नियुक्ति 20/11/1996 में हिन्दी व्याख्याता, पदौन्नति 25/07/2015 से प्रधानाचार्य के रूप में अद्यतन प्रभावी भूमिका, अध्यक्ष अथाई समन्वय समूह। **रचनाएँ :** विविध दोहावली, प्रकृति संरक्षण, शहीदों को वन्दन, नारी **सम्मान :** श्रद्धा परक मुक्त छन्द, 12 चालीसाओं की रचना, श्री विश्वकर्मा चालीसा, श्री महावीर स्वामी चालीसा, श्री गंगाकीर्ति चालीसा, सुसवाणी माता भजन संग्रह। सम्मान श्री विश्वकर्मा चालीसा एवं भजन के लिए जांगिड़ समाज रत्न, शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान प्रशस्ति पत्र, अथाई आशा साहित्यिक मंच द्वारा विविध सम्मान।

प्रभु श्री राम महिमा दोहे

श्रीराम नाम पूर्ण ब्रह्म,
अनादि राम स्वरूप।
आदिपुरुष जग बुद्धिभ्रम,
मतिमंद कहि विद्रूप।।
निर्गुण राम है आत्म परम,
सत् रज् तम् से मुक्त।
कबीर दादू जपत नित,
निराकार से युक्त।।
रघुवंश त्रेता रघुवर,
दशरथ नन्दन राम।
भव तुलसीदास कविवर,
विश्वास सगुण राम।।
विश्व मंगल राम शपथ,
कौशल्या सुत राम।
लोकहित भव अद्भुत पथ,
भरत अग्रज श्रीराम।।
गुरु विश्वामित्र संग लखण,
जनकपुर गएँ राम।
सीता स्वयंवर विलक्षण,
शिव धनुष भंग राम।।

संयोग भरत माण्डवी,
शत्रुघ्न की श्रुतकीर्ति।
लक्ष्मण विवाह उर्मिला,
जग रामराज नीति।।
प्रभु राजतिलक शुभ घड़ी,
कैकेयी वचन विघ्न।
अनुज राम श्री वनगमन,
व्याकुल भरत शत्रुघ्न।।
दण्डक विपिन पंचकुटी,
सकल मुनि रक्षक राम।
असुर अन्त चढ़ी भ्रकुटी,
मर्यादा उत्तम राम।
शुर्पणखा की नाक कटी,
रचि माया श्रीराम।।
छल कपट सीता हरण,
अहंकार लंकेश।
वध किया युद्ध दशानन,
विजयी श्री अवधेश।
प्रभुराम अवतार विष्णु ,
नमन ब्रह्मा महेश।

दिव्यशक्ति प्रभु परमाणु,
श्रद्धा सदा सर्वेश।।
अयोध्या प्रथम दिवाली,
अवध प्रभु पुनः प्रवेश।
दीपोत्सव परमानन्द,
आलोक पर्व स्वदेश।।
राम राजतिलक जग हित,
वैभव प्रभु आशीष।
श्रीरामजानकी सहित,
चरणारविन्द शीश।।

भारत की आन बान शान

भारत की आन बान शान
तीनों सेनाओं की कमान।
हवाई हमले करें वायुयान।
मिग२९ पर हमें अभिमान।

वायुसेना नभरक्षा अनुमान।
राफाल प्रचण्ड भव विमान।
योद्धा उड़ते नित सीनातान।
वीर अभिनन्दन का सम्मान

आठ अक्टूबर दिवस महान्।
गगन वीरों का करें गुणगान।
रणभूमि पिनाक घमासान।
सुरक्षित है अपना आसमान।

शत्रु पर सीधा अचूक संधान।
राष्ट्रनभ अंकित जय निशान।
गंगा अभियान का कीर्तिमान।
बहुत प्रवासी लौटे हिन्दुस्तान।

थलसेना भी इससे शक्तिमान।
जान हथेली पर रहे गतिमान।
केसरी बटालियन की पहचान।
पंजाब जाट राजपूत योगदान।

नौसेना तटरक्षक है बलवान।
युद्धपोत विक्रांत अनुसंधान।
जलक्षेत्र राष्ट्र बहादुर जवान।
जलथलवायु सुरक्षा विधान।

महामहिम राष्ट्रपति आह्वान।
द्रोपदी जी मुर्मू पद प्रतिष्ठान।
सर्वोच्चशक्तिप्रदत्त संविधान।
उपयुक्त है राष्ट्रहित प्रावधान।

सीडीएस है द्वितीय वर्तमान।
ले.जनरल श्रीअनिल चौहान।
एयर चीफ मार्शल की कमान।
विवेक राम चौधरी रत्नमहान्।

सेनापति का दायित्व वर्तमान।
मनोज पाण्डेय गर्व हिन्दुस्तान।
नौसेना कर्मबीरसिंह एडमिरल
राष्ट्रीय सुरक्षा चक्र है अविरल।

निर्वाण साधना धाम

जीत है निर्वाण साधना धाम की
तीर्थंकर महावीर स्वामी नाम की।
सम्मेदशिखर पराकाष्ठा ध्यान की।
तपोभूमि अखिल भुवन ज्ञान की।

परम पवित्र तीर्थ स्थल आत्म का।
तदाकार दिव्य जीव परमात्म का।
वन्दनीय श्रेष्ठ जीवन महात्म का।
मन्त्र अलखनिरंजन विश्वात्म का।

ऋषभदेव आदिनाथ आस्था का।
पार्स्वनाथ सुमितनाथ श्रद्धा का।
श्री चौबीस तीर्थंकर भगवान का।
शंख नाद तीर्थ स्थल विधान का।

पूजनीय वसुन्धरा भारतवर्ष की।
जयघोष जिनेन्द्र जी जनहर्ष की।
जैनध्वजाशुचिता अनन्त वर्ष की।
धर्म क्रान्ति आध्यात्म उत्कर्ष की।

आचार्य अभियान अहिंसाव्रत का।
आह्वान है शाकाहार महाव्रत का।
अनुष्ठान है अनवरत पंचव्रत का।
अनुगूंजित अखण्ड अणुव्रत का।।

धवल प्रासाद सम्मेदशिखर का।
मोक्ष बिन्दु सनातन तीर्थंकर का
पथ विलक्षण विकट गिरिवर का।
आगमन अब केवल सात्विक का।

समग्र अभिलाषा

नयी सुबह नव सन्देश कहत
नभ अरुण आभा अनन्त।
आदित्य आलोक तम हरत।
लालित्य पूर्ण बादल रजत।

नृत्य सागर की सुनहरे लहरें।
अनन्तसिन्धु सतह भाव गहरे।
धरा गगन मध्य रवि देत पहरे।
अदृश्य शक्ति अद्भुत रंग घनेरे।

भोर वेला सारस भरे उड़ान।
सुदूर स्वर्णिम शुभ्र आसमान।
खजूर खंजन पक्षी गतिमान।
प्रकृति का यह शुभ आह्वान।

एक पल अम्बर शंख सा लगता।
नाविक अपनी नोका से जगता।
उजाला होता जब सूरज उगता।
मानो दिनेश किरणजाल बुनता।

सब अन्धियारा धीरे धीरे हरता।
जगत् स्वामी नित प्राण भरता।
रवि सुधा संजीवनी ही अमरता
वही जग पुरुषार्थ प्रेरित करता।

विश्व सचेतन है आज जगकर।
प्रभाती परमार्थ मन्त्र दिनकर।
बढ़े है पथ कर्मयोगी सजकर।
भुवन मंगल यज्ञ करें निजकर।

डॉ. कीर्ति जैन

परिचय

नाम : डॉ. कीर्ति जैन **पति :** श्री अनुराग जैन
पोस्ट : असिस्टेंट ग्रेड 3 **संस्था :** नाप तौल विभाग खरगोन
शिक्षा : B.Com, M.Com, M.A, PGDC, Ph.D, Diplom In Polytechnic **पता :** नूतन नगर कॉलोनी खरगोन (म.प्र.) **ई–मेल :** kjkirtijaingmail.com

शोध पत्र : 10 शोध पत्र देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, भारतीय जैन संगठना में ट्रेनर 5 बालिका प्रेरक कार्यशाला आयोजित की, 15 साल महिला पॉलीटेक्निक में टीचिंग का अनुभव **सम्मान :** शिक्षा में बेस्ट टीचर अवार्ड, नारी शक्ति अवार्ड, महिला सशक्तिकरण अवार्ड, भारतीय जैन संगठना द्वारा सम्मानित, दिगम्बर जैन समाज द्वारा सम्मानित, इनरव्हील क्लब द्वारा सम्मानित, मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा सम्मानित, मोबाइल फंक्शन सिखाने की क्लास लेने पर अवार्ड, सदैव सब की सेवा के लिए तत्पर रहती हूं, सबकी निस्वार्थ भाव से सेवा करती हूँ। **मेरी उपलब्धियां :** 1. मारवाड़ी महिला सम्मेलन शाखा खरगोन अध्यक्ष 2. नेत्र दान समिति प्रभारी 3. जैन महिला मंडल अध्यक्ष 4. वैश्य समाज महिला इकाई में जिला अध्यक्ष 5. इनरव्हील क्लब में पूर्व अध्यक्ष 6. पेरेंट्स कमेटी में अध्यक्ष
सम्पर्क सूत्र : 9425089038, 7974699527

प्यार, दुलार और ममता

लोग कहते हैं प्यार, दुलार
और ममता सब एक ही है,
नहीं जी
प्यार एक दूसरे से किया जाता है
चाहे वो लड़का हो या लड़की
दुलार
छोटे छोटे बच्चे को किया
जाने वाला स्नेह
और ममता
एक मां अपने बच्चे को
ममता देती है

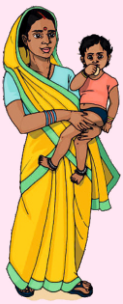

मां का प्यार ममता है,
मोह है,
अब हम को यह जानना
प्यार एक बार होता है
दुलार कई बार दिया जायेगा
ममता अपने बच्चों पर
लुटाया जाने वाला स्नेह
होता है।

संस्कार

जीवन शैली में
संस्कार का बहुत महत्व है
गुड़िया को अपने घर में
अच्छे संस्कार मिले
बचपन से ही उसे
दादा–दादी का
कहना मानना,
आदर करना सिखाया गया
उसने सभी बातें
अपने जीवन में अपनाई
गुड़िया की शादी हो गई
उसने अपने सास–ससुर की
बहुत बहुत सेवा की,
फिर भी कुछ न कुछ कमी
रह जाती ,
गुड़िया के बच्चे हुए
दोनों बच्चों को खूब
प्यार से पाला पोसा, अच्छे
संस्कार दिए
किंतु वर्तमान स्थिति में
बच्चे मॉर्डन दौड़ में आगे
बढ़ने के लिए, सब कुछ
भूल गए, संस्कार भी
डांस ,क्लब पार्टी डी जे
पार्टी में खूब मस्ती करते हुए
संस्कार का गला दबा दिया,
गुड़िया को भी दुखी करने लगे
पर इतना होने पर भी
गुड़िया ने हार नहीं मानी,
क्योंकि गुड़िया में
अच्छे संस्कार थे,
उसने अपने
बच्चों को भी प्यार से
समझाया अपने नए ट्रिकों से
वह बच्चों को सही राह पर
ले आई,
आज संस्कार की जीत हुई
और परिवार में खुशी छाई

दुर्घटना

दिल बहुत रोता है,
जब किसी
अपने की दुर्घटना
का पता चलता है,
जब भी बहुत रोता है
जब हम अकेले होते हैं
आज शहर में
एक हादसा हुआ
आज एक बस
खाई में गिरी,
तब ऐसा लगा जैसे
बस नहीं में ही
खाई में गिर गई,
अस्पताल से
खबर आई की
कुछ महिलाएँ
अकेली हैं,
एक बच्ची
भी अकेली है,
किंतु मैं रोती
रह गई,
कुछ भी मदद
नहीं कर पाई
सोचा कभी
मैं भी ऐसे ही
दुर्घटना में
घायल हुई तो,
मुझे कोई
बचा पाएगा
सोच–सोच कर
दिल बहुत रो रहा है,
ऐसा हादसा ईश्वर
किसी के साथ
नहीं करे
ऐसी प्रार्थना है।

कही अनकही

ये बात कहाँ से शुरू करें
ये ही कही अनकही है
एक रिया थी जो जाबाज है
अपनी जिंदगी
अपने हिसाब से जीती है
फिर उसकी जिंदगी में तूफान
आता है
उसके परिवार के जीने का
सहारा बिखर जाता है,
और जीने के लिए कमाना
होता है,
फिर रिया की नौकरी लगती है
जिससे परिवार की देखभाल
होने लगी
इस सब में कब रिया
अपने बॉस के लिए
महत्वपूर्ण हो गई
उसे पता ही नहीं चला
और जब रिया को भी लगने लगा
बॉस प्यारा
तब तक बहुत देर हो गई,
क्योंकी बॉस ने अब
किसी और से दिल लगा लिया
अब रिया रोज रोती है
तड़पती रहती है पर
कहे भी तो किसे
सब कुछ
कही अनकही बातें हो गई।

डॉ. मनोरमा गुप्ता

परिचय

नाम : डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता 'बाँसुरी'

जन्मतिथि : 5/5/56

पद : पूर्व प्राचार्य, आदित्य महाविद्यालय, जबलपुर

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., अर्थशास्त्र एम.ए. हिन्दी, आयुर्वेद रत्न।

प्रकाशित कृतियाँ : एकल संग्रह-7, साझा संकलन-17, सम्मानपत्र-70

संपर्क-सूत्र : 9993253556 (वॉटसअप नंबर), 9479563299 2650060

पता : डॉ रमेश गुप्ता, 250 दक्षिण मिलौनीगंज पोस्ट-ऑफिस के पास जबलपुर (म .प्र.) पिन कोड : 482002

माँ की अर्ज बेटे से

हाँ,
बेटा,
मैंने ही,
संजोये थे,
मधुर स्वप्न,
सुखी जीवनार्थ,
उच्च तकनीतिज्ञ,
विदेशी कंपनियों में,
सर्वोच्च पद का वेतन,
सारी खुशियाँ कदमों में हों,
जब भी दूँ आवाज चले आना।
बस यही अपेक्षा हमारी,
बीमारी-आरामी मेंआना,
अर्थी को कांधा दे देना,
हमें न भूल जाना,
माँ के आँचल की,
छाँव से बड़ी,
संसार में,
दौलत,
नहीं ,
है।

वृद्धावस्था से अर्ज

ऐ बुढ़ापे जरा तू ठहर जा अभी...,

मुझे एक अर्ज खुदा से करने दे, जब भी तू आए कभी पास मेरे ।
हाथ पैरों में इतनी ताकत देना, बुढ़ापा आये, बिना कोई सहारे।

अरमान दबाकर भी जी सकूँ मैं, बिना कोई अपनों को पुकारे।
जीवन संध्या में न करना ईश्वर, चश्मा बत्तीसी लाठी के सहारे।

ऐ बुढ़ापा सुन! दस्तक दिये बिना, मत आना लेकर दुखों के पिटारे।
मुझे पहले ही शरण में ले लेना प्रभु, मायूश बुढ़ापा आये जब द्वार हमारे।

हरियाली पर चिंतन

अब चित्रों में ही देखेंगे, सुंदर हरे भरे खेत बगीचों को।
अब चित्रों में ही देखेंगे, हरी मखमली दूब गलीचों को।

अब चित्रों में ही देखेंगे, लहंगा चुनरी वाली नारी को।
अब चित्रों में ही देखेंगे, ढोलक ढोल और मंजीरों को।

अब चित्रों में ही देखेंगे, झूलेवाली अमरैया डाली को।
अब न सुन पाएंगे हम, गांवों की मीठी भाषा बोली को।

अपनी भाषा संस्कृति की डोर, सौंपी विदेशी विकृति को।
अब चिंतन करें बचायें, वैदिक भारतीय संस्कृति को।

श्रीमती मनीषा राठी

परिचय

नाम : श्रीमती मनीषा राठी **पति का नाम :** श्री शैलेंद्र राठी **स्थान :** उज्जैन मध्य प्रदेश **शिक्षा :** एम ए (राजनीतिशास्त्र) **रुचि :** लेखन, मंच संचालन, समाज सेवा, पेंटिंग, लेखन की प्रमुख विधाएँ–मुख्यतःआलेख एवं कविता **पुरस्कार एवं सम्मान :** अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन के द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता हर सीट हॉट सीट में एवं एकल प्रश्न में पाँच प्रदेशों (मध्यांचल) में प्रथम स्थान। गीता परिवार द्वारा आयोजित जानो गीता बनो विजेता प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान। अथाई आशा इंटरनेशनल रचनाकार समूह द्वारा सम्मानित। माहेश्वरी साहित्य कार मंच द्वारा शब्द योद्धासम्मान। हरित प्रकृति प्रेमी सम्मान, रक्षा सूत्र सम्मान, साहित्य सुरभी सम्मान, नवलेखा लालित्य सम्मान, समाज प्रबुद्धक सम्मान प्राप्त। काव्य कलश साहित्यिक मंच द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार से सम्मानित। पश्चिमी मप्र. द्वारा आयोजित चिंतन सत्र प्रतियोगिता में प्रदेश स्तर पर प्रथम स्थान। **उपलब्धियाँ :** 1. कई राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पत्र पत्रिकाओं (नूतन कहानियाँ, समन्वय वाणी, श्री माहेश्वरी टाइम्स) में लेख एवं कविता प्रकाशित, 2. सामाजिक संगठनों में निम्न पदों पर कार्यरत –प्रादेशिक प्रभारी, बाल एवम किशोरी विकास समिति पश्चिम मध्य प्रदेश, प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन 3. सचिव – वर्तमान सत्र उज्जैन जिला माहेश्वरी महिला संगठन। 3. अध्यक्ष– अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन उज्जैन पश्चिमांचल शाखा उज्जैन।

हमारी संस्कृति – हमारा गौरव

देव संस्कृति के निर्माता
यज्ञ पिता तो गायत्री हैं माता
अशांत क्लांत मन को
शांति से कर परिपूर्ण
यजन से होते हमारे
अभीष्ट सब पूर्ण।
श्रेष्ठ कर्मों के प्रसारक
भाव कर देते पवित्र
देव करते शुद्ध चित्त
शुभता प्रदान करते गायत्री मंत्र।
ब्रह्मा विष्णु और महेश
आदित्य, वसु, रुद्र, अरु कुमार
तैन्तीस कोटि देवता हैं
धरते रूप साकार।
अधर्म का फ़न कुचलती
धर्म की तलवार
ऐसी वसुंधरा पर हो मेरा
जन्म बारंबार ।
विदेशी अपना रहे
हमारे वेदों परिपाटी
धन्य हमारे संस्कार
और हमारी माटी।
धरा है ये ऋषि–मुनियों की
देवभूमि ये मातृ भूमि
पुण्य सलिला गंगा जहाँ
भारत के चरण पखारती।
राग द्वेष को कर परे
पुष्ट करें समभाव
मुक्ति मार्ग पर चलें हम
निष्क्रियता का हो अभाव।
शत शत् वंदन इस धरा को
प्रणाम करते बारंबार ।

आत्म निर्भर भारत में नारी का योगदान

भारत में नारी तू नारायणी कहा गया है अर्थात नारी को नारायण की संज्ञा दी गई है। भारत में महिलाएँ चहुँओर अपना परचम लहरा रही है। अति शिक्षित, अल्प शिक्षित, यहाँ तक की साधारण रूप से शिक्षित महिलाएँ भी अपनी समझ बूझ से घरेलू अर्थव्यवस्था को भलीभाँति विस्तार दे रही हैं। जिससे ना केवल स्वयं आत्मनिर्भरता की और अग्रसर हैं बल्कि अन्य के लिए भी प्रेरणा बन रही हैं। स्वामी विवेकानंद जी का कथन है यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति को ही शिक्षित कर रहे हैं। किंतु यदि एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप दो पीढ़ियों को शिक्षित कर रहे हैं।

महिलाएँ स्वभाव से ही बहुत मज़बूत, मेहनती, धैर्यवान, प्रतिस्पर्धी तथा साधन संपन्न रही हैं। महिलाओं कितनी भी संकट की स्तिथि हो धैर्य नही खोती। वो संकट मोचक होती हैं। बस उसे एक बार दृढ़ निश्चय लेना आवश्यक है।

परिस्थितियों से उबरने के लिए भारतीय महिलाओं का सबसे कारगर हथियार मितव्ययता है।महिलाएँ ही अपने सीमित संसाधनों का प्रयोग मितव्ययिता से कर रही हैं । यह दौर उन्हें वास्तविक रूप से हाउस वाइफ़ नहीं बल्कि होम मेकर बनाएगा ।

आज के नए युग में लिंग भेद मेंबहुत हद तक कमी आयी है। महिलाओं में विश्व व्यापार संचालित करने की नयी सोच को अपनाने की क्षमता है। नए दृष्टिकोण को अपनाने में महिलाएँ बहुत तीव्र हैं। इतिहास गवाह है घर से पापड़, अचार, जूट का सामान ,सिलाई करके आजीविका चलाने के काम बरसों से भारत में किए जा रहे हैं। इसी क्रम का सटीक उदाहरण लिज्जत पापड़ महिला गृह उद्योग है ,जो न केवल आज ब्रांड बन चुका है बल्कि अनेक लोगों को रोज़गार भी उपलब्ध करा रहा है। आत्मनिर्भरता की और ये एक लम्बी छलाँग है। महिलाओं की कार्यक्षमता निसंदेह पुरुषों से अधिक रही है। उनकी श्रम शीलता का सही दोहन किया जाए तो घर संभालते हुए वह बाहर भी उतनी ही सफलता से कार्य कर सकती है। अब तो उच्च शिक्षित महिलायें कोरपोरेट सेक्टर में अपना झंडा गाड़ चुकी हैं ।

कई समुदायों में मातृ सत्तात्मक परंपरा है ,जहाँ महिलाओं की भूमिका निर्णायक है। महिलाओं को किसी भी रूप में कम नहीं आंका जाना चाहिए उनकी शक्ति को कभी कम नहीं मानना चाहिए। कई महिलाओं को कुकिंग, बैंकिंग, कैंडल मेंकिंग, पढ़ने पढ़ाने आदि शौक़ होते हैं इन सबको वव्यवसाय में बदला जाना आज का नया ट्रेंड बन गया है। यदि आप अपने शौक़ या हुनर व्यवसाय में बदल देते हैं तो इससे आत्मिक आनंद का अनुभव करते ही हैं साथ ही आय स्रोत के रूप में सोने पे सुहागा ।

आज के डिजिटल युग में यूट्यूब पर अपने चैनल बनाकर, ऑनलाइन ट्यूशन पढ़ाकर, ज्वेलरी कपड़ों का विक्रय कर, ऑनलाइन पार्टीज़ अरेंज करके महिलाएँ निरंतर आय अर्जित कर रही हैं। इसके अतिरिक्त योगा एरोबिक्स की ख़ुद की CD या DVD के द्वारा न केवल महिलाएँ ख़ुद को सेहतमंद रख सकती हैं बल्कि औरों को भी प्रेरित कर सकती हैं। घर पर ब्यूटी पार्लर, ब्यूटीक इस तरह के अनेक उदाहरण है जिनसे महिलाएँ घर परिवार का ध्यान रखते हुए आय अर्जित कर सकती हैं। इस प्रकार आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भूमिका अति महत्वपूर्ण है ।

याद रखें महिला कमज़ोर सिर्फ़ अपनों के लिए है वरना उस से ज़्यादा मज़बूत और कठोर कोई नहीं।

नरेश चावला स्नेहदिल

परिचय

नाम : नरेश चावला स्नेहदिल **पिता :** श्री कृष्ण लाल चावला
माता का नाम : श्रीमती जनक चावला
पता : गुरु-निधि; C-167 रामेश्वर नगर, बासनी फेज़- प्रथम, जोधपुर 342005 राजस्थान
मो. नं एवं वाट्स एप नं. 8949099939, 9462615864
जन्म एवं जन्म स्थान : 15 अगस्त 1964, जोधपुर (राज.)
शिक्षा : M.Com., D.C.LL., D.B.M², (IMC)., D.Ex.MM.
व्यवसाय : मोटिवेशनल स्पीकर, स्पिरिचुअल काउंसलर और आज कल सीनियर सेल्स एंड मार्केटिंग जनरल मैनेजर का कार्य भार संभाल रहा हूँ। अपनी साहित्यक रुचि के लिए कलम को साथ ले कर शब्दों की माला बनाने का प्रयास करता हूँ।
प्रकाशन/प्रसारण : प्रतिध्वनि साहित्यिक हिंदी पत्रिका के सामूहिक प्रकाशन में प्रकाशित कविता और चैनल पर प्रसारण। **सम्मान/पुरस्कार :** प्रतिध्वनि साहित्य परिवार सम्मान पत्र। **सर्वश्रेष्ठ लेख :** स्वास्थ का जीवन में महत्व, प्रतिध्वनि साहित्य परिवार सम्मान पत्र। **उत्तम काव्य :** प्रतिध्वनि साहित्य परिवार सम्मान पत्र - ऑन लाइन काव्य पाठ के लिए प्रशस्ति पत्र। समन्वय वाणी फाउंडेशन द्वारा संचालित अथाई समूह के द्वारा आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में समय-समय पर प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान प्राप्त। प्रतिध्वनि साहित्यिक मंच द्वारा आयोजित ऑनलाइन काव्य गोष्ठी में काव्य पाठ के लिए प्रशस्ति पत्र। विभिन्न समारोह मंच में काव्य पाठ के लिए आमंत्रित व सम्मानित, एवं अपने कार्य क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य के लिये भी सम्मनित किया गया हूँ। नया सीखने के लिए हमेशा उत्सुक रहता हूँ।

नजरों में अपने सवालों के ज़वाब पढ लो ... (ग़ज़ल)

नजरों में अपने सवालों के ज़वाब पढ लो ..
या कहानी कोई तुम भी अलग से गढ़ लो ..

एक इशारा करूं मैं दो इशारे तुम कर लो..
या रूमानी कोई बातें चंद तुम भी कर लो..

नजरों में अपने सवालों के ज़वाब पढ लो ..
या कहानी कोई तुम भी अलग से गढ़ लो ..

चौबारे पे आना तेरा, गली से गुज़र जाना मेरा
या ऐसी पुरानी कोई यादें ताज़ा तुम भी कर लो

इश्क़ करते भी हो इज़हार से डरते भी हो.
खड़ा हूँ छत पर गली से मेरी तुम भी गुजर लो

नजरों में अपने सवालों के ज़वाब पढ लो ..
या कहानी कोई तुम भी अलग से गढ़ लो ..

कोरे दिल के कागज़ पर मोहब्बत की तस्वीरें बना लो
या लैला-मजनूं हीर-रांझना सी अपनी कहानी लिख लो

नजरों में अपने सवालों के ज़वाब पढ लो ..
या कहानी कोई तुम भी अलग से गढ़ लो ..

मुझ में अभी भी ज़िन्दा हूँ मैं स्नेहदिल..
किताब-ऐ-दिल में पन्ना इश्क़ तुम ही पढ़ लो ..

कुछ नटखट रंग इश्क़ के ..

1

मुस्कान वार दूं ..
के ...फूलों के हार दूं..
खर्च हो रही हैं ..
सांसें पल पल...
आ–रख सर– कांधे... पे
जुल्फें हौले से संवार दूं...
खर्च कर धीमे धीमे ..
बाकी की सांसें.. तुझ पे
आ–कर्ज तेरे सारे उतार दूं...

2

गुनाहों के सिलसिले ज़ारी रखना..
कभी लबों कभी निगाहों की बारी रखना..
कातिल भी तुम, चोर भी तु ,
लूटा भी तुम्हीं ने ..
कुबुल इलजाम सभी..
हम को सखी ..
सजाओं में तुम अपनी भी हिस्सेदारी रखना ...

3

चुरा के ले गये कुछ पल मेरी यादों से...
हम ने रखे थे छुपा कर ज़माने से ...
बस एक पल को वो आये थे
य़ारा सपने में किसी नए बहाने से..

तू माँ है ..

तू माँ है ..
कभी ना बोलेगी थक गई तू ..
बैठ घड़ी दो घड़ी ...माँ
ठहर ..तेरा पसीना पोंछ दूँ
ये अमृत मेरा है.. कैसे छोड़ दूँ ..

तू माँ है ..
कभी ना बोलेगी थक गई तू ..
सुस्ता ले दो घड़ी ...माँ
रुक ज़रा.. आँचल तेरा सम्भाल दूँ
ये आशियाना मेरा है.. कैसे छोड़ दूँ...

तेरी बेटी हूँ ..
सयानी हो गई अब मैं
*माँ *..तेरी परछाईयों की छाँव में ..
नंगे पैरों चलते चलते ..
ये दिल ना माने ... माँ
तुझे कैसे धूप में मैं भी अकेला छोड़ दूँ ..

सर्कस शो दो घण्टे का.. शो एक जिंदगी का ..मित्रा

रब तेरी दुनियाँ का कैसा ये अनोखा खेल देखा ..
सर्कस में कैसा ये जानवर इन्सान का मेल देखा..
दो घंटे के एक शो में बैठ कर हमने मित्रा ..
तन मन के संगम शक्ति का अद्भुत मेल देखा ..

इंसानों को बंदर सा नीचे ऊपर नीचे उछलते देखा..
चौपाये को दो–दो पायो पर इठला चलते देखा..
दो घंटे के एक शो में बैठ कर हमने मित्रा ..
रब तेरी दुनिया में जानवर इंसान का होता मेल देखा ..

करुणा हास्य संगम का निमित पात्र जोकर देखा ..
पशु पक्षी इंसानों को एक दूसरे के संग पलते देखा ..
दो घण्टे के एक शो में बैठ कर हमने मित्रा..
सर्कस में एक सभ्य समाज को बनते देखा ...

नारायण प्रसाद तिवारी

परिचय

नाम : नारायण प्रसाद तिवारी (शिक्षक)
पिता : स्व. श्री जी.पी.तिवारी (भू.पू. प्राचार्य)
शिक्षा : एम.एस.सी. गणित, एम. ए. राजनीति शास्त्र, बी. एड. **पद :** शिक्षक **रुचि :** लेखन
जन्मतिथि : 30-05-1970 **जन्मस्थान :** सिहोरा
निवास : ब्राह्मणपुरा वार्ड नं.8 शुक्लजी की बखरी के पास, सिहोरा जिला-जबलपुर (म.प्र.)
सृजन : गीत,ग़ज़ल,दोहे,कविता लेखन,मंचीय काव्य -पाठ
प्रकाशन : साझा काव्य संग्रह **उपलब्धि :** अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्मानित

कलम की खनक

गर कलम न होती वेदव्यास की
कैसे पाते ज्ञान पुराणों का
कैसे अनुभव हम कर पाते
तुलसी,कबीर के भावों का।

क्या मिल पाते फिर अमर ग्रंथ
हमको बाइबल, रामायण से
कैसे विज्ञान बता पाते हम
भौतिक और रसायन से।

ये कलम ही हमको बतलाती
कैसा इतिहास हमारा है
कैसे ये चाँद सितारे है
कैसा सूरज ये तारा है।

कलम की ताकत ने हमको
गीता का ज्ञान कराया है
मानव का धर्म सिखाया है
सच क्या है ये बतलाया है।

कलम की ताकत से ही तो
हमने आजादी पाई है
लड़ने का जोश भरा सब में
उससे ही हिम्मत पाई है।

कलम ने ही तो दिखलाए
हमको प्रकृति के रंग सभी
कैसी सुन्दरता नदियों की
कैसे प्रेमी के भाव अभी।

कलम की ताकत ने ही तो
घपलों का पर्दाफाश किया
कितनों को विजय दिलाई वा
कितनी सत्ता को पलट दिया।

गर कलम रहें सच्चे हाथों
अपना करतब दिखलाती है
झूठे को सबक सिखाती है
धरती को स्वर्ग बनाती है।

खुशकिस्मत हम जो कृपा मिली
माँ शारद,वीणापाणी की
कर्तव्य निभाए सच लिख हम
सेवा करें माँ भारती की।

बेटियाँ

बेटी तो खुशियों का हार
ईश्वर का अनुपम उपहार ।

त्याग तपस्या की वह मूर्ति
सहनशील वह धरती सी
कड़ी परीक्षा देती हरदम
फिर भी रहती हँसती सी
कोख में ही हो जाती शुरु
उसकी परीक्षा कई बार
बेटी तो खुशियों का हार
ईश्वर का अनुपम उपहार।

आती है जब इस दुनिया में
कितनी प्यारी वो लगती
खुशियां भर जाती है घर में
जब खिल–खिल वह है हँसती
घर बन जाता स्वर्ग सा सुंदर
पाकर फूलों सा उपहार
बेटी तो खुशियों का हार
ईश्वर का अनुपम उपहार।

बड़ी जरा सी होती जैसे
उस पर पाबंदी लग जाती
घड़ी–घड़ी वह बातें सुनती
फिर भी हँसकर सह जाती
हरपल नजरें रहती उसपर
जैसे काँच का हो वह जार
बेटी तो खुशियों का हार
ईश्वर का अनुपम उपहार।

घर के हर सदस्य का वह तो
ध्यान सदा ही रखती है
माँ की दवा,चश्मा,दादा का
हाथ लिए वह फिरती है
भाई पर वह जान लुटाती
घर पर हो जाती न्यौछार।
बेटी तो खुशियों का हार
ईश्वर का अनुपम उपहार।

आत्म सम्मान

खुद ही करते खुद का गान
कहाँ रह गया आत्मसम्मान

वाणी में अब वजन नहीं है
कर्तव्यों में तपन नहीं है
फसल बढ़ रहीं मक्कारों की
पहले जैसा चमन नहीं है

नकली चेहरा ओढ़–ओढ़कर
खो गई है खुद की पहचान
कहाँ रह गया आत्मसम्मान।

भाई–भाई में फर्क हो गया
सीधे रहना नर्क हो गया
कफन ओढ़ बैठी मानवता
वतन का बेडागर्क हो गया

मुँह छुपाकर सब है बैठे
आफत में है सबकी जान
कहाँ रह गया आत्मसम्मान।

पैसा सबका बाप बन गया
बेईमानी की छाप बन गया
रिश्ते नाते भूल गए सब
ऐसा वो अभिशाप बन गया
बेईमानी की होड़ लगी है
कोड़ियों में बिक रहा ईमान
कहाँ रह गया आत्मसम्मान।

इंसानियत

दौड़ रहा है,भाग रहा है,
लेकर यह रूप अनेक।
इंसानियत को खो रहा है,
आज इंसान हरएक।

लक्ष्य का कुछ पता नहीं है,
फिर भी चलता जा रहा।
अपने मद में चूर होकर,
ईश्वर को ललकार रहा।
अरे पैसौ के पीछे इसने,
दी है मानवता फेंक।
दौड़ रहा है भाग रहा है,
लेकर यह रुप अनेक।

कभी ठग रहा नेता बनकर,
कभी माफिया बन रहा
कभी भृष्ट अधिकारी बनता,
यमराज सा लग रहा
इंसानों की लाश पर रखकर,
रहा रोटियां सेक।
इंसानियत को खो रहा है,
आज इंसान हरएक।

कभी काटता वृक्षों को यह,
कभी दंगे करवाता
धर्म और जाति की आड़ में,
मानव को मरवाता।
भगवन तूने रचा है इसको,
अब तू ही इसको देख
दौड़ रहा है,भाग रहा है,
लेकर यह रुप अनेक।
इंसानियत को खो रहा है,
आज इंसान हरएक।

श्रीमती निर्मला डोंगरे

परिचय

नाम : श्रीमती निर्मला डोंगरे
पति का नाम : श्री डी. आर. डोंगरे
शिक्षा : M.A. B. Ed
रुचि : लेखन एवं पठन कार्य में रुचि, चिंतन, लेख, कविताएं विधाओं का ज्ञान अर्जित करना। दैनिक समाचार पत्र, एवं कुछ पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशित होना।
सम्मान : अखिल भारतीय नारी प्रति मंच से नारी ज्योति नेशनल अवार्ड। मां सरस्वती की कृपा से निबंध लेखन में विभिन्न संस्थाओं से प्रतियोगिता में सम्मान पत्र। साहित्य संगम संस्थान की समस्त इकाइयों में, रचनाओं का प्रेषण। अनेकों पटल पर काव्य पठन में, एवं स्वरचित रचनाओं में सम्मान पत्र। श्रेष्ठ रचनाकार, एवं श्रेष्ठ टिप्पणी कार की अनेकों सम्मान से सम्मानित। प्रसंग संस्था, अनेकांत संस्था, वर्तिका संस्था, आभा साहित्य संघ जबलपुर, मंथन श्री, स्वरांजलि राष्ट्रीय महिला संघ, विनीता जागृति मंच, अथाई समन्वय समूह से भी अनेकों बार पुरस्कार एवं सम्मान।

कन्या भ्रूण हत्या

मत करो कन्या की हत्या,
उसको गर्भ से बाहर आने दो।

उसका जीवन भी है प्यारा,
दुनिया में उसे आने दो।

तुम्हारा ही खून उसमें भी है,
संसार देखने उसको भी तुम आने दो।

लक्ष्मी का यह रूप निराला,
घर–घर उसको भी आने दो।

क्या बिगाड़ा उसने तुम्हारा,
दोनों कुल की लाज निभाने आने दो।

पढ़ लिखकर करेगी नाम रोशन,
जो लिखा है भाग्य में आकर उसे निभाने दो।

ईश्वर ने उसे भेजा यह कृपा है उसकी,
उसको भी सारे भार उठाने दो।

मां, बेटी ,बहन का रूप वह होती,
उसे अपना सौम्य रूप दिखाने दो।

राक्षस जब कोई उसके सामने आता,
बन चंडिका उसे रौद्र रूप दिखाने दो।

निर्मल भेदभाव तनिक ना करो,
उसकी क्षमता से आगे बढ़ जाने दो।

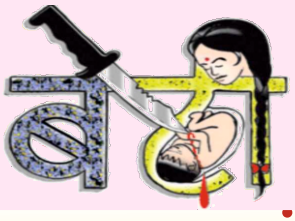

अजगर बेटा

मां की कोख से तू ने जन्म लिया,
माता–पिता पाल पोषकर बड़ा किया।

पढ़ा लिखा तुझे मुझे संस्कार दिए,
तूने संस्कारों को तार–तार किया।

मानव जीवन मिला है दुर्लभ,
जी भर कर तूने तिरस्कार किया।

संगत तुझको बुरी मिली है,
माता–पिता का जीना दुश्वार किया।

दारू पीता रात दिन नींद भर सोता,
करता माता–पिता जीना हराम किया।

गफलत में जीवन बिता रहा,
कर्मों ने तुझे अजगर बेटा नाम दिया।

खा–खा कर तू तोंद बुलाते,
अजगर बेटा तूने जीवन बर्बाद किया।

माता–पिता खून के आंसू बहा रहे,
निर्मल रोरो जीवन अपना बिता दिया।

उमरिया बीती जाए

उमरिया बीती जाए श्याम ना आये,
रह रहे जिया घबराए श्याम ना आये।

पुलिन में यमुना के आकर बैठूं,
रटूं राधे अब लो श्याम ना आए।

हर कुंजन टेर लगाऊं डाल डाल ढूंढो,
यमुना देख रही व्यथित श्याम ना आए।

देवकी नंदन यशोदा के हैं लल्ला,
मैं गोपी आस लगायी श्याम ना आये।

ग्वालों के संग नित गौयें चरायें,
माखनचोर अब तक श्याम ना आये।

पूनम रात जी मधुबन में रास रचाए,
गोपी वेश शिवजी आए श्याम ना आए।

रुकती रुकती सांसें चल रही,
देख राह निर्मल तड़पे अब लो श्याम ना आए।

समर्पण

मात पिता के चरणो में शीश झुकाना,
भूलकर भी ना दिल उनका दुखाना।

सूझे न राह जब कोई जब कोई,
गुरुवर को अपने पास है बुलाना।

चोट जो दिल में लगी हो गहरी,
कभी न अपने यार से छुपाना ।

दिल की आरजू सुनाएं जो कोई,
उसकी सुनके कभी हंसी ना उड़ाना।

सच्ची श्रद्धा हो जिसमें तुम्हारी ,
होकर समर्पित उसको रुकाना।

गीत अच्छा लगे जो तुमको,
गाना वही तुम भले हो पुराना।

चीज अपनी अपन को लगे अच्छी ,
दूसरों की चीज से कभी ना लुभाना।

रहम दिल अगर बड़ा है तुम्हारा,
दुखियों को देख के उन्हें ना रुलाना।

होकर समर्पित जो पास आए तुम्हारे,
निर्मल दीन जान उसे कभी ना झुकाना।

निर्मला जैन 'निम्मी'

परिचय

नाम : निर्मला जैन 'निम्मी'

शिक्षा : स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र)

अभिरुचित : हँसना-हँसाना, घूमना, गाने सुनना, मन के भावों को कागज पर उतारना।

उदास शाम नहीं हुआ करती

उदास तो दिल होता है .....
और, दिल की उदासी
वक्त पर इल्ज़ाम लगा देती है.....

झील के इस शांत किनारे पर
पूरे सुकून से अपनी शाम को जीती हूँ.....

डूबते सूरज को देख उदास नहीं होती

कल जो होगा एक बार फिर
उस नए सवेरे का बेकरारी से इंतजार करती हूँ

जीवन का हर पल एक सा नहीं होता
पर में हर पल का मुस्कुरा कर स्वागत करती हूँ

सुख दुख का साथी वक्त को नहीं...
खुद को ही बनाती हूँ

कुदरत की सुंदरता से
खुद का ख़ाली पन भरती हूँ।

मेरी राहों में अंधियारा होता ही नहीं.....

उम्मीद की रौशनी जाती ही नहीं ....!
ये बात अलग है की,
कभी कभी डगमगा जाती है उम्मीद मेरी
पर कभी वो लौ बुझती नहीं .....
बहुत हिम्मत और धैर्य से थामा है,
दामन मैने उम्मीद का
इस दामन को मैं छूटने देती नहीं,

इस उम्मीद के दिए की लौ
कम होने जो लगती है....
अपनी हिम्मत के तेल से
फिर भर लेती हूँ,
और ये लौ फिर ऊंची हो
जिंदगी की पटरी पर मेरी सांसों
की गाड़ी को ले चलती है
पर उम्मीद का दामन मैं छोड़ती नहीं।

मेरी हर रात की सुबह तुम से

मेरी हर सुबह की सांझ तुम से
मेरे दिल की हर धड़कन तुम से
मेरी सांसों की हर लय तुम से
जो तुम हो मेरी जिंदगी में
तो मेरी जिंदगी की शान तुम से
चूम लेते हो जब जब तुम
पेशानी मेरी तब तब मानो
दुल्हन सी सजी पाती हूं खुद को
तुम्हारे उस मीठे चुम्बन से
तुम्हारा हर स्पर्श कमजोरी है मेरी
मेरी जिंदगी की हर खुशी है तुमसे।

मुझे प्यार है तुमसे

मुझे प्यार है तुमसे हाँ, मुझे है प्यार तुमसे
नहीं तुम साथ मेरे बहुत दूर हो मुझसे
पर कोई दिन ऐसा नहीं
जब तुम्हारा इंतजार नहीं करती

बहुत मुश्किल था जीना तुम्हारे बिन
पर तुम्हारी यादों के सहारे भी जी सकती
तुम्हारी जुदाई का दर्द किसी से नहीं कहती
पर दिल के इस मीठे से दर्द से इंकार नहीं करती

तुम नहीं हो इसके गवाह है आंसू मेरे
पर अब मैं खुद को बेकरार नहीं करती
सिर्फ़ यही आरजू है जिंदगी से
कि, प्यार मैने किया सिर्फ तुमसे

अब ये खता बार बार नहीं कर सकती।

श्रीमती नितिन शर्मा 'नीति'

परिचय

नाम : श्रीमती नितिन शर्मा 'नीति'
जन्म दिनांक : 5/8/1971
पति : श्री संजय शर्मा (सिस्टम मैनेजर म.प्र. वित्त विभाग)
शिक्षा : एम. ए. (इतिहास) जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
उपलब्धि : राष्ट्रपति राज्यपाल पुरस्कार (स्काउट गाइड), जिला स्तरीय गायन प्रतियोगिता एवं युवा उत्सव संभाग स्तरीय गायन प्रतियोगिता में पुरस्कृत, साहित्य मंच द्वारा नई ईयर गोल्डन अवार्ड 2023, अनेक प्रशस्ति पत्र प्राप्त।
प्रकाशन : अनेक सांझा संकलनों में रचनाएँ व आलेख प्रकाशित
मोबाइल नंबर : 7747006576, 9300792056
ई–मेल : abyanshsharma79gmail.com
पता : स्थानीय – ग्वालियर(म.प्र.), **स्थाई –** भोपाल (म.प्र.), **पत्राचार पता :** G5 कमिश्नर कौलोनी, मेला ग्राउंड के पीछे मुरैना (म.प्र.)

उड़ती हूं जैसे कोई पतंग

सब छोड़ दिया पीछे मैंने।
मोह छोड़ दिया सबसे मैंने।
अब सपने लेकर सप्त रंग।
अब भर कर शक्ति अंग अंग।
उठ खड़ी हुई अब मैं वीरांग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

मेला छोड़ा पीछे मैंने।
रेला पीछे छोड़ा मैंने।
ना साथ चाहिए अब कोई।
देखेगा हिम्मत हर कोई।
हो ना चाहे अब कोई संग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

डरते डरते सब उम्र गई।
कब सुबह गई कब शाम गई।
जो सहमी सहमी रहती थी।
बस हवा के संग में बहती थी।
ना जाने कब वह हुई मलंग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

डरते डरते जीवन बीता।
सब बूंद बूंद करके रीता।
बारिश की बूंदों सी बरसूं।
ना प्यासी बदरी सी तरसूं।
बहती नदिया सी बनू तरंग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

मैं फना हो गई रिश्तों पर।
अब सांस ले रही किस्तों पर।
यूं बेमतलब का जीवन क्या।
जीवन को बेमन जीना क्या।
भर्ती हूं मन में नई उमंग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

मैं इंद्रधनुष के रंगों से।
तस्वीर बनाऊंगी ऐसे।
रंग भर दूंगी सारे मन के।
तकदीर सवारूंगी ऐसे।
अब नहीं रहेगी ये बेरंग।
उड़ती हूं जैसे कोई पतंग।।

देख अश्क दर्पण में अपना

देख अश्क दर्पण में अपना।
मुझसे पूछे मेरा साया।
क्या तूने खोया है जग में।
क्या तूने आखिर है पाया।
देख अश्क दर्पण में अपना।
मुझसे पूछे मेरा साया।।

कितने पाए रिश्ते नाते ।
कितने तूने यहां निभाए।
क्या उनने अपनाया तुझको।
या फिर तू बस है भरमाया।।
देख अश्क दर्पण में अपना।
मुझसे पूछे मेरा साया।।

क्या तू मृगतृष्णा में जीता।
होश में आ क्यूं साखी पीता।
बांध हाथ दुनिया में आया।
जाएगा तब होगा रीता।
देख अश्क दर्पण मैं अपना।
मुझसे पूछे मेरा साया।।

लेना देना यही तलक बस।
सारी माया खुली पलक बस।
झूठी सब माया काया है।
क्या तुझको कुछ समझ है आया।
देख अश्क दर्पण में अपना।
मुझसे पूछे मेरा साया।।

पंख खोलकर

पंख खोलकर जी लेता तब।
अमृत सुख वो पी लेता तब।।

अकल गई थी क्यों तब मारी।
उम्र गुजर गई यूं ही सारी।।

अरमानों को जंग लगी अब।
सौ बीमारी अंग लगी अब।।

अब क्यूं सर को पकड़े रोये।
वही काटता जो है बोये।।

क्यूं बैठा पछतावे है अब।
क्या होता पछताने से अब।।

इसीलिए कोई कहे सयाना।
खुशियों का तू ढूंढ बहाना।।

छोटी छोटी खुशियां जीले।
अमृत रस जीवन का पीले।।

बड़ी खुशी जाने कब आए।
उम्र हाय ये बीती जाए।।

जब जब भी यह मौका आए।
जीभर जीवन जीया जाए।।

अंत समय फिर पछताएगा।
समय का पंछी जब उड़ जाएगा।।

निशि शर्मा 'जिज्ञासु'

परिचय

नाम : निशि शर्मा 'जिज्ञासु'

शिक्षा : स्नातकोत्तर- हिंदी, शिक्षा - निष्णात

व्यवसाय : हिंदी अध्यापन (22 वर्ष उपरांत स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति) **संप्रति :** स्वतंत्र लेखन, स्वाध्याय, साहित्यिक मंचों पर संचालन व प्रस्तुति

प्रकाशित पुस्तकें : (साझा संग्रह) 1. कुछ शिक्षक कवि 2. रचनात्मक प्रतिभा शिक्षक 3. शब्द- संयोजन 4. बूँद- बूँद सागर 5. कचंगल में सीपियाँ 6. काव्य- सुरभि 7. किसलय 8. अक्षरम 9. साधना-पथ 10. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौतियाँ **पुरस्कार :** 1. हिंदी ऐच्छिक (कक्षा-12 में सर्वाधिक अंक) हिंदी अकादमी 2. सर्वश्रेष्ठ वक्ता(वाद-विवाद) 3. शिक्षक प्रशस्ति पत्र 4. काव्य- सृजन महिला मंच द्वारा सम्मान 5. भाषा-गौरव शिक्षक सम्मान-दो बार(हिंदुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा) 6. शब्द- शिल्पी सम्मान 7. साहित्य- केतु सम्मान 8. गुरु वंदन प्रशस्ति पत्र 9. मानव संसाधन, भारत सरकार द्वारा प्रशस्ति पत्र (हिंदी अध्यापन व श्रेष्ठ परिणाम हेतु) 10. वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई साहित्य गौरव पुरस्कार 11. शब्द- शिल्पी सम्मान 12. काव्य- सुरभि सम्मान 13. रचनात्मक प्रतिभा शिक्षक सम्मान 14. पुस्तक लोकार्पण व लेखक सम्मान

कृष्ण मय माहिए

कान्हा नटवर नागर
गीता उपदेशक
आनंद दाता सागर।

गोविंद गोपाल सुनो
भटकी गैया मैं
अब मुझको आन चुनो

मुरलिया अधर सोहे
मधुर सुनाई धुन
ब्रज भर का मन मोहे

क्या रूप दिखाते हो
केशव-गिरिधारी
युद्ध का रथ हाँकते हो।

सुन आलौकिक मुरली
सुध-बुध खो गोपी
सम्मोहित पीछे चली।

इलापति परम योगी
साधक हैं तेरे
संन्यासी और भोगी

तेरी करुणा दयानिधि
कम न करना कभी
लेना कभी मेरी सुधि

द्रौपदी बड़ी आहत
आ जाओ केशव
मन हुआ महाभारत।

बसंत पर माहिए

ऋतुराज बसंत आए
कोयल, फूल, ख़ुशी
ये अपने संग लाए।

सरसों के फूल पीले
मुझको बुला कहें
आ खुलकर खिल जी ले।

सुनो मधुमास आया
मन के सुमन खिले
हर जीव है हर्षाया।

मधुमास है जब आता
मानव के मन को
गीतों से भर जाता।

मंजरी भी महक रही
तितली मँडराई
चिड़ियाँ भी चहक रहीं

स्वर-अक्षर-गीत पाये
सरस्वती वर दे
साहित्य-संगीत गायें।

कोयल की कूक सुनी
सुध-बुध खो अपनी
प्रीत दीवानी बनी

माघ माहे मन कहे
फागुन मत जाना
सदा मेरे संग रहे।

वायु बहे त्रिविध भरी
सबको मदमाती
खेती है हरी-भरी।

होली पर रंग खेलें
विदा कर वसंत को
फिर अगले बरस मिलें।

नीला रंग

मैने पूछा पतिदेव से
बात एक बतलाओ तो,
नीला रंग क्यों प्रिय पुरुष को
राज़ मुझे समझाओ तो !

पति ये बोले सुनो गुलाबो
आज तुम्हें बतलाता हूँ,
नीला रंग है भरा गुणों से
इसका राज़ समझाता हूँ!

नीला रंग प्रतीक प्रगति का
उदारता–भलाई का,
नीला अम्बर और समंदर
अनंतता–गहराई का !

नीली स्याही लेख लिखाती
पढ़–लिख जीवन पाठ पढ़ाती,
नीलकमल जब खिले झील में
नयनों को आनंदित करती !

गहरा नीला रंग ज्ञान का
शक्ति और गंभीरता का,
नीलकंठ शिव,कृष्ण तन नीला
परोपकार– मनोहारिता का!

अलसी–ऑर्किड पुष्प हैं नीले
गर्वीले और ऐश भरे,
अंतर्देशीय पत्र थे नीले
अपनेपन के संदेश भरे !

राष्ट्रध्वज के बीच चक्र है
नीला गति को दर्शाता,
नीली जर्सी क्रिकेट टीम की
खेले जब मन हर्षाता !

नीलम मणि सा अद्भुत मैं हूँ
सबको रास न आता हूँ,
अनुकूल यदि मेरे रहो तो
फ़र्श से अर्श पहुँचाता हूँ !

पीढ़ी अंतराल..

भुनभुनाते थे हम कभी,
जब माँ–बाप
कराते थे कर्तव्य–बोध।
रह जाते थे कुढ़कर,
रो देते थे अकेले में,
सुनकर सीख–फटकार।
सोचते थे, कब मिलेगी
मुक्ति इस घुटन से !

बड़े होने पर
जब यथार्थ को झेला,
तो बोध हुआ,
माँ–बाबा की
समझाइश और सिखावट
कड़वी दवा ही थी
और कुछ नहीं!

आज हम हैं ,
मात–पिता की उसी जगह,
समझाते हुए,
कड़वी दवा देते हुए!
बच्चे झुँझलाते हैं,
देते हैं तर्क, वो हैं सही।
आप नहीं समझोगे माँ,
आप नहीं समझोगे पापा!

नहीं समझ पाएँगे वो,
क्रोध में छिपे प्रेम को!
तब तक,
जब तक वे स्वयं
माँ–बाप बनकर
नहीं समझाएँगे
अपने बढ़ते बच्चों को !

हिंदी दिवस

न बिसरी न बिखरी है
अपनी हिंदी तो
दुनिया में निखरी है।

हिंदी का दिवस हर हो
हिंदी बोलें– लिखें
दिल ख़ुश, ऊँचा सर हो।

अब इंडिया मत कहना
हिंदी भाषी सुनो
स्वदेश भारत कहना।

हिंदी में उच्च शिक्षा हो
सरल–सहज रहकर
सभी की परीक्षा हो।

इक दिन अपना होगा
होगी हिंदी विजय
सच ये सपना होगा।

हाइकु

शरद रात
झरते तुहिन कन
कमलों पर !

खिले जलज
नाची जल बूँदें
पत्तों पर !

हुई जो भोर
गूंजी है प्रभाती
पंछी दल की !

बिछी चादर
ओस की धरा पर
श्वेत शीतल !

घुग्घू के बोल
यादों की गली में
ले जाते नित !

श्रीमती नीलू मालपानी

परिचय

नाम : श्रीमती नीलू मालपानी
पिता : डॉक्टर लक्ष्मीनारायण जी
माँ : सूरज देवी राठी, अकोदिया मंडी
पति : श्री हरीश प्रेम नारायण जी मालपानी पिपरिया
शिक्षा : M.A. इकोनॉमिक्स, विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन
कार्य : वर्क फार होम
रुचि : पठन-पाठन कविताएं,लेख लिखना **आदत :** मुस्कराते रहना
पद : संयोजिका प्रादेशिक अध्यात्म एवं संस्कृति समिति माहेश्वरी समाज, कार्य कारिणी सदस्य पिपरिया, सदस्य वैश्य समाज।

प्रार्थना

जब तक धरा पर प्रकृति के ये अनुपम उपहार रहें।
हम सदा मनाते अपने तीज और त्यौहार रहें।

रक्षाबंधन पर बढ़ता हर भाई बहन का प्यार रहे,
सदा तीज पर हर सजनी अपने साजन के द्वार रहे।

कर सोलह सिंगार प्रभु से दुआ ये बारंबार करें,
छोटी सी है अर्ज प्रभु अब इसको स्वीकार करें।

चांद तारों से जब तलक रोशन ये जहां रहे,
मेरी मांग में यह सिंदूर तेरे नाम का लगा रहे।

आसमा के ललाट पर हरदम सूरज चमकता रहे,
मेरे प्रभु वैसे ही बिंदिया से चेहरा मेरा दमकता रहे।

सदा के लिए चमकता है जैसे मेरी नथ का हीरा,
चिरंजीवी हो वैसे ही मेरी ननद का बीरा।

सावन में जिस तरह झूम के आता है बादल लान में,
प्यार के झुमके रहे हमेशा वैसे ही मेरे कान में।

समंदर में लहरें जब तलक शोर मचाती रहें,
मेरे हाथों में ये रंग बिरंगी चूड़ियां खनखनाती रहें।

जब तलक मंदिरों में घण्टी बजती बारंबार रहे,
साजन के आंगन में मेरे पायल की झंकार रहे।

वैष्णव के दिल पर जब तलक श्याम रंग चढ़ता रहे,
मेरी मेहंदी का रंग भी दिन-ब-दिन निखरता रहे।

यह सब तो सिर्फ पिया जी के नाम से पहने हैं,
असलियत में तो मेरे पिया जी मेरे असल गहने हैं।।

नमन मंच

बसंत के शुभ आगमन पर
पवन निर्मल बह रहीं।
अमराई की डाल भी
झुक झुक बलैया ले रही।

हरी चूनर पहने ज्यों
दुल्हन धरा सज रही
पीली सरसों खेत की
हल्दी सी लरज रही।

पत्तों पर ओस की बूंदें
बिखरी ऐसी लग रही।
ज्यों हथेली दुल्हन की
मोतियों से रंग रही।

स्वर्ण रथ आकाश पर
दूल्हे का देखो सज रहा
आगे आगे ढोल नगाड़े
बाजा गाज बज रहा।

गांव की नदी नार सी
गीत शगुन के गा रही।
कोयल चिड़िया मैना आदि
संग राग मिला रही।

बूढ़ा पीपल बूढ़ा बरगद है
वरिष्ठ जन गांव के,
डालियाँ भी उनकी सारी
झुक –झुक जुहार कह रही।

लिए भेंट वृक्षों की सब डालियाँ
फलों से लद रहीं।
रंग– बिरंगे परिधान में
सखियाँ सब लज रही

केसरी लिबास में वृक्ष टेशू
पंडित सा दिख रहा।
गंध प्रीत मादकता मंत्र
हवा में फैला रहा।

अमराई की डाल भी
झुक–झुक बलैया ले रही।
बसंत के शुभ आगमन पर
पवन निर्मल बह रही।।

पंक्षी की दास्तां

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
स्वच्छंद विचरण करते हैं।
फिर क्यों मानव कैद कर
आजादी हमारी हरते हैं।

अपना दाना हम खुद चुनते
नीड़ भी स्वयं बनाते हैं।
क्यों कर पकड़ रखा
हम किस काम में आते हैं।

गाना सुनना गर पसंद तुम्हें
उपवन में घूमा करते।
प्यार से दाना देकर तुम
पंखों को चूमा करते ।

काम कर हैवानों का
इंसान ये कहलाते हैं।
खुद गुलाम रह सकते नहीं
हमें गुलाम बनाते हैं।

सुनकर मैना हुई उदास,
तोते से फिर यों बोली।
प्रभु ने दी सुंदरता जो,
अभिशाप बनी मीठी बोली
अभिशाप बनी मीठी बोली।।

पहला प्रेम पत्र

ए कलम रुक,
अदब का मक़ाम आया है।
तेरी नौक पर मेरे
महबूब का नाम आया है।

प्रिये
दिल लिखूँ, दिलरुबा
या मेहरबां लिख दूं ,
मेरे महबूब, पिया मेरे,
तमाम उम्र तेरे नाम लिख दूं।

चांद सितारे तुझसे रोशन
तू ही माथे की बिंदिया,
पास नहीं जो पिया तुम
मेरे उड़ गई रातों की निंदिया।

पहली बार मिले पिया,
लगता जन्म–जन्म की दासी हूं।
तू है भाग्य विधाता मेरा,
फिर तेरे दर्शन के अभिलाषी हूं।

फागुन की मस्त बयार
पिया मन में हुंक उठाती है।
न धुंआ न ज्वाला दिखती पर
विरह देह जलाती है।

कब आओगे मुझको लेने,
यह विरहन राह तकती है,
बिन पानी मछली हो जैसे
दिन रात यहां तड़पती है।

ख़त मत लिखना खुद ही
आना तेरी राह निहारेंगे।
जीवनसाथी, पलकों से तेरे
जीवन के काँटे सभी बुहारेंगे।

तेरी हूं तेरी ही रहूंगी
तेरे दर्शन की प्यासी मैं।
बिन चाहे खत बंद करती,
तेरे चरणों की दासी मैं।

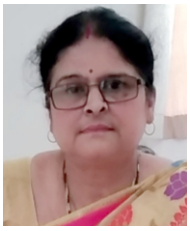

श्रीमती पदमा तिवारी

परिचय

नाम : श्रीमती पदमा तिवारी **पति :** श्री ओजेंद्र तिवारी
जन्मतिथि : 23/5/1963
शिक्षा : एम. ए., एल. एल. बी., आयुर्वेद रत्न
संप्रति : शासकीय सेवा
पता : नरसिंह मंदिर परिसर फुटेरा वार्ड नंबर 4 दमोह 470661
मोबाइल : 9630856049, 9131470428
ई-मेल : Padma tiwari 9630 gmail.com **प्रकाशन :** तुम्हें क्या लिखूं काव्य संकलन, मां की पाती-अप्रकाशित, कल मिलना मुझसे प्रिय अप्रकाशित **सम्मान :** अग्निशिखा साहित्य मंच मुंबई गौरव सम्मान। साहित्योदय गिरिडीह देवधर से प्रेम रत्न सम्मान, ब्रिटिश वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रशस्ति पत्र, साहित्य कुंज औरंगाबाद से प्रेमचंद सम्मान, सारा सच समाचार पत्र दिल्ली से अनेकों सम्मान, अनेक पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में तथा साझा संकलनों में रचनाएं प्रकाशित विश्व लेखिका मंच भोपाल से कल्पना चावला स्मृति में मध्य प्रदेश महिला रत्न सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय अखिल भारतीय प्रसंग जबलपुर द्वारा काव्य अलंकरण सम्मान, साहित्य झारखंड द्वारा साहित्य गौरव सम्मान। व्रजवानी जनसेवा समिति भरतपुर द्वारा साहित्य विभूषण सम्मान, पुलिस अधीक्षक दमोह द्वारा प्रशस्ति पत्र। अपर कलेक्टर दमोह द्वारा प्रशस्ति पत्र। अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच भोपाल से महादेवी वर्मा मेमोरियल अवॉर्ड, अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच इकाई इंदौर द्वारा एक्सीलेंट लेडी अवार्ड, 14 सितंबर हिंदी दिवस पर राष्ट्रभाषा रत्न सम्मान एवं लगभग 300 सम्मान पत्र, मगसम संस्था द्वारा मातोश्री सम्मान। कादंबरी संस्था जबलपुर द्वारा मिथिलेश कुमारी सम्मान, साहित्योदय द्वारा अयोध्या से जन रामायण कार्यक्रम में काव्य रत्न सम्मान,फलक फाउंडेशन द्वारा इलाहाबाद में काव्य गौरव सम्मान।

देश भक्ति गीत

हिंदी देश का प्यारा झंडा, ऊंचा सदा रहेगा
आंधी आये या तूफान, पर झंडा नहीं झुकेगा।।
मातृभूमि की सेवा हेतु, बढ़ते रहे सदा कदम
वंदे मातरम वंदे मातरम

केसरिया बल का प्रतीक, सच्चाई पर रहेगा
हरा रंग धरा का पावन, कदम नहीं रुकेगा।।
मातृभूमि की सेवा हेतु, बढ़ते रहे सदा कदम
वंदे मातरम वंदे मातरम

श्वेत रंग शांति प्रदाता, अमन चैन रहेगा
पर्वत पर लहराए झंडा, सिंधु पर फहरेगा।।
मातृभूमि की सेवा हेतु, बढ़ते रहे सदा कदम
वंदे मातरम वंदे मातरम

प्यारा प्यारा तिरंगा हमारा, देख-देख मन हरषेगा
बलि बलि जाऊं राष्ट्र धर्म पर, सदा लहू बहेगा।।
मातृभूमि की सेवा हेतु, बढ़ते रहे सदा कदम।।
वंदे मातरम वंदे मातरम।।

विदाई

बड़े प्यार से पाला पोसा
अंगना में बहार आई ।
बीता बचपन हुई सयानी।
कर रहे आज विदाई।।

मंडप सजाया डोली सजाई
गूंज रही है शहनाई।
शैशव से यौवन की सारी बातें
दिल में है गुंजाई।।

पड़ी भांवर, किया कन्यादान
बेटी हो गई पराई।
याद आ रही बचपन की यादें
नैनन अश्रुधार बहाई।।

भैया से बिछड़ गई बहना
सजाकर डोली में बिठलाई।
सिसकियां ले ले मैया रोवे
कैसे करूं तेरी विदाई।।

रो रो कहता भाई छोटा
किससे करूंगा मैं लड़ाई।
मत जाने दो दीदी को
क्यों कर रहे हो विदाई।।

पापा की वो राजदुलारी
आंखें उनकी भर आईं।
चली आज बिटिया ससुराल
जान गए सच्चाई।।

सौंप दई समधी को बेटी
पकड़ाया हाथ जमाई।
अपने जिगर के टुकड़े की
कर दी आज विदाई।।

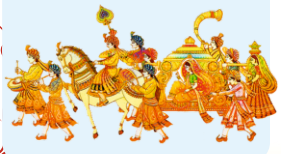

माता पिता

क्या लिखूं कैसे लिखूं
जिसका कोई बखान नहीं।
अकथनीय है इनकी महिमा
कहने जैसी बात नहीं।।

मां तो ममता की मूरत है
पिता होते अथाह समुद्र।
नहीं कोई इनसे बढ़कर
यही है हमारे रब।।

दुख न देना इनको कभी
आंसू इनके होते अनमोल।
कह दें कुछ तो चुप रहना
नहीं बोलना कड़वे बोल।।

मात पिता का प्यार ही है
जो बिन मांगे मिलता है।
हर वक्त देते दुआएं
जिससे जीवन संवरता है।।

मात–पिता वह वट वृक्ष हैं
छांव जिनकी होती शीतल।
गुस्से में भी होता प्यार
आज हो या कल।।

पिता वह रोशनी है
जिससे जीवन जगमगाता है।
रहती सांसे इनकी जब तक
हर बुराइयों से बचाता है।।

जिम्मेदारी अपनी समझो
रखो प्रेम से इनका ध्यान।।
मुखिया हैं परिवार के
करो सभी इनका सम्मान।।

दादा दादी

घर में दादा दादी
अच्छे शिक्षक होते हैं।
सिखाते जीवन के अनुभव,
नजर हम पर रखते हैं।।

पोता पोती के जन्मते ही
अति उत्साहित होते हैं।
समझ कर अपनी जिम्मेदारी
देखभाल वो करते हैं।।

शैशव में गोदी में लेकर
देख देख खुश होते हैं।
प्यार दुलार देते हमको
हमें सुला कर सोते हैं।।

अच्छी सीख हमें सिखलाते,
आदर्शों का बोध कराते हैं।
सुधारते हमारी गलतियां
ज्ञान का मोती है फैलाते।।

सुबह जल्दी हमें उठाते,
दौड़ दौड़ कर हमें घुमाते।
बैठाकर कंधे पर अपने,
प्रेम मगन वह हो जाते।।

हाथ पकड़ स्कूल को जाते ,
ड्रेस में हम लगते प्यारे।
नहीं भूलते डिठोना लगाना
याद रखते काम सारे।।

हर आदत पर नजर रखते ,
नैतिकता से सिखलाते हैं।
विद्वानों की कर प्रशंसा
किस्से उनके बतलाते हैं।।

हमें अपने पास सुला कर
नई कहानी रोज सुनाते।
उनके बिन लगता घर सूना
हम हैं उनकी आंखों के तारे।।

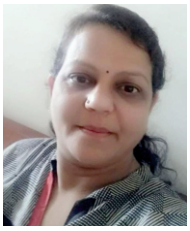

श्रीमती पंकज धींग

परिचय

नाम : श्रीमती पंकज धींग **पति :** श्री संजय धींग
शिक्षा : वाणिज्य स्नातक **सम्पर्क :** मो.9425923878
अभिरुचि : लेखन, गायन
पता : 32 जैन कॉलोनी,शिवाजी मार्ग, स्कूल मैदान के सामने नीमच (मध्य प्रदेश) 458441

एक कविता

अंतस की पीड़ा से उपजी है एक कविता,
सुनहरे सपनों से सजी है एक कविता,
नयनों के नीर से सींची है एक कविता,
कलम की लकीर से खींची है एक कविता,
विरह की वेदना का वर्णन है एक कविता,
चाँद, चकोर की चाहत का चित्रण है एक कविता,
मन की मंजुल माला से महकी है एक कविता,
चित्त की चंचलता से चहकी है एक कविता,
हृदय की हरीतिमा से हरखी है एक कविता,
प्रेम की पावनता से परखी है एक कविता,
दुनियादारी का दर्पण है एक कविता,
तुष्टि का तर्पण है एक कविता,
कर्तव्यों के कार्य क्षेत्र से कमाई है एक कविता,
सत्य के स्वर्णाभूषण में समाई है एक कविता,
संस्कारों के सिंदूर से लिखी है एक कविता,
मेहनत की मेहंदी से सीखी है एक कविता,
युगों–युगों से युग बंधन में बंधी है एक कविता,
सुख, स्नेह, समर्पण की संधि है एक कविता,
कटुता, कल्मष पर कठोर प्रहार है एक कविता,
मैत्री से महकता मालतीहार है एक कविता।

बचपन में

एक लड़की बूढ़ी हो गई बचपन में,
पन्द्रह से सीधे पहुंची पचपन में,

मां बीमार खाट पर,
कद उसका हाथ भर,
पाठशाला भी जाती है,
भोजन भी बनाती है,
एक हाथ कलम दूजे बेलन,
रखती ग़ज़ब संतुलन,
वह पक्की हो गई कचपन में,
एक लड़की बूढ़ी हो गई बचपन में,

उम्मीदें चाँद पर टांग दी,
नींदों ने आँखे लांग दी,
यहीं तक बस्ते का साथ,
पीले हो गए उसके हाथ,
खुद को घड़ घड़ी बनी,
साड़ी पहनकर बड़ी बनी,
दूल्हा खड़ा था अचकन में,
लड़की बूढ़ी हो गई बचपन में।

विदाई

हरी चूड़ियों पे फिदा हो गई
सफ़र ए इश्क की इब्तिदा हो गई,

कन्या का ही दान क्यों पापा
बात बड़ी पेचीदा हो गई

सिसकियां सुन पलटी वो
थोड़ी सी संजीदा हो गई

सिर पर हाथ पीठ पर थाप
सुहाग चुनरी ओढ़ विदा हो गई।

स्त्री

जिम्मेदारियों में हसरतें मिट गई,
आज़ाद ख़्याल वह स्त्री ख़ुद में ही सिमट गई,

खुदगर्ज़ दुनिया हर पल उसे छलती गई,
रोशनी की ख़ातिर वह जलती गई,

रिश्तों की ख़ातिर मोम सी पिघलती गई,
लरजते हाथों से अपनापन टटोलती रही,

हर ज़ख्म को मुस्कुराहट से सिलती रही,
पीड़ा परेशानियों को आँसुओं से निगलती रही,

रूढ़िवादिता की दीवारों में घुट घुट कर मर गई,
चुपके से कोरे काग़ज़ पे दास्तान–ए–ज़िंदगी लिख गई।

नव विहान

झिलमिल उर में ज्योत जला उजला हो जहाँ,
अंधियारा कब तक रुके होगा नव विहान।

कर्म पथ पर चलना है रुकना नहीं तुझे,
आलस तज कर बढ़ना है झुकना नहीं तुझे,
पाँव मोड़ कर बैठ गया टूटेंगे अरमान,
झिलमिल उर में ज्योत जला उजला हो जहाँ,
अंधियारा कब तक रुके हो गाना नव विहान।।

बादल दुःख के देख कहीं पीछे मत हट जाना,
सुख बरसेगा एक दिन मन होगा मस्ताना,
मंजिल मिलने तक ना आये तुझे थकान
झिलमिल उर में ज्योत जला उजला हो जहाँ,
अंधियारा कब तक रुके होगा नव विहान।

मारो गाँव

मारो छोटो सो गाँव
जटे नीम पीपल री छाँव
घणो चोखो लागे...

मिट्टी रा मकान
कवेलू री छान
गोबर लिपियों आँगण
डेगची में रांधण
चोखो घणो लागे....

चूल्हा पर माटी रो तवो
परिंडा पर मटको नवो
माटी रा बरतन
कड़ाईला री खुरचन
घणो चोखो लागे...

उना उना सोगरा
ग्वारफली रो साग
काचरिया की चटनी
सागे खाटी छाछ
घणो चोखो लागे....

ढाँकियोडो माथो
बाजू में चूड़लो
छींट वालों घागरो
शीश पर बोरलो
घणो चोखो लागे....

जेब वाली बंडी अर धोती
सिर पर पागड़ी
बालू रेत में निपजे
मतीरा ने काकड़ी
घणो चोखो लागे....

दादी पोवे रोटी
दादा छमके भाजी
दोनों सागे बैठर
जीमें राजीराजी
घणो चोखो लागे.....

श्रीमती प्रभा जैन

परिचय

नाम : श्रीमती प्रभा जैन **पति का नाम :** श्री राजेन्द्र जैन
जन्मतिथि : 29 जनवरी **वैवाहिक तिथि:** 5 मई 1973
शिक्षा : B.Sc, B.A. - हिंदी साहित्य विषय
प्रकाशित कृतियाँ : क्षेत्रीय भाषा निमाड़ी साँझा संकलन में रचना प्रस्तुति, हिंदी साँझा संकलन में रचना प्रस्तुति तथा बाल पुस्तक गुल्लक। **अन्य प्रवृत्तियाँ :** अनेक संस्था मैग्जीन में रचनाएँ प्रकाशित तथा विभिन्न ग्रुपों में रचना प्रस्तुति, वीडियो, ऑडियो प्रस्तुति अनेक लोक नृत्य कलाकारी प्रस्तुति, व्यंजन प्रतियोगिता में पुरस्कृत।
पुरस्कार : भिन्न भिन्न संस्था में प्रस्तुति पर सर्टिफिकेट सम्मान, लायंस इंटरनेशनल, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद में अनेकों सेवाओं हेतु 500 से अधिक अनेकों सम्मान। मल्टिपल स्टेट प्रेसिडेंट, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद वाईस प्रेसिडेंट, ऑल इंडिया लिनेस मेम्बर, कोर कमेटी केन्द्रिय महिला परिषद् महामंत्री। अथाई समन्वय समूह की कोर ग्रुप सदस्या **पता :** 118 , स्कीम न.74/BG विजयनगर, इंदौर (M.P.)
मोबाइल नं. : 8989504551 **ई-मेल :** lns.prabhaj@gmail.com

तीर्थराज सम्मेदशिखर

पवित्र स्थली हमारा सम्मेदशिखर,
सब तीर्थों में ऊंचा महा शिखर,
अनादिनिधन है ये मोक्ष स्थली,
तीर्थंकरों को भाव से हम पूजते ।..
णमोकार मंत्र सहारा है ।

साधु संत साधना में ब्रह्मलीन,
अहिंसा धर्म धारक त्यागी प्रवीण,
जीओ और जीने दो महा सन्देश,
सम्मेदशिखरजी से सदा गूंजते ।...
ये आस्था प्रतीक हमारा है।

हम जैनियों के बसते भगवान,
बरसे कण कण में दिव्य ज्ञान,
सुख शांति आनन्द का दाता,
ऊंचे ऊंचे शिखर वंदना कर पाते ।..
ये तीर्थ हमेशा से हमारा है।

नहीं कोई बदल सकता वहां की आकृति को,
है सदा सुख शांति देने वाली तीर्थ प्रकृति वो,
जैनियों की आस्था का आनादिनिधन तीरथ,
अनैतिक हाथ कभी नहीं छू सकते।...
ये वादा हमारा है।

पवित्र भूमि सम्मेद शिखरजी रहेगी सदा,
नहीं बनाओ पर्यटन स्थल इसे कदा,
जैन संस्कार संस्कृति की है पवित्र मिसाल,
हमें देना ही होगा हक में जैन आम्नाय सम्मान।...
ये पवित्र तीर्थ धाम हमारा है।

संयुक्त परिवार

हिल मिल के,
संयुक्त परिवार,
खुशी बहार।

दादा दादी हो,
मिलते आशीर्वाद,
प्यार दुलार।

भाई बहना,
माँ बाबा चाचा चाची,
ये परिवार।

प्रेम दौलत,
एक दूजे से फैले,
जीवन सार।

एक डाल पे,
पंछी रहते सारे,
भिन्न विचार।

भाग्य से मिले,
सुख दुःख के साथी,
बांटते प्यार।

स्नेह धागों से,
रिश्ते हो मजबूत,
गले का हार।

अहसास हो,
एकदूजे को देख,
दिल से प्यार।

मेल जोल से,
संयुक्त परिवार,
खुशी बहार।

बड़े भाग्य से,
मिलता परिवार,
प्रेम आधार।

शाकाहार

स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर, बने रहो शाकाहारी
प्राकृतिक रूप से हर तत्व मिलते,अन्न फल और हरी तरकारी।

जीते जी जिंदा जीवों की हत्या, पाप लगेगा अति भारी,
पालन होगा अहिंसा धर्म जीवन में, गर होगे तुम शाकाहारी।

एक सेवफल हर दिन खाओ, कहते हैं सब डॉक्टर,
स्वस्थ रहो सदा तुम भाई, कभी न आए बीमारी ।

मानवीयता धर्म धार तू, सब जीव में सम होती जान,
अन्य जीवों को मारकर, सुनता नहीं क्या चीत्कार?

जीओ और जीनेदो भावना से, जीवन में बनो शाकाहारी,
सब जीवों को स्वयं की जान, लगती है अति प्यारी।

करुणा भाव हो सब जीवों पर, प्रभु महावीर ने बतलाया,
सब जीवों पर मैत्री भाव हो, अहिंसामय जीवन सिखलाया।

जिनवाणी माता

मैं जिनवाणी मात को, पढ़ूं लिखूं दिन रैन।
महा भाग्य से पाये, दिव्यध्वनि के बैन।।

कैवल्य ज्ञान से मिली, अरिहंतो मुख ख़िरी।
जिनध्वनि सुन हर्षित हो, अज्ञानता दुःख हरी।।

पूजन के फल से प्रभु, पूज्य कैसे बनूँ।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्र,सत्य विधि को जानूं।।

मनमन्दिर में स्थापना, शुद्ध भाव से बसो।
अंतरंग निर्मल रखूं, राग द्वेष रहित सो।।

नमूँ सरस्वती माता, सद्बुद्धि दो हरदम।
आजीवन धारण रहे, आत्मोन्नति सरगम।।

प्रमोद दाहिया

परिचय

नाम : प्रमोद दाहिया **पद :** शिक्षक
पिता का नाम : स्व. श्री दुर्गा प्रसाद दाहिया
माता का नाम : सावित्री बाई दाहिया
जन्मतिथि : जून 1969
संपर्क सूत्र : 9753360165, 7509535092
पंता : ग्राम–प्रतापपुर, पो.–कूम्ही (खुर्द), तह.–सिहोरा, जि.–जबलपुर (म.प्र.)

जय हिन्द–जय हिन्दी

करूँ नमन भारत माता को, जय–जय हिंदुस्तान लिखूँ।
हिन्दी मातृभाषा हमारी, प्यारा गौरव गान लिखूँ।।
भारत भाल पे शोभित है जो, हिन्दी पर अभिमान है।
संस्कारों को संस्कार दे, हिन्दी भाषा महान है।।
बनकर के जन–जन की भाषा, तू ही राह दिखाती है।
अविष्कार जो करना चाहे,वैज्ञानिक बन सिखाती है।।
बनकर रण चण्डी शब्दों से, जब भी तू हुंकार भरे।
दुश्मन तो थर–थर काँपे तब, फिर कैसे वो वार करे।।
इसीलिए तो देश विदेश में, हिन्दी का सम्मान लिखूँ।
हिन्दी मातृभाषा हमारी, प्यारा गौरव गान लिखूँ।।
तेरे अक्षर मात्रा मिलकर , सुन्दर शब्द बनाते हैं।
शब्द–शब्द से हार बनाकर, तुझको ही पहनाते हैं।।
दोहा, कुंडलियाँ, चौपाई, अलंकार रस छंद सजे।
सा रे गा मा पा धा नि तब, सप्त स्वरों में मृदंग बजे।।
नारद की वीणा के स्वर भी, सुन्दर साज सजाती है।
हे हिन्दी! सम्मान में तेरे, शारद वीणा बजाती है।।
तेरी गाथा जो गाते हैं , साहित्यिक पहचान लिखूँ।
हिन्दी मातृभाषा हमारी, प्यारा गौरव गान लिखूँ।।
भारत भूमि महान हमारी, इसमें मथुरा काशी है।
हमें गर्व भारतवासी हैं, हम तो हिन्दी भाषी हैं।।
इतने ग्रंथ लिखे हैं तुझ पर, तू बताती सबका अर्थ।
कवियों से कविता लिखवा के,बतलाती स्वयं भावार्थ।।
मुहावरा लोकोक्ति बनकर, तू अमृत सी घोलती है।
तू प्रमोद की रचना बनकर, मीठे बोल बोलती है।।
सूरदास और तुलसीदास, प्रेमचंद रसखान लिखूँ।
हिन्दी मातृभाषा हमारी, प्यारा गौरव गान लिखूँ।।

नीलगगन

नीलगगन का मस्त पवन का, प्यारा लगे नजारा।
धवल रोशनी बिखर रही है, रोशन है जग सारा।।

झूम–झूमकर उड़ते बादल, देख सभी हर्षाते।
मंद पवन के चलें झकोरे, जीव– जंतु मुस्काते।।
छटा सुहानी देख–देख के, नृत्य करे जग सारा।
धवल रोशनी.....।।

चहक–चहक के उड़ते पंछी, सबसे यही बताते।
जो साहस से आगे बढ़ते, मंजिल वो ही पाते।।
तुम हो बहुत विशाल तुम्हारा, मिलता नहीं किनारा।
धवल रोशनी.....।।

जन–जन की मनुहार यही है, चाँद आज घर आए।
दुख की काली रात मिटाकर, खुशी हमें दे जाए।।
शीतल छाया देने वाले, देते हो उजियारा।
धवल रोशनी.....।।

हे पूनम के चाँद हमारी, सुख से झोली भरना।
हर मानव हो सुखी निरोगी,जगमग ये जग करना।।
अम्बर छोड़ अवनि में आकर, दूर करो अँधियारा।
धवल रोशनी बिखर रही है, रोशन है जग सारा।।

गुरुवर आप कृपा बरसा दो

गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।
मैं मूरख अज्ञानी भगवन,
कैसे तुम्हें मनाऊँ।।

आप हो भगवन अंतरयामी,
महिमा कोई न जाने।
मानव रूप ले जग में आए,
जो जाने सो माने।।
हे जगदीश्वर जगत पिता मैं,
भवसागर तर जाऊँ।
गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।।

हे गुरुवर! मोह माया भी,
आप को छू नहीं पाए।
तन से भी जिसे मोह रहा न,
महावीर कहलाए।।
करुणानिधि प्रभु ज्ञान के सागर,
कैसे में गुण गाऊँ।
गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।।

नंगे पग विचरण करते,
देखें न पाँव के छाले।
ठंडी–गरमी एक बराबर,
सब कुछ सहने वाले।।
कृपा करो हे दयालु भगवन,
चरणों की रज पाऊँ।
गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।।

स्वस्थ जीवन का आधार– शाकाहार

दीन–हीन बन जीव कह रहे, क्यों करते नर अत्याचार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

हम भी हैं ईश्वर की रचना, हम सब में भी होती जान।
माँ ने हमको जन्म दिया है, संकट में रख अपने प्राण।।
खुद भूखी रह हमें पालती,कभी न समझी हमको भार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

दिया अन्न–जल धरती माँ ने, फल से लदी हुई हैं डाल।
दूध दिया माँ के आँचल में,क्यों पशुओं की नोंचे खाल।।
हमको अपना दुश्मन समझे, देता है पलभर में मार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

भूख मिटाने नहीं स्वाद को, करता जीवों का संहार।
कैसे भक्षण करता होगा, बहती देख खून की धार।।
बनके निर्दयी क्रूर कसाई, चलवाते हम पर तलवार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

वन में रहते साधु संत मुनि,फल खा करते हरि गुण गान।
स्वस्थ निरोगी काया होती, रहते सदा सुखी गुणवान।।
ज्ञानी महापुरुष सब कहते, करो प्राणियों से भी प्यार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

मानव तन अनमोल मिला है,मन में अपने करो विचार।
सत्य–अहिंसा परमधर्म है, शाकाहार जीवन आधार।।
चलो बताएँ प्रमोद सबको, दया धर्म ही जीवन सार।
मूक प्राणियों को न सताओ, अपनाओ तुम शाकाहार।।

अहंकार और क्रोध को त्यागे,
शांति राह अपनाए।
दीन दुखी के दुख हरने को,
मानव रूप में आए।।
दयानिधे अपनालो भगवन,
शरण छोड़ कहाँ जाऊँ।
गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।।

सत्य अहिंसा के हो पुजारी,
आप दिगम्बर भेष लिये।
मूक प्राणियों को न सताओ,
सबको ये उपदेश दिये।।
कहाँ प्रमोद है इतनी ताकत,
आपके गुण गा पाऊँ।
गुरुवर आप कृपा बरसादो,
जीवन सफल बनाऊँ।।

प्रीति धीरज जैन
'धीरप्रीत'

परिचय

नाम : प्रीति धीरज जैन 'धीरप्रीत', इंदौर मध्यप्रदेश
जन्मस्थान : वणी(नागपुर) महाराष्ट्र
स्थायी पता : इंदौर,मध्यप्रदेश
शिक्षा : बी.ए. इंग्लिश लिटरेचर
सम्प्रति : कवयित्री, लेखिका, सोशल वर्कर, कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समूहों में सदस्यता। मेरी रचनाएं सतत अखबारों में छपती हैं

ससुराल में याद आती है मेरे गांव की

चाहत थी मन में अलबेली,जब थी मैं गोरी गांव की।
ससुराल हो शहर में मेरा, चाह मन से ये गहराव की।

दुल्हन बन रखा पहला कदम,मन इक अजीब उलझन।
साझेपन की ना रीत यहां, ना रिश्तों के गठीले बंधन।
प्रेम और अपनापन बसता गांव में,ना ज़िंदगी तनाव की।
ससुराल में याद आती है बहुत,मुझे मेरे गांव की।

खेत–खलिहान,दरिया किनारा,गांव का मौसम बड़ा प्यारा।
खिली खिली ताज़ी हवा, वातानुकूलक का ना कोई सहारा।
अंगना में कुएं का शीतल पानी,ठंडक अमवा के छांव की।
ससुराल में याद आती है बहुत,मुझे मेरे गांव की।

दिलों की नज़दीकियां, रिश्तो की गहराइयां नहीं शहर में।
गांववालों और पड़ोसियों से भी मिले प्यार,गांव की डगर में।
सुख और दुख में शामिल, राहत आत्मीय भाव के गहराव की।
ससुराल में याद आती है बहुत,मुझे मेरे गांव की।

मां बाबा की कौतुहल भरी निगाहें,हर कार्य पर वाहवाही
महफिलों सा सजता परिवार,घर में मेहमानों की आवाजाही।
ताना–बाना रिश्तों का गहरा,सामंजस्य दिलों में, बातें ठहराव की।
ससुराल में याद आती है बहुत,मुझे मेरे गांव की।

शहर की दौड़ भाग में गुम हुआ अस्तित्व,चैन और आराम।
महफिलों के बीच भी मन की तनहाइयां करे परेशान।
गांव के परिप्रेक्ष्य में इतनी प्रीतमिले,अंतर्मन में ना जगह घाव की।
ससुराल में याद आती है बहुत,मुझे मेरे गांव की।

अलाव में हथेलियां जला बैठे

अंधेरी दिल के गिरहों में,
मोहब्बत का चराग जला बैठे।
सर्द तेरी रुसवा मोहब्बत,
हम अलाव में हथेलिया जला बैठे।

सुनता है सौदाई कोई मेरी
एक–एक सांस बजा कर।
अपनी ही सांसों का कैदी
उस अजनबी को बना बैठे।

अपनी गर्म कोमल उंगलियों की
पोर से सहलाते थे जुल्फें।
आज खुद नर्म ऊंगलियों से
वो गेसूओं को सजा बैठे।

पैरहन–ए–खाक के सिवा
अब मिरे बदन पर कुछ नहीं।
दर्द–ए–रुसवाई में जलती हुई
मोहब्बत की राख रमा बैठे।

लगाव ना हो एऐ खुदा
किसी से ज़ीस्त की मानिंद।
अलाव भी ना था करीब,
और हम दिल जला बैठे।

धुआं धुआं रात, प्रीतका
अलाव जलता रहा दिल में।
इर्द–गिर्द यारों का कारवां,
इश्क–ए–दास्तां हम सुना बैठे।

जीवन एक संघर्ष

अनमोल जिंदगी नहीं है सिर्फ जीतने का नाम।
हार कर ही सीखेगा जीवन,हार भी मूल्यवान।
ठान ले मन में अगर तू, ज़मीं पर भी अर्श है।
ज़िंदगी पग पग मुश्किल,हर पल जीवन एक संघर्ष है।

रीत इस जहां की कुछ खोकर है पाना।
संघर्ष से बन जाएगा यह जीवन उजला सोना।
संग संग होगी मंज़िलें, होगा साथ यह ज़माना।
दृढ़ निश्चय को मन में कर गठित,नई राह बनाना।

जीवन की धूरी पर है सुख और दुख का मेला।
अनजानी राह पथरीली और तू राही अकेला।
न थक कर, न हार कर यूं बैठ, पार कर सफर कटीला।
संघर्ष कर,इस जहां मे साया बनकर पीछे चलेगा तेरे काफिला।

संघर्ष से ही यह जीवन नौका पार कर पायेगा।
जो डर गया तैरने से,बीच मंझधार डूब जाएगा।
साहिल पर आकर भी कश्तियां डूब जाती हैं अक्सर।
तेरा हौसला ही, लहरों का निमंत्रण समंदर पार करायेगा।

जीवन एक संघर्ष, खुशियों के फूल भी और दुख के कांटे।
मधुबन में महकता हुआ गुलाब भी,है संग संग कांटे।
जीवन की वेदी पर शोर महफिलों का भी,और है सन्नाटे।
गम में ना टूट कर बिखरो तुम,जीवन ये खुशियां भी बांटे।

तूफान में जलता हुआ, तुम बनो मिट्टी का दिया।
हवा से संघर्ष करके जलता,खुद को रौशन किया।
सैलाब को भी कर जाए पार,बनो वो दरिया।
ए नादान संघर्ष से जीत जाओगे यह ज़ालिम दुनियाँ।

रश्मि पांडेय 'शुभि'

परिचय

नाम : रश्मि पांडेय 'शुभि' **जन्म तिथि :** 07/12/1969
जन्म स्थान : जबलपुर (मध्यप्रदेश)
शिक्षा : स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र) **सम्प्रति :** गृहिणी
लेखन : कविताएँ, कहानी, लघु कथाएँ इत्यादि।
रुचि : पठन पाठन,काव्य लेखन, कहानी, लघु कथाएं आदि
प्रकाशित कृतियाँ : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के अलावा कई साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित। **उपलब्धियाँ :** 1000 से ज्यादा सम्मान पत्र प्राप्त। **विशेष :** प्रेरणा हिंदी प्रचार सभा की कार्यकारिणी अध्यक्ष, अनुज्ञा सत्य नारी शक्ति सम्मान की प्रांत उपाध्यक्ष। **दूरभाष :** 6261870554 **पता :** रश्मि पांडेय शुभि ध.प. श्री अरूण कुमार पाण्डेय, बैंक ऑफ बड़ौदा, डिंडोरी, मध्यप्रदेश-481880

सब अपने हैं, मै ही दुश्मन

मैं मैं कर सबको किया पराया,
अंत समय कुछ हाथ न आया।
अब भी चेत, होश में आ जा,
क्यों अपना ही दुश्मन बना हुआ।

सब अपने हैं, मैं ही दुश्मन,
अहंकार से भरा हुआ।

जग सपना है,खोल नैन अब अपने,
अहंकार में चूर रहा खो देगा सब सपने।
जब तक मैं रहती अन्तःकरण में,
स्वयं का दुश्मन बना हुआ।

सब अपने हैं, मैं ही दुश्मन
अहंकार से भरा हुआ।

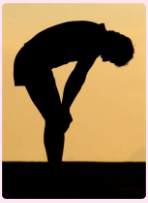

राग द्वेष तज, बैर भाव भूल जा,
इनसे जीवन नरक बन जाएगा।
इस काया से सत्कर्म ही करना,
क्यों मोह माया में फंसा हुआ।

सब अपने हैं, मैं ही दुश्मन,
अहंकार से भरा हुआ।

तेरा मन ही तुझको दिखलाए,
क्या अच्छा और क्या है बुरा।
शुद्ध बुद्ध आत्मा की बात मान,
क्यों दलदल में तू फंसा हुआ।

सब अपने हैं, मैं ही दुश्मन,
अहंकार से भरा हुआ।

प्रेम दीन के दुख का मरहम

प्रेम दीन के दुख का मरहम,
प्रेम सुखों की अभिलाषा है।
प्रेम है जग में सबसे पावन,
प्रेम की न कोई परिभाषा है।

प्रेम है जग में सबसे न्यारा,
प्रेमी सहज सरल बन जाता है।
प्रेम जिसे मिल जाय जगत में,
जग सारा उसे मिल जाता है।

प्रेम बदलता तन मन दोनों,
जीवन को पल में महकाता है।
प्रेम की बूंदे जिस तन पड़ जाय,
निर्लिप्त वही हो जाता है।

प्रेम बिना है ये जग सूना,
सकल भाव खो जाता है।
प्रेम का गहना जिसने पहना,
वही रूप खिल जाता है।

प्रेम हुआ जब निराकार से,
आत्म आंनद आ जाता है।
नही रहती सुध बुध अपनी,
परमानन्द में समा जाता है।

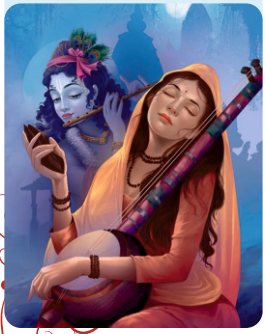

ऐसा हो संकल्प हमारा

सत्य पथ पर चलते रहें,
परोपकार हो ध्येय हमारा।
झूठ कपट से दूर रहें हम,
विलासिता न जीवन हमारा।

ऐसा हो संकल्प हमारा।

देश प्रेम से दिल हो भरा,
मां भारती पे तन मन वारा।
जान की बाजी लगा दें हम,
न्योछावर ये तन मन सारा।

ऐसा हो संकल्प हमारा।

देश हमारा वैभवशाली,
ऋषियों की हैं तपोस्थली।
संस्कृति को संजोकर रखें,
नशे से दूर रहे जग सारा।

ऐसा हो संकल्प हमारा।

गऊ माता का हो संरक्षण,
बेजुबानों को दाना पानी।
संसाधनों का न हो अपव्यय,
हरा भरा हो देश हमारा।

ऐसा हो संकल्प हमारा।

नारी पूजनीय जिस धरा पर,
अपनों से ही छली जाती है।
किसी कन्या का न हो शोषण,
मन से मिट जाए अंधियारा।

ऐसा हो संकल्प हमारा।

परिवर्तन

जब से सृष्टि का सृजन हुआ,
होता आया है परिवर्तन।
सतयुग से कलयुग तक देखो,
हर युग में है परिवर्तन।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है,
पल पल होता परिवर्तन।
प्रकृति से जुड़ कर हमें सीखना,
सुखद अहसास है परिवर्तन।

ऋतुयें भी परिवर्तित होती,
अपनी शोख अदाओं से।
कभी बसंती,कभी तपन और,
कभी बर्फीली हवाओं से।

पेड़ों और लताओं में भी,
हर पल होता परिवर्तन।
प्रकृति के कण कण में देखो,
हर पल होता परिवर्तन।

भौतिक सुख सुविधाओं में भी,
पल पल होता है परिवर्तन।
उसी अनुरूप हमें ढल जाना,
समय की मांग है परिवर्तन।

जड़ और चेतन दोनों में भी,
हर पल होता परिवर्तन।
सकारात्मक दृष्टि से देखो,
मन को भाता परिवर्तन।

परिवर्तन संसार का नियम है,
हम सब उसे स्वीकार करें।
जन्म से लेकर मृत्यु होने तक,
हर क्षण होता परिवर्तन।

राशि गुप्ता 'नित्य नित्या'

परिचय

नाम : राशि गुप्ता
उपनाम : नित्य नित्या
शिक्षा : एमसीए, एमए अर्थशास्त्र, बी. एड
पता : 97 विवेकानंदपुरी, सराय रोहिल्ला, दिल्ली 110007
रुचि : समाज सेवा, लेख, अध्यात्म

मैं कौन हूँ?

मैं बस स्त्री हूँ बस नारी
जो आपके लिए कभी बेटी
कभी बहन कभी पत्नी
कभी मां तो कभी प्रियतमा
कभी सखी न जाने
कितनी रिश्तों में बनी हूं मैं
क्या मेरे सम्मान के लिए
सिर्फ एक दिन काफी है
मुझे सम्मान सिर्फ
एक दिन के लिए ही चाहिए
काश यह सम्मान तुम शब्दों में
चंद किताबों की बजाय
मुझे मेरे अस्तित्व में दे पाते
काश यह सम्मान
मैं तुम्हारी नजरों में देख पाती
क्या एक नारी
सम्मान के अधिकारी सिर्फ तभी हैं
जब वह कोई जग में
ऊंचा काम करें या
मैं मंदिर में एक मूर्ति बनी हूं
क्या हर नारी का अस्तित्व
सम्मान के लिए ऐसे ही
तरसता रहेगा नारी सच में
सम्मान की अधिकारी है
और सम्मान से कहीं अधिक
प्रेम के लिए अभिलाषी होती है
त्याग समर्पण उसकी
प्रवृत्ति होता है और

प्रेम उसका अधिकार
मैं वहीं नारी हूं वही स्त्री हूं
जो युगों–युगों से सीता
और द्रौपदी बनकर
परीक्षाएं देती आ रही हूं
मैंने अपना स्वभाव कभी
नहीं छोड़ा और आज भी
मैं सतयुग से लेकर कलयुग
तक समाज के उसी
दौराहे पर खड़ी हूं
आज ढेरों मैसेजेस है
ढेरों शुभकामनाएं हैं
कल यह समाप्त हो जाएंगी
कल फिर मैं वही सड़कों पर
रोती बिलखती चीखती
नजर आऊंगी
अखबारों की हेडलाइंस में होगी
ऐसा अस्तित्व नहीं चाहिए मुझे
जहां मुझे सम्मान सिर्फ
एक दिन के लिए मिले
कुछ क्षणों के लिए
कुछ घंटों के लिए
नहीं चाहिए ऐसा सम्मान
मुझे नहीं चाहिए मुझे भी
वही सम्मान चाहिए जिसकी
मैं अधिकारी हूं
मुझे भी वही प्रेम चाहिए
जो मैं तुम्हें देती हूं।

उठो धरा श्रृंगार करो

ऋतुराज अब आए हैं
मोर, पपीहा ,कोयलिया ने
गीत बसंती गाए हैं।
शरद ऋतु की हुई विदाई
गर्मी में पांव फैलाए हैं
उठो धरा श्रृंगार करो
ऋतुराज अब आए हैं।

आमों की डाली महकाई
देख देख सरसों लहराई
बागों में हुआ प्राण प्रसार
उठो धरा श्रृंगार करो
ऋतुराज अब आए हैं
कोख तुम्हारी भरने को ये
कितनी फसलें लाए हैं ।

शरद ऋतु की चादर ओढ़े
तुम अलसाई मुरझाई थी
देख ऋतु बासंती को फिर
हर्षित और मुस्काई थी
उठो धरा श्रृंगार करो
ऋतुराज अब आए हैं
ज्ञान की देवी के स्वागत को
कर भरकर कलियां लाए हैं।

नमन तुम्हें हे मात शारदे
ज्ञान की नदियां भर डालो
तिमिर हमारे मन के हर के
जड़ को चेतन कर डालो
उठो धरा श्रृंगार करो
ऋतुराज अब आए हैं
मातृ धरा के संरक्षण को
हम सबका अर्पण लाए हैं।

अधूरी मुलाकात

आ बैठ कभी मेरे
ए वक्त मेरे साथ
कि वक़्त बीत गया
तेरे साथ वक़्त बिताएं
जिंदगी की जद्दोजहद में
ना जाने कितने ही
तूने मुझे सबक सिखाए
संभाला जब जब कभी
मैं हद से ऊंचा उड़ा
उछाला ऊपर जब–जब
मैं कभी नीचे गिरा
क्यूं आता नहीं कभी
तू लौटकर लेकर
सभी वो शामें मखमली
बेफिक्र वो रातें नन्हीं
चलती थी थामें उंगली
कि आज जिम्मेदारी की
चादर फैलती जा रही है
और मासूम सी हंसी
सिकुड़ कराह रही है
हमसफर है तू मेरी
हर याद का
हर हकीकत का मेरी
और मेरे हर ख्वाब का
मिलूंगी तुझसे शायद
और फिर कभी कि आज
जिंदगी में मेरी मुझे
इतनी ही इजाजत दी।

आओ बनाएं मिलकर हम सब

हास्य भरी एक मधुशाला
जीवन से हर जाम भरा हो
ठाहके भरा हो हर प्याला
हंसकर खिलता यहां बचपन
उम्र को लगा कर के ताला
तोड़ उदासी के बंधन
हंसती खिलती ये मधुशाला
नशा यहां हंसी की मस्ती
और हंस गुलों की है हाला
सुख दुख से भरा भले जीवन
मुस्कुराहट भरी रहे मधुशाला
आओ बनाएं मिलकर हम सब
हास्य भरी यह मधुशाला

सपनों का घरौंदा

घर बनाया प्यारा सा
सारे जग से न्यारा सा
रेत की कच्ची दीवारें
रिश्तों की पक्की मीनारें
मैंने चौक में धूप फैलाई है
आंगन में तुलसी लगाई है
मैं रोज सवेरे उठती हूं
नित तेरा वंदन करती हूं
कभी शाम ढले तू आ जाना
नैनन की प्यास बुझा जाना
दूर समंदर दिखता है
जो कभी शांत
कभी बिखरा है
लहर तेज जब आती है
याद छोड़ सब ले जाती है
फिर साहस कर जुट जाती हूं
नित नया घरौंदा बनाती हूं।

राजेन्द्र जैन रतन

परिचय

नाम : राजेन्द्र जैन रतन
पिता का नाम : स्व. हुकुमचन्द जैन
शिक्षा : पत्रकारिता पत्रोपाधि
जन्म तिथि : 19/09/1939
मोबाइल : 94258 66865
सम्प्रति : स्वतंत्र अभिव्यक्ति, अनेक संस्थाओं सें सम्बद्धता
प्रकाशित कृतियाँ : समय की पुकार, मन रतन है (काव्य संग्रह) **प्रारब्धि :** अंतर राष्ट्रीय विश्व युवक शिविर, यूगोस्लाविया द्वारा सिल्वर रजत पदक यूगोस्लाविया 1962, भारत सरकार म.प्र. शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रजत पदक 1971
सम्पर्क : 656/14 रवि विला अनुश्री ऐपार्टमेट गोलबाजार, जबलपुर (म.प्र.)

हरित क्रांति लाकर दिखलाओ

मांसाहार का त्याग करो अब,
शाकाहार को तुम अषपनाओ।

अब अपना कर्तव्य निवाहो,
आज करो संकल्प रे मानव।

संकल्पों को तुम दोहराओ,
शाकाहारी बनो मनुष्य तुम।

वृक्षों सम सम्बल बनाओ,
वृक्ष सदा ही छाया देते।

फल और फूल सदा ही देते,
मिट जाने पर काया देते।

संतो सम परिभाषा इनकी,
महल अटारी घर दरवाजे।

वृक्षों की ही देन समझ लो,
बदले में हम क्या हैं देते ?

मानव हो तुम यही समझ लो,
अरे रतन अब जतन करो तुम।

हरित क्रांति ला कर दिखलाओ,
हरित क्रांति ला कर दिखलाओ।

ताज से भी अच्छा महल बनाता

तेरा चेहरा देखकर ना मालूम कैसे याद आ गया ?
देखने पर आज तुझे अपने दिल से कैसे न याद करूं ?

याद है वह समय जब अश्क बह रहे थे तेरे चेहरे पर,
तब गगन भी सहलाने आया था फिर कैसे ना याद करूं?

क्या समय था जब मैंने तेरे लिए संजोया था सपना
किंतु मुकद्दर ने साथ नहीं दिया फिर कैसे न याद करूं?

तुझे देखकर याद आ रहा अपने उन अरमान को अब
सात समुन्दर भी कुछ नहीं समझा फिर कैसे न याद करूं?

तेरी चाहत के लिए गगन से तारा लाकर दिखलाता
ऐसी तेरी उस चाहत के लिए मैं फिर कैसे ना याद करुं।

तेरे खातिर पत्थर से भी पानी निकालकर बतलाता
तेरे लिए मेरा सब कुछ अर्पण था तो फिर कैसे ना याद करूं?

तेरी याद में ताज से भी अच्छा महल आसमां पर बनाता।
लहराता हुआ इश्क का पैगाम देता फिर कैसे न याद करूं?

क्या ताजमहल क्या रंग महल या लाल किला भी कुछ ना था
जमी ही नही आसमा भी महक जाता फिर कैसे न याद करू?

चला जा रहा था 'रतन' इस राह मे देख तुझे याद आ गया
फिर न जाने मेरी दिलरुबा फिर कैसे न तुझ को याद करू।

मत अरे किसी के प्राण हरो

जो हमको देते छांव,
साथ ही फल भी देते
फिर भी रहते मौन,
नहीं कुछ हमसे कहते।

बेरहमी से उन्हें काटकर
स्वयं धरा को बंजर करते।
मानव होते हुए समझ ना पाए
अब तक तरु की भाषा।

पशु भी रहते मौन
नहीं तुमसे कुछ कहते।
जागो अरे, स्वयं अब मानव,
पढ़ो स्वयं संतों की भाषा

गुरु ग्रंथ पढ़ो उसको समझो जानो
क्या उसमे कहा गुरूनानक ने?
मत करो मांस का भक्षण तुम
मानव हो मानवता समझो।

उसको समझो
क्या कहा उसमें प्रभु ईसा ने?
जीने का, हक है सबको
मत मारो ,किसी भी प्राणी को

कुरान पढ़ो, उस को समझो।
क्या उसमें लिखा पैगंबर ने?
मत बनो , अरे मांसाहारी
मत,बेगुनाहों का कत्ल करो।

भगवान श्री कृष्ण ने,
गीता में देखो, कैसा संदेश दिया?
जीना है जग के लिए ही जियो
परहित में, अपना हित समझो
शाकाहार करो जीवन में
मत अरे, किसी के प्राण हरो।

आध्यात्मिक गीत...

तरूणाई के प्रति जागृति

गुमराह हो रहे क्यों?
इनको जरा संभालो
गर ये भटक गए,
तो फिर हाथ न आएंगे।

कहां गए आदर्श?
भूल किसकी है,
दी मूल संस्कृति,
छोड स्वयं है।
अपनाई पाश्चात्य सभ्यता,
यही भूल अपनी है।

पूर्व संस्कृत के प्रति हमको,
जागृति लानी होगी
स्वयं इसे अपनाकर,
घर-घर अलख जगानी होगी।

अभी वक्त है चेतो,
वरना पछताओगे।
वक्त हाथ से निकल गया तो,
फिर कुछ ना पाओगे।

कौन चुका पाया है अब तक?
अरे मूल्य माटी का।
जिस मिट्टी में जन्म लिया है,
वही तीर्थ जीवन का।

देश तीर्थ सब व्यथं रे पागल,
केवल भ्रम है मन का।
निर्मल मन हो भाव समर्पण,
सदा लक्ष्य जीवन का।

कयामत के बाद?

जिसको तू समझता है तेरा वो नहीं तेरे
तेरी दौलत का तमाशा है,घेरे हैं सपेरे।

मरने के बाद तेरे, उनकी बजेगी बीन
दौलत तेरी लूटेंगे,सब मिल के सब सपेरे।

होंगे मगर के आंसू ,रोएगा कोई नहीं
पूछेंगे तुझसे चाबी, खजाने की सभी कोई।

सबकी जुबां पर केवल एक प्रश्न होगा
अब होगा कौन वारिस? तेरी जमीन दौलत का।

मरने के बाद तेरे ,खुशियां मनाएंगे सब
जो आज सामने है, गंगा नहाएंगे सब।

अर्थी के साथ जितने, पैदल चले थे मिलकर
जो कार पर चले थे अफसोस करें मिलकर।

लौटेंगे जब दफन कर घर में कहेंगे आकर,
अफसोस तुम न करना, हम हैं तुम्हारे रहवर।

अच्छे थे बहुत अच्छे,अब चल दिए गिला क्या?
अल्लाह उन्हें जन्नत दे करना अरे शिकवा क्या?

अफसोस 'रतन' मत कर, दस्तूर यह दुनिया का
आएगा वो जाएगा, है खेल इस जहां का।

राजेन्द्र गुलेच्छा राज

परिचय

नाम : जैन राजेन्द्र गुलेच्छा राज
पिता: श्री चुन्नीलाल गुलेच्छा
जन्म तिथि एवं स्थान : 22 फरवरी 1962, मैसूर
निवास: बैंगलोर (कर्णाटक) **शिक्षा:** B.com
रुचि: लेख एवं कविता लेखन, संगीत, गायन, भक्ति गीत, मंच संचालन, समाज सेवा, जीव दया, तीर्थ भ्रमण।
सम्पर्क : rcgulechhagmail.com **मो.** 9620212395
पुरस्कार/सम्मान : अथाई श्री, अथाई रत्न, अथाई लाइफ टाइम अचीवमेंट, अथाई गौरव, अथाई शब्द श्री के अलावा अनेक प्रतियोगिताओं में विभिन्न छोटे बड़े पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र। **व्यवसाय:** इमिटेशन ज्वैलरी
प्रकाशन : एकल काव्य संग्रह - सुबह शाम और हम, साझा काव्य संग्रह - अथाई काव्य प्रवाह, अथाई काव्य कोश तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का लगातार प्रकाशन। **साहित्य समूह से जुड़ाव :** अथाई आशा इंटरनेशनल, शब्द साहित्य संस्था, साहित्य संगम, साहित्य मधुशाला, जैन कवि संगम, समन्वय वाणी फ़ाउंडेशन आदि। **पूर्व अध्यक्ष :** समन्वय वाणी फ़ाउंडेशन संचालित अथाई समूह।

युद्ध एक अभिशाप

युद्ध नहीं है किसी भी
विवाद का अंतिम हल,
आओ बैठें, बातें करें
करे शांति की पहल.!

युद्ध की विभीषिका है
मानवता पर अभिशाप,
युद्ध ने दिए हैं हमेशा
गहरे जख्म भरे संताप.!

गोली नहीं देखती कभी
सामने अरि है या निर्दोष,
हरे भरे प्राणों को पल में
यह कर देती हैं ख़ामोश.!

सम्राट अशोक हुए विह्वल
देख लाशों का अम्बार,
एक महत्वाकांक्षा खातिर
किया कितनों का संहार.!

हिरोशिमा नागासाकी को
कौन भला भूल पायेगा,
एक परमाणु बम पल में
लाखों प्राण हर जाएगा.!

विवेक खो देता है जब
एक देश हो जाता है क्रुद्ध,
उदाहरण के लिए देख लो
यूक्रेन पर रूस का युद्ध.!

अहिंसा के अवतार थे
प्रभु महावीर, गौतम बुद्ध,
अंतर्शत्रुओं का नाश कर ही
वो बनें शिवगामी शुद्ध.!

टूटे पत्ते की अभिलाषा

मैं पतझड़ का मारा हूँ..
कल तक झूल रहा था
वृक्ष की ऊँची शाख़ पर
आज जमीं पर बेसहारा हूँ.!

नहीं रहता इस दुनियाँ में
कोई भी सदा हरा भरा
कितना भी ऊँचा उड़ ले
अंत में मिलती धूल धरा
कल तक थी कद्र मेरी
अब न किसी को गवारा हूँ..!

कोपलें थी हरी भरी
संग था पूरा परिवार
पंछी चहकते फुदकते थे
और झूमती थी ठंडी बयार
जुड़ा था वृक्ष की डाली से कभी
अब उड़ता मारा मारा हूँ.!

कोई नहीं है जो आकर
दे दे मुझे दिलासा,
फिर से वृक्ष से जुड़ने की
जो पूरी करे अभिलाषा,
अपनी जड़ों से अलग हुआ तो
मैं हो गया आवारा हूँ..!

मेला

कभी मेले में अकेले हैं,
कभी अकेले में मेला है,
इच्छाओं का दमन है कभी
कहीं उम्मीदों का रेला है!

बाजा बजाते नाच दिखाते
करतब सब अलबेला है,
सूत्रधार की मनमर्ज़ी पर
कठपुतली करे खेला है..!

चौरासी के चक्कर जैसा
झूला अम्बर तक फैला है,
घूमता हर दम ऊपर नीचे
रुकेगा कब ये झमेला है..!

कोई जेब से मालामाल तो
किसी के पास न धेला है,
कोई परिग्रह भरता सारा
तो किसी का खाली थैला है.!

सुख दुख पाप पुण्य सवारी
लेने वाला ठेला है,
चार गति के दर्शन कराता
यह कर्मों का मेला है.!

ख़ामोशी

उनको जरूरत क्या है
बयानबाजी की
जो आँखों आँखों में ही
बात कर लेते हैं..!

खामोशियाँ भी उनकी
देती हैं सदाएँ,
न जाने कैसे ये
करामात कर लेते हैं..!

मुफलिसी में भी
सीखा नहीं है हारना,
तक़दीर से वो
दो दो हाथ कर लेते हैं..!

मंजिल से भटके
किसी मुसाफिर का
वो बनकर रहबर
साथ कर लेते हैं..!

ख्वाबों को मुक्कमल
करने की खातिर
वो आँखों में गुजर
रात कर लेते हैं..!

क्यों करते हो आँख
मूंदकर विश्वास
अपने भी कभी
आघात कर लेते हैं.!

ख़ामोशी से क़त्ल
करते जो जमीर का
जाहिर वो अपनी
जात कर लेते हैं.!

राजेन्द्र मिश्रा

परिचय

नाम : राजेन्द्र मिश्रा **पिता :** स्व.पं गया प्रसाद मिश्रा
शिक्षा : एम. काम, एम. ए. अर्थशास्त्र
जन्म तिथि : 01/11/1951
संप्रति : पूर्व जिला योजना अधिकारी, मध्यप्रदेश शासन
रुचि : सतत् काव्य लेखन, आलेख, कहानी आदि
काव्य कृति : कर्णिका काव्य संग्रह, कृतिका काव्य संग्रह, समसामयिक विषय पर आलेख प्रकाशनाधीन, दो सौ साझा संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित, विभिन्न समाचारपत्र, पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित **अलंकरण एवं सम्मान :** जिला स्तर, प्रदेश स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय सम्मान अलंकरण से विभूषित **पता :** राजेन्द्र मिश्रा जबलपुर, 1141/1, गजानन मंदिर के बाजु में, यादव कालोनी जबलपुर, मध्यप्रदेश - 482002 **मोबाइल :** 9399841732

उत्सव का रंग केतु

उत्सव का यह रंग केतु अब घर घर में लहराया है
आन बान की शान गान को पंचम स्वर में गाया है
उत्सव का यह रंग...

सत्यं शिवं सुंदरम का हम कोटि कोटि आव्हान करें
सत्य धर्म की लिए पताका नवयुग का निर्माण करें
भारत माँ की पावन रज को अपने माथ लगाया है
उत्सव का यह रंग...

अमृतमय पुलकित बेला में आज सुदिन जो आया है
आजादी की जगर जोत ने आसमान को पाया है
तीन रंग से रंगा तिरंगा विश्व फलक पर छाया है
उत्सव का यह रंग...

अरुण पंख से व्दार खोलती द्वारे-द्वारे आती है
प्रकृति पटल पर नव आभा फिर आच्छादित हो जाती है
अरुणाचल की इसी वीथिका में त्यौहार मनाया है
उत्सव का यह रंग...

विश्वासों के अंतरिक्ष में नवल सितारे आए हैं
नीलांचल में चमक रहे जो दिशा दिशा में छाये हैं
अनुपम रूप सलोंने ने उतुंग शिखर को पाया है
उत्सव का यह रंग...

ये देश के वीर हमारे धरती के ध्रुव तारे हैं
रग-रग जिनके राष्ट्र प्रेम है ऐसे वीर जियाले हैं
पुण्य भूमि पर अभ्र कणों ने अमृत घट झलकाया है
उत्सव का यह रंग...

मेरे दीपक

मेरे ये दीपक कितने अनमोल थे
आंखों की भाषा को आंखों से तोलते
मेरे ये दीपक...

प्राची के आंगन में उषा की लाली थी
कनक सी किरणों में कानों की बाली थी
चुपके से दिनकर की पलकों को खोलते
मेरे ये दीपक...

सुरों की सरगम में भैरवी की तान थी
भोर के माथे पर मंजुल मुस्कान थी
पुलकित समीरण में बांसुरी के बोल थे
मेरे ये दीपक...

कुसुम की कलियाँ कितना इठलाती थीं
मधुकर को कितना व्याकुल कर जाती थीं
उपवन में पंछियों के कितने किलोल थे
मेरे ये दीपक...

मौसम के आंगन में सावन के बंधन थे
खुश्बू के हाथों में मेंहदी के कंगन थे
सब मिलकर ऋतुओं की पाजेबें खोलते
मेरे ये दीपक...

रुन-झुनकर आती थीं बरसाती रातें
रातों तक करते थे रातों की बातें
जुगनू की रोशनी में चंदा टटोलते
मेरे ये दीपक...

चोरी से आकर वो निंदियाँ चुराता था
छुप-छुपकर ये चंदा चक्कर लगाता था
हम मन के आंगन में चांदनी घोलते
मेरे ये दीपक...

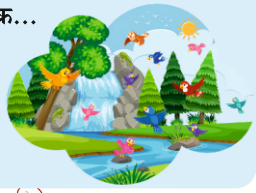

मंद हवायें चलतीं....

मधुरिम मंद हवायें चलतीं मधु सागर के तीरे
लहरों की सुर वेणु गाती तट पर धीरे-धीरे

मन आंगन के स्वर मंदिर में शंखनाद जब होता
पुलकित श्वांस-श्वांस में कोई प्रेम बीज का होता
एक अलौकिक दिव्य जोत की आभा धीर समीरे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं....

चरण चूमती किरणें जब जब भोर भुवन पर छाती
अपनी माता वसुंधरा के माथे तिलक लगाती
आतिथ्य भाव के सुधा कलश को घूंट-घूंट तू पी रे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं....

अंशुमान की छौनी आभा बिखर-बिखर कर छाती
माटी के कण-कण को सुंदर गलमाला पहनाती
पूज्य प्रकृति के आंचल में आ यह जीवन तू जी रे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं....

सुप्रभात सौभाग्य लिए जब मंगल ध्वनियों गातीं
गगन तीर मंजीर गूंजता धरा पूज्य बन जाती
तब ही कृष्ण की मुरल सोहती कालिंदी के तीरे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं...

संध्या की श्यामल सी परियां रुनक-झुनक पग भरतीं
गगन कुंज की दीप शिखायें, आ गुलकारी करतीं
स्नेह समीरण की बांहों में आकर मधु रस पी रे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं...

धवल उजाला लिए निशा जब दीपांजलि सजाती
निरख-निरख कर नयन पलक पर हौले से बस जाती
विकल सखी का मलयांचल भी सरका धीरे-धीरे
मधुरिम मंद हवायें चलतीं...

राम प्रकाश अवस्थी

परिचय

नाम : राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'
पिता का नाम : स्व. श्री धर्मदत्त अवस्थी
माता का नाम : स्व. श्रीमती सरस्वती देवी
जन्मतिथि : 24/10/1971
शिक्षा : स्नातक(अंग्रेजी सहित्य, संस्कृत साहित्य) बी.एड. शिक्षा शास्त्री
प्रकाशित कृतियाँ : साझा काव्य संग्रह, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताएं, विचार **व्यवसाय :** शिक्षक RVRES (अंग्रेजी), (पूर्व आचार्य, बाल निकेतन, जोधपुर-गांधीवादी संस्था) **निवास स्थान :** जोधपुर, राजस्थान **सम्मान :** विभिन्न संस्थाओं द्वारा लेखन क्षेत्र हेतु अनेक सम्मान **रुचि :** अध्ययन, अध्यापन, संगीत सुनना, लेखन। **सम्पर्क सूत्र :** 8233815077

सर्द हवा के झोंके

शीत पवन जब पग धरता है।
घायल तन मन को करता है।।
थर थर हाड़ कांपने लागे।
जल को देखि सभी जन भागे।।

पहनें स्वेटर सब हैं ऊनी।
जैकट से गरमी हो दूनी।।
दादा टोपी मफलर लाए।
नई रजाई रुई भराए।।

गरमी जब भी खूब सताती।
शीतलता यह पवन बढ़ाती।।
पूस माह की काली रातें।
जहां अलाव वहीं हों बातें।।

गाजर घिस हलुआ बनवाओ।
बैठ रजाई सब मिलि खाओ।।
गजक खजूर रेवड़ी खाओ।
इस सरदी बस मौज मनाओ।।

बेरुखी

देखकर अनदेखी करना
नयन से मदहोशी भरना
उलझती लट की जुबानी
ओह कहकर आह करना।

नजर तिरछी भटकती सी
जुबां सहमी सरकती सी
बेरुखी दिखला रहे तुम
प्रीति धारा बहकती सी।

कौनसा है यह इशारा
छूटता दिखता किनारा
गांठ को मत खींच बांधो
सहज कब मिलता सहारा।

पास बैठो मुस्कुराओ
गीत मीठा गुनगुनाओ
बेरुखी मीठा जहर है
देख लो अब मान जाओ।

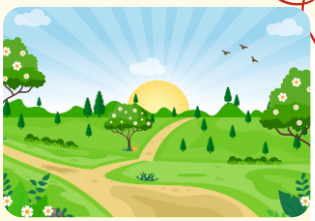

गजल

काफिया–अर
रदीफ–मुबारक हो
मिसरा–मुबारक हो मुबारक हो,नया वत्सर मुबारक हो।

मुबारक हो मुबारक हो,नया वत्सर मुबारक हो।
नवल सूरज उगा सुंदर, नया मंजर मुबारक हो।।

उठा घूंघट ठुमक चलती, निशा अब जा रही देखो,
लरजती फूल की डाली,हवा सर सर मुबारक हो।

चमकती धूप सोने सी, लुभाती शीत में सबको,
सताए कोहरा भी अब,गिरा है घर मुबारक हो।

सभी कलियां सियासत में,मटकती खिल रहीं देखो,
दुकानों में खड़ी वह हैं,चुनेंगी वर मुबारक हो।

चली आंधी खुली खिड़की,हुआ खटका डरा सहमा,
रूह कांपी लगा सदमा, उड़ी चादर मुबारक हो।

किरीट सवैया

पावन धाम घिरा गिरि से,सब संत जहां मिलि ज्ञान बतावत।
मोक्ष मिल्रे सबको जग से,यह राह यहीं मुनि बैठि दिखावत।।
राज सुराज तभी कहते,जब पंथ पुरातन लाज बचावत।
संकट लाकर आज वही, अब बात बिगारत मूढ़ बनावत।।

तीरथ हेतु शहादत का पथ,त्याग शरीर चले मुनि श्री वर।
कान सहेज रहे सब देखत,संकट घोर हुआ अपने घर।।
पावन धाम सुकाम सिखावत,आज अड़े निज मान लिए कर।
शंख लिए सब घोष करें अब,ताज हिले जब नाचत शंकर।।

ऋतु अग्रवाल

परिचय

नाम : ऋतु अग्रवाल **पति :** श्री राजेश अग्रवाल

पता : दुमदुमा, असम

शिक्षा : स्नातक (Education major)

प्रकाशन : बहुत से साहित्य समूह से जुड़ी हूँ, कविताएं, लघुकथा, संस्मरण आदि अखबारों में छपते हैं।

सड़क

खिड़की से देखती हूँ....
जब भी भागती सी सड़क
भाव आते हैं हृदय में....
कितनी मौन सी है सड़क !

सिर्फ बाहरी हलचल ....
कितना शोर सहती सड़क
जब न होता यह शोर....
एक कहानी सी लगती सड़क!

सबको मंजिल दिलाती है ,
गर्व तनिक न करती सड़क ।
सबको एक तराजू में तोलती ,
आँचल में समेटती हो जैसे सड़क!

बारिश की बूंदें जब टपकती ,
सुखद अहसास कराती सड़क ।
लगता ईश्वर नहला रहे हों ...
जैसे धन्यवाद देती हो मौन सड़क !

न जाने कैसे थूकते हैं कुछ लोग ,
कैसे अपमान सह जाती सड़क ,
जिस थाली में खाएँ उसी में छेद ...
कहावत ज़रूर याद करती है सड़क !!!

अपना क्या है ?

जीवन के आपाधापी में...
अपना क्या है ?
काया भी अपनी नहीं ,
फिर अपना क्या है ?

मनुष्य जीवन अनमोल प्यारे ,
मिलता किस्मत वालों को ।
सत्कर्म हेतु भेजा ईश्वर ने जो ,
अपना कह तू कर्म ही को !

एक दिन छोड़ जाना है संसार ,
छोटी सी पहचान भी जरूरी है ।
अच्छे या बुरे , कर्म ही बताएंगे
सत्य से मिलो, ये भी जरूरी है !

अपना क्या है ? जरा जोर डालो
समझो तो बहुत कुछ अपना है ,
जीवन में मधुरता लाना वश में है ,
मानवता धर्म संसार में अपना है!!!

श्रीमद् भगवद् गीता

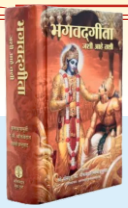

हे! केशव कुरुक्षेत्र बना हुआ है पूरा हिन्दुस्तान,
बनाकर सबको अर्जुन , देदो गीता का ज्ञान ।

मझधार में सबकी नैया , कृष्ण पार लगादो
जीत लें अन्याय से लड़ाई , अस्त्र उठवादो ।

पढ़ी और सुनी श्रीमद् भगवद् गीता अनेकों बार,
नहीं उतरती जीवन में सीख, गये हम हार ।

गीता में लिखा, तुम परमात्मा हम तुममें समाहित
फिर क्यूँ हृदय रहता सदैव विचलित और भयभीत ।

कर्म करो फल की चिंता छोड़ो बस इतना ज्ञान है ,
कर्म कैसा हो इस बात से हम मूर्ख अंजान हैं ।

दिखा दो विराट स्वरूप को , समय आगया है
हर कोई धरा में अर्जुन बना , समक्ष तेरे बैठा है ।

गीता का उपदेश फिर तुझे ही अब देना होगा ,
दुनियाँ को फिर पाप रहित सुंदर बनाना होगा !!!

मेरा कान्हा का सिंहासन

जरा देखो कान्हा बैठा है सिंहासन में
बना दिया मेरे मंदिर को राजमहल सा,
खुश हो जाता है वो माखन मिश्री से
कहीं नहीं देखा होगा राजा नन्हा सा.

सिंहासन में बैठा कान्हा न्यायप्रिय है
रखता है मेरे पूरा परिवार का ख्याल,
न तो कोई इस सिंहासन का दुश्मन
जो आये फरियादी होता मालामाल।

युगों–युगों से कान्हा की कीर्ति फैली है
माथे मोर मुकुट पहने राज करता है,
कोई कहे कृष्ण तो कोई कहे लड्डू
वो पुत्र बन मेरे हृदय में राज करता है।

सिंहासन सोने का हो या चांदी का
आभा तो उसकी महान शासक से,
मेरे कान्हा सा शासक और न दूजा
खुश है मेरे लकड़ी के सिंहासन से!!!

मैं साहित्यकार (व्यंग्य)

न छंद जानूं
न दोहे जानूं
न वर्तनी में दक्षता
न मैं व्याकरण की ज्ञाता
अपने भावों को कागज़ पर उतार....
बन गई मैं साहित्यकार!
मेरे प्यारे मित्रों...
कुछ लोगों ने बिन मांगे यह उपाधि दी
बड़े साहित्यकारों के मध्य...
मुझे जगह दी
अब बताएं मेरा क्या कसूर
न जाने कहां ले आया लिखने का सुरूर
अब बड़े साहित्यकार जब बतलाते हैं
मेरे जैसे गूगल पर अर्थ खोजते हैं
और तो और...
जब वे बड़े साहित्यकार...
जब मेरी जी भरकर तारीफ करते हैं ...
घरवाले मेरे जी भरकर हँसते हैं
भेद की बात बताऊं...
न होता यह मुमकिन
अगर मोबाइल न होता
न मुफ्त की महफ़िल बैठती
न कविता गूंगी होती!!!

डॉ. रीनाअनामिका

परिचय

नाम : डॉ. रीना 'अनामिका'
शिक्षा : एमए , बीएड, डॉ ऑफ फिलॉसफी.. व्यक्तित्व विकासमत्त प्रशिक्षित, कला रसास्वाद, एवं कैरीयर गाइडेंस विषय में प्रशिक्षित **जन्म दिनांक :** 28 जुलाई
कार्य : मुंबई कॉलेज में व्याख्याता, लेखिका
उपलब्धियां : एम.ए. गोल्ड मेडलिस्ट, बी.एड गोल्ड मेडलिस्ट, व्याख्याता, लेखिका, तीन पुस्तकों का प्रकाशन (1) आत्मकथात्मक विधा एक मुसाफिर ऐसा भी बाला साहब ठाकरे (2) काव्य संग्रह नस बंदी से नोट बंदी तक, (3) आत्मकथात्मक विधा विकास पथ, नरेंद्र दामोदर दास मोदी, तथा कई ऑनलाइन पुस्तकों का प्रकाशन तथा अनेक पत्र पत्रिकाओं में काव्य लेखन तथा स्वलिखित कविताओं का गायन या वाचन एवं साहित्य अध्ययन और अध्यापन में विशेष रुचि, आकाशवाणी मुंबई से दर्जनों कविताओं, कहानियों, तथा लेखों का प्रसारण... स्वरचित कविताओं का जन्म मेरी लेखनी से होता है क्योंकि मेरी लेखनी ही मेरा संसार है। 20 से भी अधिक परिचर्चाओं में प्रस्तुतिकरण, कई परिचर्चाओं में अध्यक्षता।
पुरस्कार : साहित्य सुधार, साहित्य रत्नाकर, नारी अस्मिता लेखन पुरस्कार, माझी वसुंधरा मित्र पुरस्कार, अथाई रत्न पुरस्कार, हिंदी गौरव अलंकरण पुरस्कार।
रुचि : स्वलिखित कविताओं का गायन या वाचन एवं साहित्य अध्ययन और अध्यापन में विशेष रुचि...

हिंदी दिवस

बहुत उन्मुक्त मन से सुनाया करतीं थीं कहानी..
जब बिजली गुल हो जाया करती थी..
खूब अच्छी तरह याद है..
आईओसी का कैंपस.. बच्चों की भीड़..
हमें याद है वो गुजरा जमाना
जहाँ शरारत भी कहानी बन जाया करती थी..

विश्व कहानी दिवस

कैसे कहूँ किताबें यूँ ही नहीं बनती..
कैसे कहूँ किताबें यूँ ही नहीं बनती..
रहस्यों का खुलासा करना पड़ता है
शब्द आग उगलते हैं
प्रसंग रोचकता के निर्माणाधीन होते हैं..
भाषा कहानी कहती है
बोली समां बांधती है
तब जाकर कहीं पन्ने पलटते हैं..

स्वाभिमान

जीवन जो मिला है
देश के काम आऊं सदा.
करतीं रहूँ मातृभूमि पर देशहित काम.
गर अरिदल से लड़ना ही पड़े
मेरा स्वाभिमान कभी न झुके

विदा हो सकूँ देश के नाम.
सबसे मन वचन और प्रण चाहिए
'बस इक ही ख्वाहिश है मेरी'
मेरे मरने पर तिरंगा कफन चाहिए

मजदूर

उम्र का कोई भी पडाव़
मेहनतकश के आगे लाचार नहीं होता...
ताकत है ,जब तक धमनियों में
वह मेरुदंड का आधार नहीं होता....
परिश्रम उसकी पूंजी है
आमदनी उसकी खुशियां
चवन्नी–अठन्नी कमा कर भी खुश रखना..
उसके परिवार को आता है...
जब भी वह थका हारा घर आता है..
गलास भर ठंडा पानी पीकर
इत्मीनान की सांस लेकर
आशीर्वाद की नजरों से वह...
अपनी अर्धांगिनी, अपने बच्चों.. और...
अपने पोते पोतियों का मुख देखता है...
स्मार्ट वर्क की परिभाषा नहीं जानता वह
नहीं हार्ड वर्क का व्याख्यान बस भोर होते ही..
उसकी खत्म हो जाती है थकान...
दुनिया चांद तारों को छूती है
वह छूता है परिवार के मर्म को–
आवश्यकताएं पूरी हो सकें...
इसलिए बनता है कभी हरकारा
कभी बनता है विशाल हृदय का पिता
कभी समाधान युक्त व्यक्तित्व
कभी ममतामयी माँ कभी कठोर मुखिया
पेट पालने हेतु... बन जाता है मजदूर
फिर भी वह बसता है...
अपने परिवार के हृदय में
करता है रात दिन काम....
परिश्रम उसकी पूंजी है
फिर उसे कहां मिलता आराम
....????
कम मजदूरी मिले या अधिक
परवाह नहीं रुपयों की उसे..
परिवार के सपनों को संजोता है
उनके सपनों को पूरा करने के लिए
दिन रात करता रहता है काम
वह मजदूर है साहब....
भला कैसे करेगा आराम?

बचपन की यादें

नाव और बचपन का संग बहुत पुराना है
कागज की कश्ती है मन पतवार है
और बचपन दीवाना है याद हो आया वह पल
जब हम बारिश की पानी में भीग भीग नहाते थे
अपने किताब कॉपियों के पन्नों को फाड़– फाड़
चुपके से सुंदर नाव बनाते थे...
अल्हड़ बचपन का जमता
अंजुमन सा फक्त नजारा था...
मौजों के संग मस्ती थी
जुगनुओं का भी किनारा था...
एक जंग शुरू होता नाव बनाने का।
एक जंग शुरू होता दोस्तों को मनाने का...
हर वक्त हम ही ..
क्यों किताब के पन्ने फाड़ें?
शरारतों की टोली में बराबरी का टेक
चुका लें..... दोस्त हैं हम तुम ...
तो कोई एक ही रिश्ता क्यों निभाएं... ?
सब कोई मिलजुलकर
अपना खेल निपटाएं...
बारिश का पानी हो
या पोखर का सुंदर किनारा
नाव के संग, संग बहता
हम सब का प्यार बहुत ही सारा...
जाने कहाँ .....
वो सुंदर बचपन खो गया... ?
दोस्त तो अभी भी हैं और नाव भी हम
अब भी गाहे बगाहे बना लेतें हैं...
पर वैसा सुंदर पल कहाँ से लाएं?
जिससे वो पल सुनहरा बनाएं...
जिसमें हमारा बचपन कैद हो
हमारे अल्हड़पन की कहानी कैद हो
वो सुनहरा निर्दोष एकता कैद हो
वो लम्हा जो हर प्रकार के भेदभाव से परे था...
वैसा ख्वाब कहाँ से लाएं... ?
जहाँ कागज की कश्ती थी
पोखर का किनारा था..
मनोहारी बचपन था दोस्ती ही सहारा था...

रुचि चोविश्या जैन

परिचय

नाम : रुचि चोविश्या जैन **पति :** श्री कृष्णा चोविश्या जैन
शिक्षा : एम.एस.सी. इलेक्ट्रोनिक मीडिया, एम.ए. इंग्लिश (अध्ययनरत)
ई–मेल : ruchichovishya@gmail.com
सम्प्रति : रुचि जी एक सक्रिय समाजसेवी, प्रभावी मीडिया कर्मी एवं प्रेरणादायक एंकर हैं। आप विगत कई वर्षों से विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से समाज की प्रगति और उत्थान में अपना योगदान देती रही हैं। श्री दिगंबर जैन ग्लोबल महासभा में ग्लोबल विमेन फोरम की मिनिस्टर ऑफ फॉरेन अफेयर्स और मध्य प्रदेश प्रांत की फॉरेन प्रभारी भी हैं। आप भारतीय जैन संगठन में मध्यप्रदेश प्रभारी, एवं स्मार्ट गर्ल्स प्रोग्राम की ट्रेनर भी हैं। आप खंडेलवाल दिगंबर जैन महिला संगठन और अथाइ मीडिया समूह में राष्ट्रीय प्रवक्ता के रूप में भी सक्रिय हैं। अमेरिका के पेंसिलवेनिया में भी समाजसेवा में समर्पित भाव से योगदान दे चुकी हैं। विभिन्न अंतर विद्यालयीन प्रतियोगिताओं में अनेक बार जज एवं अथाई आशा समूह में समीक्षक भी रह चुकी हैं। साधना टीवी चैनल के बहुचर्चित कार्यक्रम कवियों की चौपाल के माध्यम से आपने लाखों दर्शकों को पुनः हिंदी भाषा से जोड़ने के कार्य में भी अपना योगदान दिया है। इसके साथ ही कई नए कवियों को भी एक मंच प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है। पारस चैनल पर भी आपने कई बार लाइव प्रोग्राम प्रस्तुत किए हैं। आप बीजेएस में यंग एमबीए हेड आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना, दैनिक भास्कर में स्तंभकार, आकाशवाणी में युववाणी की एंकर एवं डीडी नेशनल में न्यूज़ एंकर रह चुकी है। **सम्मान :** विश्व लेखिका मंच द्वारा नारी गौरव सम्मान एवं विमेन अचीवर्स अवॉर्ड (सरोवर जिनालय हैदराबाद)

संस्कारों का अभाव

हम माता–पिता अक्सर यह कहते सुने जाते हैं कि आजकल हमारे बच्चे हमारी सुनते नहीं।

ना जाने किस तरह की स्कूली शिक्षा इनको मिल रही है इनमें संस्कारों की कमी आ रही है। इनकी भाषा में आदर का भाव ही नहीं है। हमेशा अपने गैजेट्स से चिपके रहते हैं, चाहे खाने का समय हो या सोने का।

अभी पिछले दिनों की बात है, हम एक नए मोहल्ले में शिफ्ट हुए। मोहल्ले की कुछ महिलाओं ने अपनी नई पड़ोसन यानी कि मुझे मिलने के लिए उनके घर बुलाया और मुझे उन महिलाओं और उनके घर के अलग–अलग माहौल को देखने समझने का मौका मिला।

बहुत दिनों से एक महिला मुझे बुला रही थी उनके घर। मैंने उन्हें फोन पर सूचित किया और उनके घर पहुंच गई; तो चाय की गरम प्यालियां तैयार थीं। प्लेटों में नाश्ता भी लगा हुआ था। घर इलेक्ट्रिक धूप से सुवासित था। एक छोटे म्यूजिक सिस्टम पर मंत्र उच्चारण की ध्वनि लगातार सुनाई दे रही थी। उन्होंने अपने बारे में मुझे बताते हुए कहा कि उनके घर के वाइब्स बहुत ही अच्छे और सकारात्मक हैं। अपने बारे में बताते हुए बोलने लगी की विवाह से पहले उन्होंने बड़े–बड़े गायकों के साथ जैसे अनुराधा पौडवाल जी के साथ मंच साझा किया हुआ है। गायन में ही करियर बनाना चाहती थी। लेकिन उनके माता–पिता से कभी सहयोग नहीं मिला। कम उम्र में ही विवाह हो

गया और उनके पति काफी पढ़े लिखे, बड़े व्यापारी और उनसे उम्र में कुछ ज्यादा ही बड़े थे। वह आज भी उन्हें बड़े आदर से शर्मा साहब करके बुलाती हैं।

विवाह के बाद उनके पति ने भी श्रीमति शर्मा के करियर या आगे की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं दिखाई। श्रीमति शर्मा को एक बहुत अच्छा अवसर भी मिला था। मुंबई के स्टूडियो में गीत की रिकॉर्डिंग करने का लेकिन तब तक उनकी गोद में एक नन्हीं सी बिटिया आ चुकी थी। तो श्रीमति शर्मा ने अपने घर और परिवार के प्रति जिम्मेदारियों को देखते हुए। इस अवसर को हाथ से जाने दिया। इस तरह के और भी कई अवसर आए लेकिन वह भी फलीभूत नहीं हुए। कभी घर तो कभी परिवार उनके लिए हमेशा सर्वोपरि रहे।

यह सारे अवसर छूट जाने का उन्हें कोई मलाल नहीं है। उन्होंने बताया की अक्सर वह ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ती रहती हैं। स्मार्ट मोबाइल की जगह पुराना सदा मोबाइल उपयोग करती हैं।

अपनी बेटियों को ऐसे संस्कार दिए कि उनकी बेटियां कभी कोई अनुचित मांग नहीं करती। अपनी मम्मी श्रीमति शर्मा को उन्होंने सदैव पारंपरिक वेशभूषा में ही देखा वह दोनों बेटियां भी कहीं ना कहीं सादगी को ज्यादा पसंद करती हैं। श्रीमती शर्मा ने मुझे यह भी बताया कि किस तरह अपना समय जनसेवा में व्यतीत कर रही हैं। उन्होंने बताया कि किस तरह एक किशोर जो कि तनाव ग्रस्त चल रहा था और उसे लगातार सिगरेट पीने की आदत हो गई थी। उस किशोर को सकारात्मक परामर्श देकर तनाव से बाहर निकाला बल्कि उसकी सिगरेट पीने की आदत भी छुड़वा दी।

अगले ही दिन मुझे एक दूसरी पड़ोसन ने मिलने बुलाया और मोहल्ले से बाहर जाकर कॉफी पीने का प्लान बना। रास्ते में उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनकी बेटी मंदिर नहीं जाना चाहती है और यदि मंदिर जाती भी है तो वह मंदिर के अनुसार परिधान नहीं पहनना चाहती।

बेटी यह कहती है की मम्मी बस आपकी खुशी के लिए चली जाऊंगी मंदिर पर मुझे मंदिर से कोई मतलब नहीं है। ना ही धर्म ग्रंथों से कोई मतलब है। मेरी यह नई मित्र यही सोचकर संतोष पा लेती है कि कम से कम उनकी बेटी को अपनी मम्मी की खुशी की चिंता तो है, और अपनी मम्मी की खुशी के लिए ही सही वह कभी कभार उनके साथ मंदिर 5 मिनट के लिए चली जाती है। मेरी इस नई मित्र ने यह भी बताया कि किस प्रकार जब वह अपनी बेटी की उम्र की थी तो विद्रोही प्रवत्ति की थी। वह खुद भी बहुत वर्षों तक अपने परिवार वालों का विरोध करती रही और हमेशा किस तरह से आधुनिक कहे जाने वाले कपड़े पहन कर ही मंदिर जाती थी।

कहीं ना कहीं हमारे बच्चे वह नहीं करते जो हम उन्हें बोल रहे होते हैं या सिखाना चाह रहे होते हैं बल्कि वह करते हैं जो कि वह अपने आसपास और हमें करता हुआ देख रहे हैं। पर्यवेक्षण अपने आप में ज्यादा बड़ा शिक्षक है।

यदि हम संस्कारों के बीज डालेंगे ही नहीं तो सद्गुणों की फसल भला कैसे उपजेगी।

स्मिता जैन

परिचय

नाम : स्मिता जैन **पिता :** डॉ प्रकाश चंद्र जैन
माता : श्रीमती अंगूरी देवी जैन **पति :** शरद कुमार जैन
जन्म स्थान : जबलपुर **जन्म दिनांक :** 11 अक्टूबर
शिक्षा : एमएससी (जंतु विज्ञान), फैशन डिजाइनिंग डिप्लोमा, पीजीडीसीए, टेली स्पेशल डिप्लोमा
कार्यक्षेत्र : 1. क्रिएटिव किड्स प्ले स्कूल(संचालिका) 2. ब्रिटिश स्कूल ऑफ़ इंग्लिश फॉर स्पोकन इंग्लिश (शिक्षिका 3. इनोवेटिव कंप्यूटर एवं टेली अकैडमी (संचालिका) **साहित्यिक अभिरुचि :** आलेख, कविता, व्यंग **सदस्यता :** हिंदी साहित्य सम्मेलन छतरपुर, साहित्य सृजन सम्मेलन छतरपुर, अवनी सृजन मंच, अथाई आशा इंटरनेशनल मंच, साहित्य मित्र मंडल जबलपुर, मातृभाषा डॉट कॉम **उपलब्धि :** 1. भव्य फाउंडेशन राजस्थान के द्वारा अंतरराष्ट्रीय मैत्री सम्मेलन एवं हिंद शिरोमणि सम्मान 2023 से सम्मानित 2. चरण पादुका सेवा समिति स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी छतरपुर से उत्कृष्ट सेवा सम्मान से सम्मानित 3. अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद से सम्मानित 4. राष्ट्रीय एवं स्थानीय समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशन **सेवा क्षेत्र :** 1. ऑल इंडिया लीनियस उड़ान क्लब छतरपुर सदस्या 2. गांधी आश्रम छतरपुर से संबंद्धता 3. संगम सेवालाल की सदस्या एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं से संबंध **उद्देश्य :** मानव सेवा ही ईश्वर भक्ति है। **पता :** ब्रिटिश स्कूल आफ इंग्लिश, चेतगिरी कॉलोनी छतरपुर (मध्य प्रदेश) **मोबाइल नंबर :** 9893319173 **पिन कोड :** 471001

तुम मेरा मौन हो.....

कहना चाहते हो तुम कई सारे भेद
अपने मन के लेकर मेरा हाथ अपने हाथों में।
सुनाना चाहते हो अपने दिल की हर धड़कन में
मेरे नाम का जिक्र निशब्द होकरआलिंगन कर बांहों में।
बीते हुए पल की सुखद अनुभूतियों के सुखद स्पंदन को
महसूस करना चाहते हो संग मेरे हमराज बनकर।
जीना चाहते हो लम्हा– लम्हा
स्वप्निल से संसार में संग मेरे ,मेरे हमसफ़र बनकर।
पल–पल टकटकी सी लगाकर मेरे इंतजार में
आबाज देते हो कहीं से मुझे , मेरे हमजुबा होकर ।

सुनते रहते हो मेरे मन का अंतर्द्वंद्व
मेरे मौन से संवादों का, मेरे हमबदन होकर।
लेकिन जीवन की कशमकश में भूल जाते हो
कुछ कहना है मुझसे ,और जुदा कर लेते हो
कुछ पल यादों के साए से हमसाया बनाकर।
अब तुम ही बताओ साथी कैसे कह दूं की
मन के अंतर्द्वंद्व से अंतर्मन में उपजी हुई
हर हिलोर का तुम मेरा मौन हो
जबकि मैं तो तुम्हारे मौन में हूं।

क्यों डरते हो गांधी से...

महंगे वस्त्रों से सुसज्जित होकर
ब्रांडेड आइटम को धारण करके
निखारते हो खुद को फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के लिए
जाते हो जब जनसभाओं में
लड़खड़ाती है तुम्हारी जुबान क्यों ?
लाठी ,धोती ,खड़ाऊ पहनने वाले
पैदल–पैदल घूमने वाले ,हाड़ मांस के दुबले से
एक चलते फिरते अमर इंसान से
क्यों डरते हो गांधी से ?
करते हो गायब उसके अस्तित्व को
महंगे महंगे प्रचार के माध्यमों से
गायब क्यों नहीं हो पाता है ?
उसका दृष्टिकोण उसके चश्मे से
क्यों डरते हो गांधी से ?
खड़ी करते जा रहे हो झूठ और भ्रम की कई दीवारें
कौमी एकता से बंधे देश में
खरीदते जा रहे हो अपने दोस्तों से
महंगे–मंहगे घातक हथियारों को
सत्य और अहिंसा के ब्रह्मास्त्र की दुहाई
फिर क्यों देते हो अंतरराष्ट्रीय मंचों पर
फिर क्यों डरते हो गांधी से ?
चाहते थे तुम्हारे पूर्वज हो नरसंहार 1947 में
हिला देना चाहते थे आधारशिला भारत की
दे गया वह आजादी अपने सत्याग्रह से
बिना रक्तपात,बिना खंडहर बनाए
अपने जान से प्यारे देश को
और न्योछावर कर गया अपनी देह को
तुम्हारी कुटिलता की संतुष्टि के लिए
फिर भी इतना क्यों डरते हो गांधी से ?
कहते हो बुजदिल जिसको
उपेक्षा करते हैं जिसके बनाई हुई सहजता की
फिर दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों संग
गलबैया करते फोटो खिंचाने
पवित्र आश्रम में क्यों अपना अस्तित्व ढूंढने जाते हो
सच बतलाना, आखिर इतना क्यों डरते हो बापू से?

हाँ, मैं स्त्री हूँ...

हाँ, मैं स्त्री हूँ
अपने होने के वजूद पर गर्व करती हूं
मुझे नहीं बनना बुद्ध, राम और श्याम
मुझे तो अपने यशोधरा, सीता और राधा
होने पर गर्व है
मैं क्यों छोड़ कर घर अपना
भटकूं सत्य की तलाश में
जंगलों में, वीरानों में
मेरा सत्य तो मेरा परिवार है
जिसकी मैं धुरी हूँ
संस्कारों की, सभ्यताओं की जननी हूं
सत्य तो मेरे संस्कारों में पलता है
मेरी कोख में है नए जीवन का निर्माण
मैं हरती हूँ पीड़ा जग की
अपने वात्सल्य भाव से
सजाती हूँ,सवाँरती हूँ
अनंत सी सृष्टि को
देती हूं रूप अपना
पाती हूं संपूर्णता को।
दुर्गा बनकर नष्ट करती हूं
अपने कुसंस्कारित बच्चों को
मेरे अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाने वालों
नहीं देना अपने होने का प्रमाण मुझे
क्योंकि मैं ही तो धरती हूँ
श्रृंगार हूं इस सृष्टि का।
क्या मेरे अस्तित्व के बिन
पुरुष का कोई अस्तित्व नजर आता है
उसकी संगिनी हूं ,गुलाम नहीं
सामजस्य ही रहता है मेरे संग
जबरदस्ती अधिकार नहीं
कोमल हूँ , कमजोर नहीं
दृढ़ प्रतिज्ञ हूँ ,कठोर नहीं
मैं इंसान हूँ
बोझ नहीं
मत रौंदों मुझे
गर्भ में, दहेज में, बलात्कार में
मै ही रिश्ता हूँ और त्योहार भी

स्वप्निल जैन

परिचय

नाम : युवा कवि स्वप्निल जैन

पिता : स्व. श्री कपूरचंद जैन

माता : श्रीमती सुनीता जैन

व्यवसाय : थोक किराना एवं नारियल व्यवसायी।

पता : छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश) **मोबाइल :** 9907879609

साहित्यिक रुचि : काव्य सृजन, पठन व पाठन, लेख व लघु कथा लेखन आदि।

प्रकाशित साझा संकलन : अथाई काव्यकोष एवं अथाई के स्वर। अनेक पत्र/पत्रिकाओं (दैनिक भास्कर, नव भारत, दी ग्राम टुडे, संस्कार धानी टुडे, माधव एक्सप्रेस आदि) में साथ ही ई - पत्र/पत्रिकाओं में भी समय-समय पर कविता, लेख, लघु कथा आदि का प्रकाशन होता रहता है।

उपलब्धि : राष्ट्रीय सलाहकार सदस्य, प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा(जबलपुर) आदि अनेक राष्ट्रीय, प्रांतीय व स्थानीय साहित्यिक मंचों में पधाधिकारी व सदस्य।

उम्मीद की किरण

जब रातों को जगते जगते अंधकार मय तम होगा
तब जाकर भौर भास्कर ज्योत प्रातः उद्गम होगा।

डगर अडिग ठोस पहाड़ गिरी पर्वत भी गर घिर जाए
चंचल शीतल धारा, निर्मल जल को रोक नहीं पाए

कंटक, कांटे, कंकड़, पत्थर, सा चुभने से बचना होगा
पुष्प, सुमन, कुमुद, कमल की पंखुड़ी सम महकना होगा।

अंधकार मय, घोर तिमिर मय काल रात्रि अंधियारे से बचना होगा
रात चांदनी, मधुर कामिनी, अंधकार में जुगनू बन चमकना होगा।

सूख चुकी डाली, पत्ती, पतझड़ बनकर भी लड़ना होगा
मुरझाई कलियों, डाली, तने, फूल को खिलना होगा।

फिर से शाखों को बढ़ना होगा।
फिर से शाखों को बढ़ना होगा।।

मेरी रचित कविता हो तुम

फुहारें बूंद की बनकर
बरसती मोतियों सी तुम
घनेरी रात में छाई अंधेरी
जुगनू सी चमकती तुम

पतझड़ में सुर्ख डाली पे
खिलती कलम सी तुम
पा गया अब होश में
आ, जानां है अब तुझको

गर तू नही जीवन में,
जीवन बने सुर्ख पर्ण वन
किताबों में महकती
छिड़की हुई दाबाद सी हो तुम

मिलाकर शब्द से शब्दों को,
समेटे सृजित भाव सरिता हो तुम
लिखी गहराई से दिल की,
मेरी रचित कविता हो तुम।

नव रचनाकार

जल सागर को पार लगाने
जल नौका से चलना होगा
आगे बढ़ते जाना है तो
नव चप्पू पतवार बदलना होगा।

खेतों में लहराए फसलें
अब बीजों को उन्नत करना होगा
नई नई फसलों को पाने
अब नव खरपतवार बदलना होगा।

नव युग की नव सृजित कवीता
नव आयामों में गढ़ना होगा
रचित सृजित नव रचना की खातिर
नव कलम की धार बदलना होगा।

नव युग नव घटना नव रूप से
नव रीति नीति से लड़ना होगा
नए विचार से नए आयाम से
नव कलम सृजन सुदृढ़ करना होगा।

उठा कलम नव इतिहासों को
अब गड़ना होगा।
नव रचनाकारों को
अब आगे बढ़ना होगा।

समुद्र तट

एक रोज मैं भी शांति पाना चाहता हूं
समुद्र की लहरों में खो जाना चाहता हूं।

जब सुकून मेरे दिल को आएगा
मन लहरों सा हिलोरे खायेगा

अपनी अल्हड़ मस्त जवानी में
मस्त पवन के झोकों में बह जाना चाहता हूँ।

इस भीड़ भरी दुनिया से दूर कही
समुद्र तट पर कुछ पल अकेले बिताना चाहता हूं।

अपनी खूबसूरत बीती यादों में खो सकूं
और सुंदर सी नई यादें संजोना चाहता हूं।

खुले आसमान को ओढ़ें
जल के बिस्तर पर सोना चाहता हूँ।

इस जद्दोजहद भरी दुनिया से तर
अब कुछ पल मैं भी शीतल होना चाहता हूं।

परिवर्तन / बदलाव

जीवन के हर मोड़ पर बदलाव होना चाहिए
कुछ ज्ञात होना चाहिए , कुछ अज्ञात होना चाहिए।

निरंतर बढ़ते रहना ही बदलाव नहीं।
समय के साथ चलने का अनुमान होना चाहिए।

गिरते रहना उठते रहना जीवन के दौर में
पर खुद में स्वाभिमान होना चाहिए।

निरंतर बढ़ना प्रगति सीढ़ी की
पास स्व–आँकलन दर्पण होना चाहिए।
समय समय पर खुद को तरासें
ऐसा परिवर्तन होना चाहिए।

मंजिल को पा जाने का स्वप्न होना चाहिए
हर दिन एक नया लक्ष्य होना चाहिए।
राह में आएंगी रुकावटें अनेक
हमें हर परिवर्तन के लिए तैयार होना चाहिये।

जीवन के हर मोड़ पर बदलाव होना चाहिए।
कुछ ज्ञात होना चाहिए , कुछ अज्ञात होना चाहिए।

स्वाति जैसलमेरिया

परिचय

नाम : स्वाति जैसलमेरिया
पिता का नाम : स्व. जगदीश प्रसाद पुंगलिया
पति का नाम : नवीन जैसलमेरिया
शिक्षा – एम.ए. (समाजशास्त्र)
साहित्यिक सम्मान : नई दिल्ली से पूर्व सूचनामंत्री द्वारा विद्या रत्न सम्मान, राजकीय सम्मान (जिला कलेक्टर द्वारा), वीर दुर्गादास सम्मान (जोधपुर के महाराजा गजसिंह जी द्वारा), साहित्य संगम संस्थान (रजि.) से रश्मिरथी सम्मान, समन्वय वाणी फाउंडेशन न्यास अथाई समूह द्वारा समन्वय वाणी सम्मान-2022, श्री नाथद्वारा साहित्य मंडल समिति से काव्य कुसुम मानद उपाधि सम्मान।

मित्रता

प्रेम सृष्टि के कण कण में
अनगिनत रूपों में
प्रकट होता है
अनुप्राणित है जड़ चेतन
समूचा जगत इससे
प्रेम रूप है रंग भी है
स्पर्श भी शब्द भी
शब्दों को हम छू नहीं पाते
पर...

हमारे दिल को
हमारी संवेदनाओं को
कर देती है प्रगाढ..
प्रेम की अपार शक्ति
जिसमें कुछ तो है
छुपा- छुपा सा
जो जोड़ता है
आत्मीय शक्ति को
अनजानें रिश्तों में

प्रेम की वृत्ति को
मित्रता..
एक अनुपम अद्भुत श्रृंगार
जो है जीवन का मूल आधार।
यादों की स्मृतियों को
एकदम से
जीवंत ही कर दे
ऐसा अनूठा बंधन प्यार ।।

प्रकृति

जिससे हमें
कुछ मिलता
उसको कुछ
देना ही होता है
ये लेन- देन की रीत पुरानी
मगर निभाना ही होता है
सुनो...

प्रिय
तुम्हारे प्रेम के बदले
मैंने रख दी है
तुम्हारे सिरहाने
बसंत की सुहानी सुबह
जो मदमस्त है बिलकुल
हमारे प्रेम की तरह...

लौट कर आया है
तुम्हारा प्रेम
तुम्हारे ही पास
मेरा कुछ भी नहीं
प्रकृति लौटा देती है
अपना दिया सब कुछ
मित्र अपना प्रेम
संभाल कर रखना

प्रेम में खुद को बिखरते देखा है

प्रिय..
उलझे जो कभी मुझसे तो
आप सुलझा लेना
रिश्ते का एक सिरा
आपके हाथों में भी तो है..

सच कहूं ..
प्रेम में कभी कभी
कुछ एहसास
कितने विचित्र होते हैं
कि हम किसी वक्त तो
चाहते हैं कि
हमारा प्रेम हर वक़्त
सिमटा हो
हमारे अक्स के
इर्द गिर्द
और कभी चाहते हैं
टूट कर बिखर जाएं
उनमें

इस दुनियाँ में
कभी तो आ कर देखो
मेरी ख्यालों से
सुर मिला के देखो
तरस रहे हैं
मेरे शब्द
तुम्हारे सुरों को....
कुदरत अपने करिश्माई
रूपों और रंगो में है
निर्मल और स्वच्छंद....
यहाँ सुख है
शांति है
संतुष्टि है
सपने हैं
अपने हैं
संगीत है
गीत है
उत्सव है
उल्लास है
हंसी है
परिहास है
प्रेम है
ममता है
करुणा है
मानवीय गरिमा है ...
यहाँ समुन्दर है
नदिया है
पहाड़ है
सुंदर वन है
खुला आकाश है
धरती है
जीवन है
सब कुछ तो है...
ये दुनियाँ
मेरे ख़्यालों ने
बनाई है
और कल्पना के
तमाम रंगों से सजाई है...
मुझे भरोसा है
मेरे ख्यालों की दुनियाँ
आपके ख्यालों को एक
दिन ज़रूर भा जायेगी और
तब यह सच में
हम सबकी
असल दुनियाँ बन जायेगी
जो देखा है खुद को बिखरते
तुम्हारे संग संवर जाएगी

लक्ष्मण का वनवास

लक्ष्मण का वनवास
धर्मवीर लक्ष्मण का त्याग
युगों–युगों रहेगा याद

राम है हर युग के परमेश्वर
लक्ष्मण का मन निर्मल
सागर सा सुंदर

चौदह वर्ष वन में रहे
पत्नी से बिछुड़कर
सेवा–त्याग की प्रतिमूर्ति
हे लक्ष्मण तुम धन्यवर

स्नेह उर्मिला का अद्भुत
रखा मन चीर सहृदय
बह बह अंतर में अविरल
त्याग प्रेम का दिया परिचय

हे धरा के मानव लक्ष्मण
धन्य किया तुमने जीवन
भ्रात–प्रेम का अतुल्य प्रेम के
तुम बने जीवन्त उदाहरण

कहा रामचरितमानस जो ले
लक्ष्मण का नाम पल भर
राम की अनुकम्पा मिल जाती
दुख क्लेश मिट जाते हर

स्वाति मानधना 'सुहासिनी'

परिचय

नाम : स्वाति मानधना 'सुहासिनी' **पति :** रामचंद्र मानधना **स्थान :** बालोतरा **जन्म :** 5/12/1977 **शिक्षा :** बीकॉम **पेशा :** बेकिंग और पैकिंग **विधा :** कविता व लेख **कृति :** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित रचनाएं। **सम्मान :** राजकीय सम्मान उपखंड स्तर पर, जिला स्तरीय राजकीय सम्मान, शीर्षक साहित्य परिषद द्वारा 'शब्द मनीषी' सम्मान, माहेश्वरी पत्रिका द्वारा 'माहेश्वरी गौरव' सम्मान, इसके अतिरिक्त अन्य भी कई सम्मान। **संपर्क :** 94621 52650

मां और सासू मां

जन्म लिया जिस कोख से,
वो ही मेरी जाई है
वह ममता की मूरत है ,
मेरी प्यारी माई है।
जब पति परमेश्वर कहलाता है,
उनकी मां क्या कम होगी!
नया जरूर होता यह रिश्ता,
पर कीमत उसकी कम ना होगी।
मां ने मुझे जीवन दिया,
धरती पर मेरा अवतरण हुआ।
सासू मां ने जीवनसाथी दिया,
कुलदीपक मेरा सुहाग हुआ ।
मां ने उठना, बैठना सिखाया,
सासु मां ने सलीका बताया।
मां ने मुझे बोलना सिखाया,
संस्कार, शब्दों का मेल बताया।
सासू मां ने जग के बोलो का,
गहन अध्ययन मुझे करवाया ।
मां ने घर बनाना सिखाया,
सासू मां ने घर चलाना सिखाया।
मां ने कला के हुनर को निखारा,
सासू मां ने पर्वों का पाठ पढ़ाया।
दुनिया में जीना मां ने सिखलाया,
दुनियादारी में रहना सासू मां ने बतलाया।
चोट खाने पर मां ने लाड लडाया,
चोट खाकर संभलना सासू मां ने बतलाया।
दोनों में से महत्ता किसी की भी कम नहीं,
उत्कर्ष जो मैंने पाया मुझ में इतना दम नहीं।।

हिंदी

जिस भाषा में प्यार पिता का,
मां के हृदय की ममता है ,
उस भाषा के एक-एक शब्द में,
भावों को रखने की क्षमता है।
भाषाओं का आधार है हिंदी,
हिंदुस्तान का सम्मान है हिंदी,
मीरा, तुलसी, रसखान, कबीर के
समग्र लेखन का आधार है हिंदी।
हमारी संस्कृति,हमारा गौरव,
हमारे मान की भाषा हिंदी।
रची- बसी है रगों में हमारे ,
भारत मां की भाषा हिंदी ।
सवाल जब कोई पूछे अंग्रेजी मे,
जवाब भीतर से हिंदी में आता,
हमारे हृदय की जड़ों से जुड़ी
हमारे मन की भाषा हिंदी।
शर्म कैसी बोलने में हिंदी!
यह तो मातृभाषा है ,
क्या अपनी मां को देख,
भला कोई संकोच खाता है!
देश पहले ही बंटा है,
भाषा आधार पर इसे मत बांटो।
एक भाषा देश को जोड़ सकती,
बस अपनी सोच को पाटो,
जो नहीं हुआ अब तक वर्षों में,
वह काम हमें कर दिखाना है।
हिंदी को सम्मान दिला कर,
उसे राष्ट्रभाषा बनाना है।।

घर की चौखट

आज दिल कुछ उदास है,
बैठी जा रही मेरी सांस है,
बेटे की नौकरी लग गई,
मानो घर की चौखट छूट गई।
मौका खुशी का है या गम का,
आज का सुख देखूं या कल का,
हर तरफ छाई तन्हाई है,
बेटे की अब घर से विदाई है ।
मालूम था मुझे यह दिन आएगा,
बेटा शहर में जाकर बस जाएगा,
सपना तो वह मेरा पूरा कर रहा,
घर आंगन उसका उससे छूट रहा।
ख्वाब जो बुने थे मैंने,
हकीकत का जामा पहनाने,
बात पत्थर की लकीर बन गई,
मानो घर की चौखट छूट गई ।
बच्चों के बगैर घर हो गया खाली,
बगैर फुलवारी क्या करें माली,
पूछ रही हूं खुद से खुद ही,
यह क्या कर बैठी हूं मैं बावली !
जीवन बीत गया है काफी,
जो बचा है वह है कम ,
मन लगने का ना है गम,
बस बच्चों को ना घेरे तम।
ईश्वर से अरदास यही,
खुशियां देना उनको सभी ,
घर की चौखट भले ही बदले,
मेरे संस्कारों को कभी ना भूले।
गर्व करे,ये मां तुम पर,
पुण्य कर्म के लगाओ उपवन,
तुममें दिखती मेरी परछाई है,
और ये ही मेरी असली कमाई है।।

शिक्षक

ज्यों मूर्तिकार देता,
पत्थर को आकार ,
ज्यों कुंभकार देता,
माटी को निखार।
तुम बाती बनकर जलते,
रोशन करते जीवन,
तुम पतवार उस नौका की,
जो डोले बीच समंदर
नव पल्लवित कुसुम को
सुगंधमय कर देते,
खुशबू फैले चहुं ओर,
ऐसा रस भर देते।
ज्ञान के भंडार को,
स्वार्थरहित हो बांटते,
कर्मठता सिखलाकर ,
भाग्यरचयिता बनते।
ब्रह्मा, विष्णु ,महेश का ,
स्वरूप हो तुम धरा पर,
वंदन बारंबार तुम्हें,
देवों के प्रतिरूप गुरुवर।।

आजादी की कीमत

आजाद हुए उन फिरंगीयों से,
मकसद अपना भूल गए....
गांधी ,नेहरू, बोस के,
सपनों का भारत भूल गए....
उलझ गए अपने ही देश में,
जाति धर्म के नाम पर,
मंगलपांडे इस देश की खातिर,
हंसते–हंसते झूल गए.....
भगतसिंह ने मान बढ़ाया,
फिरंगीयों पर बम गिराया....
ऐसे वीरों के त्याग को,
हम बेपरवाह हो भूल गए.....
जब गुलाम थे, बस गुलाम थे,
राम– रहीम ना मसला था....
इस आजादी से तो वह,
गुलाम भारत अच्छा था....
लड़ने का जज्बा रखते हो,
सरहद पर जाकर खड़े रहो....
एक गोली खाकर सीने में,
फिर भी वहां पर डटे रहो....
मालूम होगा त्याग तुम्हें तब,
अमर वीर जांबाजों का....
नहीं बहेगा खून व्यर्थ फिर....
देश में जवानों का।।

सुषमा वीरेंद्र खरे

परिचय

नाम : सुषमा वीरेंद्र खरे **जन्मतिथि :** 23/12/1965
पिता : स्व,बाबूलाल जी श्रीवास्तव
माता : सरला देवी श्रीवास्तव
पति : श्री वीरेंद्र खरे (सेवानिवृत्त तहसीलदार)
शिक्षा : स्नाकोत्तर
सम्प्रति : समाज सेवा, लेखन, भूतपूर्व शिक्षिका विषय संस्कृत, विज्ञान, व सामाजिक विज्ञान, योग शिक्षिका, महिला पतंजलि सिहोरा
रुचि : संगीत, गायन व नृत्य, वादन, हारमोनियम, वायलिन, ढोलक
प्रकाशित कृतियाँ : लगभग 16 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। **उपलब्धि :** आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

मेरा देश निराला है

मेरा देश निराला है , मुझे जान से प्यारा है ।
देखो जरा सुन लो जरा, सारे विश्व से न्यारा है
मुझे जान से प्यारा है।

1. इस देश की धरती पे ,श्रीराम कृष्ण आये
इस रज में लोटे हैं और माटी भी खाये ,
देश रक्षा करने खातिर नरतन धरके आये
सारे जग ने ये जाना है ,वो हरि अवतारा है ।

2. मेरे भारत देश मे ही ,गांधी सुभाष जन्मे
सिद्धांत उसूलों के पक्के थे जो मनमें
रगरग में खुद्दारी की लहर उठती थी खूं में
आजाद देश हिंद का, दिया जिनने नारा है ।।
मेरा देश...

3. आजाद चंद्रशेखर, और भगतसिंह प्यारे
नन्हे से खुदी राम बोस, व मंगल पांडे न्यारे
झेल यातनाएं भारी, नहीं हिम्मत वो हारे
खेले जान पे वो अपनी, तिरंगा फहराया है ।।
मेरा देश...

4. भारत को जो देखे, तिरछी नजरों से कभी
उसे धूल चटा देंगे, मेरे देशी जवान अभी
कमजोर नहीं भारत, जाने ये दुनियाँ सभी
आजादी अमृत महोत्सव ,इसलिए मनाया है
मेरा देश...

आदि पुरुष

श्री राम की अद्भुत लीला ,इसको किसने जाना है ।
आदि पुरुष हैं राम हमारे ,ये सबको समझाना है ।

अवतरित हुए धरती पर आकर,भूमि भार हटाने को ।
असुरों से पीड़ित ऋषियों का ,संताप मिटाने को ।
वरदान दिया था धरती को ,सच करके दिखलाना है ।
आदि पुरुष हैं राम हमारे ,ये सबको समझाना है ।

इनके धरा पर आने के ,कारण कुछ शास्त्र बताते हैं ।
शाप लगा नारद का इनको ,मनुज रूप तब आते हैं ।
अहंकार था जो रावण को ,उसको भी तो मिटाना है ।
आदि पुरुष हैं राम हमारे ,ये सबको समझाना है ।

मर्यादा को धार हृदय में ,अमल सदा जो करते रहे ।
संसारी मानव को भी तो ,यही सीख सदा देते रहे ।
राम चरित्र को जीवन में,आत्मसात हमें करना है ।
आदि पुरुष हैं राम हमारे ,ये सबको समझाना है ।

लोभ ,मोह, व क्रोध पर ,जिन्होने थी विजय पाई ।
अपना अहित करने वाले पर ,करुणा राम ने थी दिखलाई।
करुणा सिंधु राम प्रभु है ,दुनिया को दिखाना है ।
आदिपुरुष हैं राम हमारे ,यह सबको समझाना है ।

सबकुछ करने में जो समर्थ थे,फिर भी सहजता से रहते ।
वादा कर देते थे जो जिससे,हरहाल में पूरा वो करते ।
संकल्पों को पूरा करना ,यह भी तो सिखलाना है ।
आदिपुरुष हैं राम हमारे ,सबको यह समझाना है ।

आज्ञा पालन मातपिता की ,कष्टों को सहकर जो करते ।
दीनों और गरीब जनों पर ,दयादृष्टिजो अपनी रखते ।
झूठे बेर खाये शबरी के ,प्रेम की गंगा बहाना है ।
आदिपुरुष हैं राम हमारे ,सबको यह समझाना है ।

मर्यादापुरुषोत्तम राम जी ,कोई न उनको जान सके ।
शेष महेश व देवी शारदा ,थाह न इनकी पा सके
आदि अनादि अनंत प्रभु हैं,उनके ही गुण गाना है ।
आदिपुरुष हैं राम हमारे ,सबको यह समझाना है ।

जय श्रीराम जय श्रीराम जयश्रीराम

गोवर्धन पूजा

मर्म समझें हम गोवर्धन का
संधि विच्छेद करें जो इसका
गौ + वर्धन = गौवंश बढ़ाना
तो पालन कर लें हम गौ मां का ।।

गोवर्धन पर्वत पर गौचारण को
कृष्णा ले जाते थे गौओं को
जिससे वृद्धि होती थी उनकी
इसलिए पूजा था गोवर्धन को ।।

आज हम चलते राह उसी पर
गोबर के गोवर्धन बनाकर
पूजन कर के मुक्त से हो जाते
गौओं के हित की न सोचकर ।।

छप्पन भोग हम उनको लगाते
गौओं को चारा खिला नही पाते
ऐसे खुश क्या हो पावें गोवर्धन
गौ मां का जो न हम मान बढ़ाते ।।

संकल्प हमें यही लेना होगा
गोवर्धन को खुश करना होगा
गौ पालन पर ध्यान बढ़ाकर
कृष्ण की लीला समझना होगा ।।

गली–गली आज फिरती गौ माता
पालन उनका न मनुज कर पाता
पाल सको न उसे घर में रखकर
तो चारा खर्च दे बन जाएं दानदाता ।।

संगीता जैन (पिंकी)

परिचय

नाम : श्रीमती संगीता जैन (पिंकी)
शिक्षा : एम.ए (अर्थशास्त्र)
पिता : श्री हुकुम चन्द्र चौधरी चंदेरी
पति : श्रीमान जयकुमार जैन
उपलब्धियां : कविता प्रकाशित
रुचि : आर्ट्स, लेखन,गायन **पता :** जयकुमार जैन टंटी(अध्यक्ष, ग्रेन मर्चेंट एसोसियेशन, कुंभराज) निचला बाज़ार, जैन मंदिर के पास, टंटी चौराहा, कुंभराज, मध्यप्रदेश - 473222 **सम्पर्क सूत्र :** 9407207350, 9584571822

पिता

सबको खुशियां देते हैं
पर अपने गम पर चुप रहते हैं।
सब कुछ सहते कुछ ना कहते
फिर भी हंसते रहते हैं।
मां तो अपने मन की बातें
बच्चों से कर लेती हैं।
पर यह अपनी सारी बातें
मन में ही रख लेते हैं।
भरी दुपहरी निकल पड़े
खून पसीना एक करे।
बरगद बनकर सारे घर को
वह छाया दे देते हैं।
ख्वाहिश हो या सपने उनके
हरदम दिल में दबे रहे।
पर हम सब के जज्बातों को
पता नहीं कैसे पढ़ लेते हैं।
खून पसीना लगा हुआ है
घर की इन दीवारों में।
आज भी हाथ का तकिया बना
गहरी नींद सो लेते हैं।
दिवाली हो या सावन
नए-नए कपड़े सबको लाते।
वही पुराने कपड़ों से वह
अपना काम चला लेते हैं।
जन्मदिन जब आता है
केक खिलौने सभी लाते।
बारी जब उनकी आती तो
कई बहाने बुन लेते हैं।
एहसान चुकाऊं कैसे इनका
उपमा इनको क्या दूं मै।
ईश्वर को तो न देखा मैंने
ईश्वर इन्हें ही कह देते हैं

पर्युषण पर्व

पर्युषण पर्व की इस बगिया में
दशधरमों के फूल खिले।
क्षमा धर्म है सबसे प्यारा
इसको हम सब भूल चले।

क्षमा भाव से सीचें इस बगिया को
प्यार का इसमे दीप जलाएं
बैर भाव को भूले हम सब
मैत्री भाव से गले मिलें।

नरक आयु का बंध हो जिससे
हम न ऐसे भाव करें।
व्यर्थ गवाओ न इसको भैया
मानव रतन न दुवारा मिले।

पर्युषण पर्व की इस बगिया में
दशधरमों के फूल खिले।
क्षमा धर्म है सबसे प्यारा
इसको हम सब भूल चले।

अभिनंदन का अभिनंदन

पुलवामा में हुआ हादसा, अंतर्मन झकझोर दिया
वायु सेना ने बदला ले, दुश्मन का मन झकझोर दिया।
पीछे से वार करने की, बात तुम्हीं ने सिखलाई
इसलिए वायु सेना ने, पीछे से है बार किया।
आतंकी अड्डे नष्ट किए, बारूद में वो दफन हुए
चालीस तुमने मारे थे, चार सौ को हमने मार दिया।
सांप हमेशा बिल में रहते, ये बात पता हम सबको है
जहरीले सांपो को हमने, बिल में घुसकर मार दिया।
सेम सेम के नारे, संसद में आज लगाए हैं
मत भूलो हमने भी, तुम्हारे जैसे सेम किया।
मजबूर करो न तुम हमको, ये बात हमेशा कहते हैं
तुमने हमारे मिराज के, मिजाज को अब देख लिया।
अफसोस नहीं होता उनको, बदला वो हमसे फिर लेंगे
बदला लेने की खातिर, एफ सिक्सटीन को भेज दिया।
फिर उन पर हमला करने, हमको है मजबूर किया
मिग इक्कीस अभिनंदन ने, एफ सिक्सटीन को मार दिया।
पाकिस्तान बाज नहीं आता, अपनी काली करतूतों से
विंग कमांडर अभिनंदन को, उसने कैद कर लिया।
कुदरत को भी पता था शायद, यह शेर नहीं डरने वाला
यही दिखाने दुश्मन को, हवा का रुख भी मोड़ दिया।
मौत की बाहों में जाकर, जरा भी न संकोच हुआ
भारत माता के नारों से, पाकिस्तान गूँज उठा।
सवाल पूछे कई सारे, पर उत्तर पूछ नहीं पाए
भारत के सारे राज को, अपने सीने में दफन किया।
देश के आगे क्या कीमत, जान भले ही चली जाए
भारत माता का सिर, गद्दारों के आगे झुकने न दिया।
भारत की सर जमीं पर, जब पैर रखा अभिनंदन ने
जीत कर आए अभिनंदन का, सारे देश ने अभिनंदन किया।
होली दीवाली और सावन, सारे त्यौहार एक हुए
आसमान की बूंदों ने, स्वागत और सम्मान किया।
तब भारत के वीर सपूत की गाथा ,बच्चा बच्चा गाएगा
स्वर्ण अक्षरों में पन्नों पर, अभिनंदन का नाम लिखा।

माँ का आंचल

सुबह उठूं और देखूं मैं
हंसती और मुस्काती हो
आज दुबक बैठी कोने में
आँसू क्यों टपकाती हो।
ऐसा न मैने काम किया
जिस पर तुम शर्मिंदा हो
कान पकडकर माफी मांगू
कहो तो उठक बैठक हो।
पढाई मैंने पूरी करली
नंबर वन मैं आया हूं
दौड हुई 100 मीटर की
टॉफी लेकर आया हूं।
चाट पकौड़ी न मागू
घर का खाना खाता हूं
जो दे देती रूखी सूखी
उसी मैं खुश हो जाता हूं।
पापा जब से गए छोड़कर
जिद करना ही छोड दिया
बच्चा हूं पर बच्चे जैसी
हरकत करना छोड दिया।
रोने लगी मां सिसक सिसक कर
बच्चे को अपनी गोद लिया
आज जन्मदिन तेरा बच्चा
केक खिलौने न तुझे दिया।
बस इतनी सी बात पर मां
आंसू तेरे व्यर्थ बहे
शर्ट उतारी जल्दी अपनी
मां के आंसू पोंछ दिए।
कान पकड डांटा मां ने
बेटा शर्ट ये गंदा हो जाता
टाबिल लेने जाता जबतक
एक और आंसू गिर जाता।
बस इतनी सी बात पर मां
तेरे आंसू व्यर्थ गवाती है
तेरा आंचल मेरे केक खिलौने
सारी खुशियाँ मुझे मिल जाती हैं।

प्रो. संगीता सिंह

परिचय

नाम : प्रो. संगीता सिंह **पति :** कप्तान सिंह
जन्म तिथि : 16 जनवरी ग्वालियर म. प्र.
माता–पिता : श्रीमती प्रेमवती–श्री जगन्नाथ प्रसाद जैतवार
शैक्षणिक योग्यता : एम. ए. हिंदी, बी. एड., एम. फिल. (मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री विमर्श एक शोध अध्ययन), पीएचडी कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी का सामाजिक संघर्ष : एक अध्ययन **शैक्षणिक अनुभव :** महाविद्यालयीन सेवा में 3 वर्ष अध्यापन कार्य का अनुभव **लेख :** विभिन्न पुस्तकों में पुस्तक अध्याय एवं चौमासा, अभ्यंतर, बोहल शोध मंजूषा आदि अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित। **अभिरुचि :** कविता एवं कहानी लेखन के साथ विमुक्त एवं घुमंतू आपके प्रवेश और संस्कृति पर कार्य । **संप्रति :** सहायक प्राध्यापक, विजयाराजे शासकीय कन्या महाविद्यालय मुरार ग्वालियर म. प्र.
मो. न. : 9977819671 **ई–मेल :** jaitwarsangeetagmail.com

गौरैया

नहीं आती वो गौरैया मेरे आँगन में अब
नहीं मिलती उसे वो खुशी मेरे आँगन में अब
चहचहाना अब नहीं सुनाई देता उसका मुझे
उस नीम के पेड़ को काट दिया
घर की शोभा खराब हो रही थी कहकर...
मैंने देखा भटकती फिरती रही वो चिड़िया
क्योंकि नीम पर था घोंसला उसका
थे शायद बच्चे भी!!
वो तो बेसहारा हुई, बच्चों को भी सहारा न दे सकी
नित्य आती थी ढूंढने अपने बच्चों को
चुगाने के लिए दाना भी लाती थी...
घर में चारो तरफ उड़ उड़ कर देखती
दौड़ाती है निगाह इधर उधर.
निराश होकर लौट जाती हर रोज वो
अब नहीं करती पानी में अठखेलियां
सकोरे में रखा पानी नहीं पीती...
कहती है शायद. मुझे अब न चाहिए एहसान तेरा
जो अपनी साँसों का न हुआ
वो हमारा संरक्षण कैसे करेगा..??
वो सिर्फ कर सकता है....
सकोरे में पानी रखकर हमें बचाने का ढोंग..

बहती धारा सी वो

वह नदी थी, बहना फ़ितरत में था उसकी
पर किसी के साथ बहना था.. उसे
वह समीप भी आया
सिर्फ प्यास बुझाने के लिए
साथ बहने वाला कोई न मिला था
रुकना था शायद यहाँ कुछ देर उसे
ठहरी भी! पर किसके इन्तेजार में..?
जो उसे छोड़ आगे बढ़ गया.हाँ
निकला जो एक बार
पीछे मुड़कर न देखा जिसने कभी
जिस ठौर वो छोड़ गया.,
वो आज भी खड़ी थी वहीं
यूँ चलना उसका प्रकृति था
न देखा उसे रुकते कभी किसी ने
फिर भी न जाने क्यों?
वह आगे न बढ़ सकी
तमाम गाँव, शहर,और वनों से गुजरी..
नई पुरानी डगरों से गुजरी
तलाश यूँही जारी रही
उसकी उसके शहर की!

सूखी डाली सी मैं

घर की देहरी जब लांघी तब सपने थे आँखों मेरी,
सामने मंजिल थी मंजिल को पाने की ललक थी
रास्ता कठिन था, यूँ की कंटको से भरी डगर
हौंसला ऐसा कि हार न मानने देता
घर की चहारदीवारी छोड़
खुले आसमान में बसेरा समझ, सपनों को पंख दिए
सपनों को पंख मिले.हौंसला जीत गया।
जीत की खुशी ले घर लौटी मगर किवाड़ बन्द मिले
बहुत पीटा तब, दरवाजा तो खुल गया..
चेहरों पर से अपनत्व का भाव धुल गया
मैं खुद को जैसे हर किसी के बीच नजर सी आती
जैसे दो लोगों के बीच तीसरे का काम नहीं होता
उन सब में मैं वो तीसरीसी
घर में परदों की संख्या जैसे बढ़ सी गयी थी
एक हटाती तो दूसरा पर्दा नज़र आने लगता.
किचन के अस्त व्यस्त रखे डिब्बे मुँह चिड़ा रहे थे
तू नहीं तो क्या ?अब हमने बिन तेरे रहना सीख लिया...
मैं अपना हाल बताती वो अपना छिपाता।
मीलों का सफ़र तय करती पास आने के लिए
कैसे घर के साथ ही बहुत कुछ छूट गया पीछे...
उसके चेहरे को देखती हूँ तो दिखता है।
उसका वो झूठा दिखावा
मेरा देखकर अनदेखा करना...
माना रास्ते से मंजिल तक का यह सफ़र पूरा हुआ
इस सफ़र में हमराही तो वही था,
प्रत्यक्ष न सही उसका इंतजार ही सही
मेरे इंतजार की इंतहा तो देखिए.
वो साथ तो नहीं था, मगर मैं उसकी राह देखते हुए
चलती रही... बिन पत्ते की सूखी डाली सी
जो अलग कर दी गयी है उस पेड़ से जिसमें
सभी डालियों में फूल, पत्ते है..और मैं सूखी थी।

कामकाजी महिलाएं

घर से बाहर रहने वाली महिलाएं
नहीं होती कमजोर दिल से न दिमाग से
उन्हें आता है समस्याओं से लड़ना
वो नहीं चाहती उन्हें कमजोर पुकारा जाए
कर लेती हैं सभी काम समय पर
नहीं देखती अब वो राह किसी की..
आटा पिसाने , सब्जी लाने के लिए
अब न चाहिए किसी का साथ
बाजार जाने के लिए
मोल भाव भी खुद करती हैं
और खुद ही हिसाब करना सीख गयीं हैं
हाँ उलाहने सुनने की वो आदत कहाँ
जब राह चुनी है यह अपने लिए
तो उसके कांटे भी उसके होंगे
मिले फूल अगर राह में
तो उनकी खुशबू भी उसकी होगी
चलो मैं मदद कर देता हूँ कहकर
उसको कमत्तर महसूस कराते लोग
प्रवृत्ति से वे खुद होते हैं कमजोर
अब तक खूब रफू करती रहीं रिश्ते कई
फिर भी सिलाई हमेशा उधड़ती ही रही
हम ठहर से गए जिंदगी में
और जिंदगी इन हाथों से
रेत सी फिसलती रही
कपड़े और गहनों से
गुँथी थी जो पहचान
फटने लगे हैं अब वे परिधान
अभी तक हर पीढ़ी की सीढ़ी
बनी रही महिलाएं
मन सांझा किया, करती रहीं
जीवन सांझा महिलाएं
अब रास्ता भी मेरा होगा,
मंजिल में भी मैं होंगी
जो मुझसे शुरू होकर,
मुझ तक ही पहुंचेगा।

संजय जैन

परिचय

नाम : संजय जैन बीना मुंबई **जन्म तिथि :** 19/11/1965
जन्म स्थान : बीना (म.प्र.) **शिक्षा :** पी.जी एवम एम बी.ए.
साहित्य उपलब्धियाँ : नव भारत टाइम्स में ब्लाक लिखता हूँ, हालचाल और भी पत्र पत्रिकाओं और लोकल पेपर्स में मेरी कविताएँ गीत और लेख प्रकाशित होते रहते हैं।
संस्थाओं द्वारा अवार्ड : करीब 180 अब तक मिल चुके हैं जो की मंचों पर समाजिक संस्थाओं और क्लब आदि द्वारा प्रदान किये गये हैं।
व्यवसाय : मुंबई में पब्लिक लिमिटेड कंपनी में प्रबंधक के पद पर कार्यरत हूँ।
विशेषताएँ : मंचों का संचालन करना, काव्य पाठ करना, आर्केस्ट्रा में गाना। ये सब मेरे शौक है। कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ।

इंसान की जिंदगी

इंसान ही इंसान को बनाता है
फिर दुनियाँ में लाता है।
इंसान ही इंसान को पालता है
फिर उसे चलना सिखाता है।
इंसान ही इंसान को अच्छे बुरे का
और इंसानियत का पाठ पढ़ाता है।
इंसान ही इंसान को मिटाता है
और संसार से मुक्ति दिलाता है।।

देखो कहीं धूप कहीं छाव है
कहीं खुशी तो कहीं गम है।
फिर भी इंसान ही क्यों
इस दुनियाँ में दुखी है।
जबकि उसे सब कुछ
विधाता से मिला है।
फिर भी न जाने क्यों
और की चाहत रखता है।।

देखो आज कल बिकती है
हर चीज बाजार में।
सबसे सस्ता मिलता है
इंसान का ईमान जो
जिसे खरीदने वाला
बाजार में होना चाहिए
और उसे अनुभव व
अच्छा ज्ञान होना चाहिए।।

देखो इंसान जिंदगी भर
पैसे के लिए भागता है।
जितने की उसे जरूरत हो
उससे ज्यादा की चाहत रखता है।
इसलिए तो अपनी जिंदगी में
कभी संतुष्ट नहीं हो पाता है।
और फिर पैसे की खातिर वो
खुद को भी बेच देता।।

देखो लोगों के पैसे से जिंदगी
और दुनियाँ चलती है।
पर सब की किस्मत में
पैसा नहीं कुछ और होता है।
जिसके ज्ञान के कारण ही
कुछ लोग उद्योगपति बनते हैं।
जो देश दुनियाँ को फिर
अपनी उंगली पर नचाते हैं।।

जमाने को देखो

बहुत संसार को देखा
और बहुत इसको सुना।
जमाने की हर बातों का
बहुत मंथन भी किया।
मैं अपने बातों को भी
इस जमाने को दे सका।
और लोगों की सोच को
कुछ हद तक बदल सका।।

विधाता ने जमाने को
बनाया था सभी के लिए।
जो सुनने और सुनाने में
बहुत विश्वास रखते हैं।
वो ही इस जमाने में
बहुत खुश रह पाते हैं।
और जमाने की खुशीयों में
चार चाँद लगाते हैं।।

जमाने के लोगों ने
बहुतों को रुलाया है।
और अपनी तगात का
लोगों को एहसास कराया है।
परंतु भूल गये शायद
वो उस विधाता को।
जिसने हम सब को
जमाने के लिए बनाया।।

दर्शन बिना भी..

तेरे दर पर जो आता है
वो कुछ न कुछ तो पाता है।
इसलिए तो तेरे दर से
कोई भूखा नहीं जाता।
सभी को अपने होने का
तू एहसास कराती है।
इसलिए बुलाबा भी तू
सभी को भेजती हो।।

सभी की किस्मत में
कहाँ है माँ तेरे दर्शन।
बड़ी सौभाग्यशाली होते हैं
जिसे मिलते हैं तेरे दर्शन।
बड़े आभागे हैं वो लोग
जो पहुँचकर भी वहाँ पर।
नहीं कर पाते तेरे दर्शन
और घर को लौट जाते।।

तेरा दर का रहा इतिहास
कोई खाली हाथ नहीं लौटा।
भले ही तेरे दर्शनों से
रहा हो बिल्कुल वंचित वो।
पर उसकी इतनी श्रध्दा ने
तुझसे कुछ तो पा लिया।
और माँ होने का तू ने भी
निभा दिया अपना फर्ज।।

अमर कोई नहीं है

हँसते खेलते गुजर गई
अब तक की जिंदगी।
वक्त कैसे निकल गया
जिंदगी को पता नहीं चला।
पर अब जिंदगी न जाने
क्यों सहमी सहमी है।
इसका कारण कुछ
पता नहीं चल रहा।।

जिंदगी जीना चाहता हूँ
हर दम मौज मस्ती से।
न गम दूं मैं किसी को
न गम दें लोग किसी को।
मैत्री भाव बने जगत में
ईर्षा का हो नाश यहाँ।
मानव को मानव समझें
और रखे इंसानियत को जिंदा।।

आना जाना तो लगा रहता है
इस मायावी संसार में।
जो आया है यहाँ पर
उसे एक दिन जाना है।
हाँ पर आने जाने का
वक्त किसी को नहीं पता।
न ही यहाँ अमर होकर
अब तक कोई आया है...।।

सपने भी सच होते हैं

देखा है जब से तुमको
ये दिल बहुत बैचैन है।
और दिल की धड़कनें
बहुत तेज हो रही।
आँखों की भी एक
खोज चल रही है।
और चेहरे पर भी
मेरे उदासी छा रही।।

बहुत देखा है मैंने
अपने इस जीवन में।
किसी से किसी की
कैसे मिलती है आँखें।
जुदा होने पर फिर
यह सब होने लगता है।
और तड़प उन्हें देखने की
मिटाये भी नहीं मिटती।।

बड़े ही किस्मत वाले हैं वो
जिन्हें अपनी पसंद मिलती।
तमन्नाएं जो थीं दिल की
वो आंगन में खिल उठी।
और अपनी मोहब्बत को
वो अपने साथ पाते हैं।
तभी तो उम्र भर वो
खुशी से झूमते रहते।।

शमा जैन सिंघल

परिचय

नाम : शमा जैन सिंघल **पति :** श्री संदीप सिंघल
शिक्षा : बी.ए. दिल्ली विश्वविद्यालय
पता : सिंघल कॉम्प्लेक्स, सेउनी अली ए.टी. रोड़ जोरहाट, असम 785001 **सम्पर्क :** 6900183970
अभिरुचि : एक कुशल गृहणी होने के साथ-साथ में साहित्य में भी रुचि रखती हूँ! मेरी रचनाएँ पत्र -पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं! साहित्य टी. वी. चैनल पर भी रचनाएँ प्रसारित करने का अवसर प्रदान होता रहता है!
सम्मान : साहित्य के क्षेत्र में लक्ष्य भेद श्रम सेवी एवं शक्ति आराधना सम्मान, अथाई समूह द्वारा 5 सम्मान पत्र व हिन्दी गौरव अलंकरण, साहित्यश्री सम्मान, हिन्दी रत्न, शिक्षा रत्न, काव्य भूषण आदि सम्मान प्राप्त।

मोबाईल का रिश्तों पर प्रभाव

देख मोबाईल से रिश्ता, कितना मेरा गहरा
पास नहीं हो तो, खाना भी मुझे नहीं है भाता

संग -साथियों की अब ना जरूरत
सारी यारी -दोस्ती इस से ही निभाता

मोबाईल का जादू इस कदर सर पर चढ़ता
एक ही घर में रहकर भी मोबाईल ही सेतु बनता

खत्म हुआ अपनापन, अपनों में कर दी दूरी
बीमार होने पर वीडियो कॉल से कमी करते पूरी

करते हैं जब हम घर बैठ ऑन लाईन खरीदी
तीज, त्यौहार पर भी बाजारों की रौनक रहती फीकी

माना कि नुकसान बहुत हैं पर है कुछ फायदे भी
दुनिया का ज्ञान सारा एक पल में मिल जाता भी

मोबाईल से जब होता घर पर बैठे ही काम
होती तब समय की बचत लगता ना फिर दाम

चाह कर भी जब अपनों से मिल ना पाते
दूरियों को पल में मिटा, मीठा अहसास पाते

अंकुश

हर बात पर अंकुश,
हर बात पर टोका -टाकी
आज के बच्चों को
कहा समझ में ये है आती

गर ना हो थोड़ा अंकुश
बहुत कुछ बिखर है जाता
आजाद ख्यालात का कह
अपने को गलत रस्ते पर चल जाता

नई पीढ़ी की नई सोच ने
शर्म हया सब त्याग दी
तोड़ी जो अंकुश की डोर
स्वाहा अपनी जिंदगी की

अब भी समय है संभल के
तुमको चलना होगा
माँ-बाप के अंकुश तले
सुरक्षित तुम्हारा भविष्य होगा

सींच प्यार से बड़ा किया,
सर्वस्व अपना लुटाया
लगाएं जो थोड़ा अंकुश,
प्यार से इनको मत ठुकराओ!

संयुक्त परिवार

मोती –मोती पिरो कर, बन जाता गले का हार
रिश्ते की डोर में बंध, बन जाता संयुक्त परिवार

बड़ों से है घर में रौनक, संस्कारों की पहचान
छोटों से प्यार, मोहब्बत, घर आंगन में बहार

सुन दादा –दादी से कहानी, बीते बचपन प्यार की छांव में
चाचा –चाची के बन दुलारे, मन –मानी करते हैं शान से

खुशियों , स्नेह से भरा रहता , घर का आंगन
साथ मिलकर खाते –पीते, होता सबमें अपनापन

एकल परिवार में कहाँ ये आनंद, ना मिले सबका प्यार
आजकल के बच्चे क्या जाने, कैसा होता संयुक्त परिवार

सुख –दुःख में सब साथ हो खुशियों की बरसात हो
नहीं फिर कोई गम सताए एक–दूजे का साथ जो पाए

हमारे संस्कार हमारी धरोहर

मान करो सम्मान करो, भारत की संस्कृति का
इससे बढ़कर नहीं कोई धरोहर इस धरती का

वेदों में, उपनिषदों में , गीता में ज्ञान की गंगा बहती
जो ना समझे इनको, उनकी आत्मा अशुद्ध ही रहती

साधु ,संतों की ये धरती, नदियाँ भी मां कहलाती
पत्थर भी पूजे जाते यहाँ, इसकी गाथा सारी दुनियाँ गाती

छोड़ पाश्चात्य संस्कृति को अपनी संस्कृति पर नाज करो
पाया जन्म जब इस धरती पर, अपने को कृतार्थ करो

दे कर विरासत में संस्कारों की अनमोल ये पूंजी
फैरो आज से ही अपने बच्चों पर संस्कारों की कूची

आने वाली पीढ़ी तेरी आज ही बदल जाएगी
बड़े –बजुर्गों के साये में हर दम फलती जाएगी

पं. शंकर प्रसाद तिवारी

परिचय

नाम : पंडित शंकर प्रसाद तिवारी 'सजल'
पिता : श्रीमान पंडित रघुनाथ प्रसाद जी तिवारी महंत जी
माता : श्रीमती मनिगिरिया देवी जी (पूज्यनीया प्रथम गुरू)
जन्म तिथि : 01 नवंबर 1950
शिक्षा : स्नातकोत्तर (गणित) बी.एड.
जन्म स्थान : ग्राम – बहियारी, पोस्ट –खोढवानी, तह./थाना – हनुमना, जिला – रीवा (म. प्र) 486331 **कार्य :** भारतीय सशस्त्र सेना में 17 वर्ष, प्रादेशिक शिक्षा विभाग शिक्षक 24 वर्ष (सेवा निवृत्त) **रुचि :** कार्य लेखन, विद्वान संगति एवं सीखने की चाहत। **भाव :** आप सब के आशीर्वाद की चाहत। **पत्नी :** श्रीमती मानवती तिवारी **पुत्र :** विपिन, विक्रम (स्वर्गीय), विवेक **पुत्रियाँ :** अनुराधा, मंजु।

लोह पिटारी

देखा जो हमने उसको, वह घन चला रही थी।
शोलों में तपाक वो, लोहा गला रही थी।

होठों पर फिर भी उसके,मुस्कान थिरकती थी।
हाथों की चूडियां यूं, रह रह के खनकती थीं।
जैसे किसी चमन में अलि गुनगुना रहा हो।
माथे पे पसीने की यूं बूंद चमकती थी।

रह रह के पोंछती थी, माथे का वो पसीना।
मुख यूं दमकता था, ज्यों हो कोई नगीना।
वह घन चला रही थी, वेखौफ हो दनादन,
दुनियॉ की निगाहों से अनजान सी हसीना।

ढलका रही थी मोती जमी पर गिरा रही थी।
शोलों मे तपाकर वो लोहा गला रही थी।

गाडी में ही लदा था सामान जिंदगी का।
गाडी में कट रहा था अरमान जिंदगी का।
गाडी में ही जन्मी थी, गाडी में ही पली थी,
गाडी में ही लिखा था, विज्ञान जिंदगी का।

गाडी में ही मिला था, भरपूर प्यार उसको।
गाडी में था किसी का जो इंतजार उसको।
अल्हड जवानी से लदी, नवयौवना अनजान,
गाडी में ही मिला था यौवन बिहार उसको।

वह यूं ही गृहस्थी की गाडी चला रही थी।
शोलों में तपाकर वो, लोहा गला रही थी।

कुदरत ने भी बक्सी थी उसे गजब की हिम्मत।
थी बाजुओं में उसके,मर्दानगी ताकत।
गिरता था घन दनादन,तपते हुये लोहे पर,
फिर भी न दीखती थी चेहरे पे थकावट।

गाडी में ही लेटा था,इक दुधमुहा बच्चा।
एहसास का बचपन मगर ईमान का सच्चा।
कभी कभी घन रोक कर वह देख रही थी,
अल्लाह का करिश्मा मरियम का वो बच्चा।

मन ही मन मुदित हो वह गुनगुना रही थी।
शोलों में तपाकर वो लोहा गला रही थी।

फागुन का महीना

कब आया और चला गया कब,
अब तो कोई पता नहीं।
पहले झूमते आता था यह,
दादी अम्मा बता रहीं।

अब फागुन का आना जाना,
क्यूँ तुम जबरन जता रहे हो।
क्यूँ गीत फागुन के गा रहे हो।
क्यूँ खा–म–खा गुनगुना रहे हो।

सुंदर फगुहारों के गीत,
बन जाते थे मन के मीत।
रंग गुलालों से रंग–रंग कर,
हंसती थी बिरहन की प्रीति।

अब फागुन बैसाख बन गया,
अब क्यूँ इसको बुला रहे हो।
क्यूँ गीत फागुन के गा रहे हो।
क्यूँ खा म खा गुनगुना रहे हो

फागुन आता लिये बसंती,
लगता धरती प्यार कर रही।
जब आती ऋतुओं की रानी,
जैसे वह श्रृंगार कर रही।

किन्तु आज है बिखरा फागुन,
क्यूँ आस इससे लगा रहे हो।
क्यूँ गीत फागुन के गा रहे हो,
क्यूँ खा म खा गुनगुना रहे हो।

फागुन फाग सुहावन लगती ,
गाते झूम रहे होते थे।
मधुर ढोल के उन थापों पे,
सुरभित नवल गीत बोते थे।

गणेश बंदना

प्रथमह: पूजित गणपती, गौरी सुवन गणेश।
हाथ जोड़ विनती करूं,आओ हमरे देश।
आओ हमरे देश,भक्त पर दया बनाना।
नाव फँसी मझधार,गजानन पार लगाना।
हार,फूल,मेवा,मोदक हाजिर है हरदम।
सब देवों से श्रेष्ठ,पूज्यवत प्रथमह:।१।

मंगल मूरति गजबदन, जय गणेश गॅणधीश।
रिद्धि,सिद्धि के साथ प्रभु,सादर देहु अशीष।
सादर देहु अशीष,ईश तुम हे लंम्बोदर।
हम जैसे पापी को पार करो भवसागर।
कभी किसी का मुझसे हो ना जाय अमंगल।
जय हो गणपति बप्पा, करना सबका मंगल।२।

हमको दे दो भक्ति प्रभु, कर दो आज निहाल।
जीवन की रक्षा करो, पार्वती के लाल।
पार्वती के लाल, बेहाल दिखें सब चेला।
अपनी शरण लगाओ, मिटे तमाम झमेला।
गिरा चरण में सजल शांति दो प्रभु जी मनको।
मुक्त करो लख चौरासी से गणपति हमको।३।

देवा गणनिधि, गणॉधिक, एकदंत महराज।
उमा पुत्र हे भुवनपति, कार्तिकेय के साथ।
कार्तिकेय के साथ, लाज हे नाथ बचाओ।
विघ्न विनासक, बुद्धिबिधाता गनपति आओ।
हम मूरख ना जाने समझें विनती सेवा।
भक्ती का वरदान सजल को दे दो देवा।४।

माँ की ममता (एक अहसास)

माँ केवल माँ ही होती है, माँ का कोई विकल्प नहीं।
माँ की ममता गंगाजल है, और कोई संकल्प नहीं।
माँ तुम मेरी काबा काशी, मेरा चारों धाम है तूँ।
चूडी वाले हाथों से, मेरे जीवन का नाम है तूँ।

माँ तेरे ममता के ऑसू, गर भू पर गिर जायेंगे।
तीन लोक के प्रानी सारे,त्राहि त्राहि कर जायेंगे।
बोझिल होगी धरा, गगन भी आर्तनाद कर रोयेगा।
किसमें पौरुष है, माँ के नैनों का नीर संजोयेगा।

माँ के आँसू देख पुत्र ने, हाथों में ही रोक लिया।
ढुलक न जाये ये मोती, यह सोच चक्षु को पोंछ दिया।
माँ जो तेरा ऋण है मुझपर, वह तो ना सरेख सकता।
तेरी भीगी इन पलकों को, माँ मैं नहीं देख सकता।

माँ की ममता बोल पडी, ये आंसू नहीं दुलार है रे।
तुझे नजर ना लगे किसी की, यह माता का प्यार है रे।
इतना कहकर माँ ने सुत को, अंतर्मन से चूम लिया।
सुत ने भी माँ के चरणों को, छूकर मन से नमन किया।

माँ का हृदय बहुत कोमल है माँ ईश्वर से बढकर है।
माँ आखिर जननी है जग की, माँ लक्ष्मी बराबर है।
इस रचना की हर पंक्ति,मै माँ को अर्पित करता हूँ।
अपना सारा जीवन माँ को सजल समर्पित करता हूँ।

श्रीमती विभा जैन

परिचय

नाम : श्रीमती विभा जैन (ओज्स) **पति :** अभय जैन
जन्म स्थान : ललितपुर (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा : अर्थशास्त्र एम .ए., B.Ed, एल. एल. बी
रुचि : लेखन में सक्रिय-बचपन से, शुभ संकल्प साहित्यिक सृजन, साहित्य की दुनियाँ, कलम की खनक साहित्यिक सृजन, फेसबुक, मॉम स्प्रे, नमस्ते पहल, काशी कविता मंच वाराणसी, अथाई समूह, चेतना किस्से कहानियां कविता मंच वाराणसी,नेशनल और इंटरनेशनल अनेक ग्रुप को से जुड़ी हुई हूं। **साहित्य सृजन :** कविता, संस्मरण, लघु कथा, शायरी, गजल, कहानी भजन, गीत लगभग 2200 रचनाएं, 250 रचनाएं मेरी सांझा संकलन व ई बुक में प्रकाशित हो चुकी हैं। ई पत्रिका में भी मेरी रचनाओं को स्थान प्राप्त हुआ है। लगभग 100 रचनाएं विभिन्न मंच पर पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। **उपलब्धियाँ :** पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर विजय नगर इंदौर महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष, ग्रेटर विजय नगर सोशल ग्रुप में पूर्व उपाध्यक्ष, इंदौर महिला मंडल समिति में सचिव, पारसनाथ दिगंबर जैन परमार्थिक औषधालय विजयनगर में भी अपनी सेवा प्रदान करती हूं। **वर्तमान पता :** विभा जैन (ओज्स) अभय कुमार जैन उ. स्कीम नंबर 54 विजयनगर, इंदौर (मध्य प्रदेश) **मोबाइल नंबर :** 9981571114

पतंग महोत्सव

लाल,हरी, नीली, पीली पतंग बच्चों, उड़ाओ आज।
मकरसंक्रांति पर, पतंग महोत्सव माना रहे सरताज।।

सूरज दादा को छूने की, होड़ लगी है आज।
चांद तारों सी सजी पतंगें,नभ कर रहा है नाज।।

चुन्नू, मुन्नू, छोटू,कर लो पसंद पतंग तुम।
छत पर चढ़ कर ,पतंग बाजी खेलेंगे हम।।

ढील देना चुन्नू,मून्नू से पेंच लड़ाएंगे हम।
चरखी पकड़ना, माज़ा है पक्का,हाथ न कटना तुम।।

सब लोग ले रहे ,पतंग महोत्सव में मज़ा।
कठिनाइयों से मत घबडाना, मुन्नू छोटू की बैंड़ बजा।।

आकाश चूमेगी पतंग, धूमधाम से संक्रांति पर्व मनाना।
मनोरंजन का है खेल, तुम हार जीत से मत घबराना।।

कल्पनाओं की उड़ान भर,
बच्चे छू लेंगे आकाश।
जीवन नैया न डगमगाए,
विश्वास की डोर रखना अपने पास।।

आओ देखो,छत बने हुए हैं उपवन आज।
बच्चों के मुख मंडल पर मुस्कान सोहत आज।।

मकरसंक्रांति लोहरी उत्तरायण हल्दी कंकू
नाम से जाना जाता है यह अनोखा त्यौहार।
पतंग सिखाती शिखर पर रहना,
खुशियां होती सदाबहार ।।

सुंदर सुखद सुप्रभात

दिनकर ने खोली पलकें,
सिंदूरी हुआ आकाश।
कमल दल खिल उठी,
हर कोने में हुआ प्रकाश।।

चिड़ियां चहकी, मधुवन महका,
हुआ जगत में सुप्रभात।
जन जीवन हुआ सुचारू,
प्रभु भक्ति से करते
नव दिन की शुरुआत।।

सूरज की किरणों ने,
जग में लिया विस्तार।
नमन कर सूर्य नारायण का,
प्राणी करता सूर्य नमस्कार।।

सुकर्म कर मानव,
जीवन बनाओ उज्जवल।
गुरु को नमन कर,
विद्या का लो आशीष,
बड़े, योग ध्यान से बल।।

माँ–पिता है जीवन दाता,
उनकी खुशियों में चार चांद
लगा कर देना मान सम्मान।
खुशियां होगी दामन में,
पूरे होंगे तुम्हारे अरमान।।

नभ, जल, थल को
नहीं करना प्रदूषित,
मिलेगा स्वच्छ पर्यावरण।
मिलेंगी प्रसिद्ध जब,
सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान,
सम्यक चारित्र से सुसज्जित
रखोगे आचरण।।

भास्कर से दमकोगे नभ में,
अपने आलोक से करना
जन जीवन का कल्याण।
जीवन एक ख्वाईशें अनेक,
उन्नत भविष्य का बनेगा प्रमाण।।

भाई–बहन से रखना प्यार, विश्वास,
ये है सुखद जीवन का आधार।
मानवता का पाठ पढ़ाकर,
दुखियों के दु:ख हरण कर,
दैना सुख,शांति,उपहार।।

मानव जीवन मिला है अनमोल,
खुशियां बांटना तुम अपरंपार।
सुप्रभात की वेला में, विभा करती
सुधी जनों को बारम्बार नमस्कार।।

मेरा देश मेरा गौरव

ये भारत देश, है मेरा देश,
मेरा गौरव।
हम हैं मां भारती की संतान,
हूं शुक्रगुजार तेरा रव।।

देश प्रेम है अनमोल तोहफा,
बसा है मेरे रग–रग।
देश भक्ति का ख़ून दौड़ता है
रंगों में, स्वतंत्रता मिली है
हमें पग–पग।।

बोडर पर मुस्तैद खड़े हैं
भारत मां के लाल,
तन–मन–धन न्यौछावर कर बढ़ाते,
भारत मां का मान सम्मान।
स्वतंत्रत भारत है उनकी पहचान,
शहादत को करतें हम सब प्रणाम।।

तिरंगा झंडा है भारत देश की शान,
भारत बासी करते सलाम।
युग–युगान्तर तक लहरायें,
फर–फर कर तिरंगा नील गगन में,
दिलाएं विश्व में नाम।।

गंगा, जमुना और सरस्वती,
कल–कल कर है वहती।
बसुधैब कुटुम्बकम की वया है
वहती, ऐसी है भारत की धरती।।

भारत है, ऋषि–मुनियों की
जन्म व कर्म भूमि।
भारतीय संस्कृति और सभ्यता
जग में है अनूठी।।
भारत देश हमारा है,
हमें प्राणों से भी प्यारा है।
जन मानस के दिल में बसता,
देश प्रेम न्यारा है।।

स्वतंत्रता सेनानी गांधी जी,
नेहरूजी, भगतसिंह,
चन्द्रशेखर और आजाद,
स्वतंत्र भारत थी इनकी आबाज।
अंग्रेजों को खदेड किया,
भारत देश को आजाद।।

हर यौद्धा की एक ही सपना,
भारत की स्वतंत्रता में
योगदान दे अपना।
शहीद हो भारत मां के लिए,
तिरंगा झंडा कफ़न बने अपना।।

मात्रभूमि से करतें
हम सब, प्यार दुलार।
दो अक्टूबर, पंद्रह अगस्त,
छब्बीस जनवरी है,राष्ट्रीय त्यौहार।।

वंदना नाटेश्वरी 'योगी'

परिचय

नाम : वंदना नाटेश्वरी 'योगी' **पिता :** श्री परमानंद नाटेश्वरी
माता : श्रीमती गीता देवी नाटेश्वरी
पति : श्री महेन्द्र कुमार योगी
जन्म स्थान : मन्दसौर (म.प्र.) **जन्म दिनांक :** 12/04/1974
शिक्षा : एम.ए.(समाज शास्त्र), बी.एड.
कार्यक्षेत्र : इंग्लिश स्कूल संचालिका,शिक्षिका एवं समाजसेवा
अभिरुचि : लेखन, गायन, वादन, चित्रकारी, नृत्य, बागवानी, खेलकूद
सदस्यता : सार्थक सृजन मंच, अथाई समन्वय समूह मंच, माँ भुवनेश्वरी महिला मंडल नीमच (कोषाध्यक्ष) **काव्य संग्रह :** 259 **उपलब्धि :** पत्रिकाओं तथा राष्ट्र समर्पण समाचार पत्र में प्रकाशन **मोबाइल नं. :** 6265466967
पता : L-101, विवेकानंद चौक, इंदिरा नगर नीमच (म.प्र.) 458441

बुढ़ापे की लाठी

वो बचपन याद है जब पापा
ऊँगली पकड़ चलाते थे।
याद वो माँ का आँचल जिसमें
डरकर हम छुप जाते थे।
ईश्वर से भी कुछ माँगा होता
वो इतना जल्दी न मिल पाता
माँ–पापा से कहने भर से
नखरे पूरे हो जाते थे।
नहला,पहना,खिला–पिला,
रानी बिटिया सी रखते थे।
कोई मुझे जब आँख दिखाता
पापा दौड़े आते थे।
नानी के घर माँ के कारण
मेरे लाड़ लड़ाते थे।
माँ–पापा ने बड़े प्यार से
मुझे परी सा पाला है।
इनके समर्पण के कारण ही
मेरे जीवन में उजाला है।

अब उनके है हाथ काँपते
नज़रें हैं पथराई सी।
सहारे की ज़रूरत है उनको
और स्नेह की थोड़ी सी।
कल मैने भी कुछ तोड़ा फोड़ा
उनसे अब टूटा फर्क क्या?
कल मेरे नाक–मुँह पोंछे होंगे,
अब उनका मुँह पोछूँ तो क्या?
कल उनने ऊँगली पकड़ी थी,
उनकी लाठी बन जाऊँगी।
साक्षात ईश्वर स्वरूप है दोनों,
कैसे ये भूल मैं पाऊँगी।
मेरी दुनिया,मेरे ईश्वर,
बस तुमसे है इतना कहना।
जिस जनम भी मैं वापस आऊँ,
तुम मेरे मात–पिता होना।

गज़ल

क्यों कभी जब याद तेरी आती है
नज़र मेरी आप ही झुक जाती है

वो किसी भी बात पे तेरा छलना
होंठ की कलियाँ कभी मुस्काती है

बात करते थे कभी वो महलों की
राह उनकी मैकदा तक जाती है

याद आते वो गली वो रास्ते जब
आज बीती बात भी भरमाती है

आ रही यादें हिलौरों सी दिल में
आप उठती आप ही मिट जाती है

मौत से भी कब तलक बंधु डरें हम
जिंदगी से मौत भी घबराती है

बहीखाता

जज़्बात पे काबू करके देख लो
एक दफ़ा खुद पे मरके देख लो

आ जाओ लेकर के वो बीते लम्हें
नैनों में भी आँसू भरके देख लो

मिला नहीं बचपन से जिसकी थी तलाश
गैरों के भी संग में रहके देख लो

गुमाँ बहुत था अपने लोगों का तुमको
अपनों से भी पीड़ा सहके देख लो

क्या पाया, क्या खोया सोचो करो हिसाब
यादों की दरिया में बहके देख लो

कौन है अपना कौन पराया पता नहीं
अंजानों को अपना कहके देख लो

नवांकुर

मैं एक नन्हा बीज हूँ
वतन की माटी में उगा हुआ।
इसके जल से सिंचित होकर
इसकी वायु से बड़ा हुआ।

इसने मुझको पाला–पोसा
रहने को आधार दिया।
जड़ें जमाई मैनें इसमें
तन को ज़रा मजबूत किया।

गहराई अब मेरी छाया
शाखाएँ भी फैल गईं।
आकर पंछी रहने लगे अब
डाली–डाली फूल गई।

धन्य हुआ यहाँ पैदा होकर
मैं भी इसका अंग बना।
यहाँ राम–कृष्ण का जन्म हुआ
इनके चरणों की धूल सना।

पावन,निर्मल ये हिन्द धरा
सब धर्मों से नाता गहरा है।
गंगा–जमनी तहज़ीब यहाँ
और हिमगिरि का पहरा है।

हमारा परिवार

डॉ. अखिल बंसल
(निदेशक)

निर्मला जैन, इन्दौर
(संरक्षक)

किशनलाल जांगिड, जोधपुर
(अध्यक्ष)

प्रभा जैन, इन्दौर

दीप्ति खरे, मण्डला

डॉ. रीना सिन्हा 'अनामिका', मुम्बई

पदमा तिवारी, दमोह

(सदस्य एक्जीक्यूटिव बोर्ड)

डॉ. आलोकरंजन कुमार, जपला
(कार्याध्यक्ष)

सीमा गर्ग 'मंजरी', मेरठ
(उपाध्यक्ष)

गोपाल शर्मा प्रभाकर, जयपुर
(मुख्य समन्वयक)

वेदप्रकाश सिंह, ककरी
(साहित्य समीक्षक)

डॉ. इन्दु जैन, दिल्ली
(सचिव)

स्वाति सरु जैसलमेरिया, जोधपुर
(सहसचिव)

शोभा टंडन, जोधपुर
(संयोजक)

डॉ. मीना जैन, उदयपुर
(कोषाध्यक्ष)

जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल : एक परिचय

नाम : डॉ. अखिल बंसल **पिता का नाम :** श्री महेन्द्र कुमार
जन्मदिनांक : 26 अगस्त 1953
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), डिप्लोमा-पत्रकारिता, पी-एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ : ताकि सनद रहे, जैन पत्रकारिता दशा और दिशा, भ. बाहुबली, आओ जानें जैनधर्म, अहिंसा के स्वर, चंदेरी दर्शन, अध्यात्म शैली के प्रखर प्रवाहक, क्रांतिवीर मर्दनसिंह, भावांजलि, भक्तामर काव्य कलश। **प्रकाशित कामिक्स :** गोम्मटेश्वर बाहुबली, कविवर बनारसीदास, कहान कथा: महान कथा, आचार्य विद्यानंद
प्रकाशित आलेख : सराकसोपान, वीर, अर्हत्वचन, जैन संदेश, जैन गजट, जैन मित्र, जिनेन्दु, जैन पथप्रदर्शक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, दैनिक आधुनिक राजस्थान, समाचार जगत, दैनिक विश्वपरिवार, समन्वय वाणी, संस्कार सुधा इत्यादि में अनेक आलेख प्रकाशित।
सम्पादन : समन्वय वाणी (पाक्षिक) का विगत 41 वर्षों से सम्पादन, अखिल सेतु त्रैमासिक।
आकाशवाणी वार्ताएँ : आकाशवाणी केन्द्र जयपुर से अनेक वार्ताएँ प्रसारित।
संपादित कृतियाँ - कालजयी व्यक्तित्व बनारसीदास, ज्ञानामृत, प्रतिबोध, भगवान ऋषभदेव, भगवान शांतिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान मल्लिनाथ, भगवान नेमिनाथ, वैशाली के गणनायक महावीर, भगवान महावीर : जन्मभूमि का सच, विश्व के धर्म अहिंसा और शाकाहार, जिनेन्द्र अर्चना, जिनेन्द्र पूजांजलि, शुद्धाम्नाय निबंधावली तथा श्रावकाचार : दिशा और दृष्टि। विद्वत परिषद् स्मारिका तथा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल अभिनन्दन ग्रंथ, जैन संवाद व विद्वत् संदेश का भी संपादन आपके द्वारा किया गया है। दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका के भी आप सम्पादक मण्डल में रहे हैं।
पुरस्कार : 1. जैन पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु पण्डित कैलाश चंद शास्त्री विद्वत्परिषद् पुरस्कार-3 अक्टूबर 2009 **2.** पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अहिंसा इंटरनेशनल पारसदास अनिल कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार -30 अक्टूबर 2011 **3.** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ ऋषभांचल गाजियाबाद -माँ कौशल जी द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार 26 मई 2014 **4.** एबीएस फाउंडेशन ऋषभदेव द्वारा वाग्मिता पुरस्कार 19 दिसम्बर 2014 **5.** अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा क्रान्तिवीर मर्दन सिंह कृति हेतु राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार - दैनिक भास्कर के सौजन्य से 25 जून 2018 **6.** उम्मीद हेल्प लाइन फाउंडेशन, जयपुर द्वारा उम्मीद रत्न सम्मान 2020- रविवार 23 फरवरी, 2020 **7.** अहिंसा चैनल-दिल्ली द्वारा अहिंसा रत्न अवार्ड 3 अक्टूबर 2021 **8.** 20 फरवरी 2022 को कुन्दकुन्द भारती-दिल्ली द्वारा 1लाख 11 हजार की राशि के साथ आचार्य विद्यानन्द पुरस्कार। **9.** साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा की ओर से पत्रकार प्रवर की उपाधि - 6-7 फरवरी 2023 **10.** सोशली पॉइन्ट फाउंडेशन इन्दौर द्वारा राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार - 11 मार्च 2023 **11.** ब्रांड आइकॉन द्वारा बेस्ट सीनियर हिन्दी जर्नलिस्ट पुरस्कार- 30 मई 2023
सम्प्रति : महामंत्री - अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ, अ.भा.दि. जैन विद्वत परिषद्, सोशल मीडिया फाउंडेशन। **राष्ट्रीय संचालक -** अथाई आशा इंटरनेशनल।
संपर्क : 129 जादोन नगर-बी. स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018
मो. : 9929655786 **ई-मेल :** samanvayvani@gmail.com